पत्रिका

लिखमादेसर में हुआ राम रूंख अभियान का आगाज

शपथ लेकर हजारों लोग बने हरित राम दूत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

ठुकरियासर. श्रीडूंगरगढ़ तहसील के लिखमादेसर गांव में गुरुवार को हरित यज्ञ हुआ। इस अवसर पर 51 सौ ग्रामीणों ने फलदार पौधों के साथ हरित राम दूत बनने की शपथ ली और हर घर में हरियाली रहे इसका प्रण लिया। यहां हंसोजी महाराज की मूर्ति की प्रतिष्ठा के अवसर आयोजित कार्यक्रम के दौरान मुहिम के प्रणेता व संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा भूमि संरक्षण के सर्वोच्च सम्मान लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड से सम्मानित प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी ने बताया कि जसनाथजी की पर्यावरणीय शिक्षाओं को आगे बढ़ाने के मकसद से इस वर्ष पारिवारिक वानिकी राम रूंख अभियान की शुरुआत की जा रही है। हरित राम दूत के लिए आगामी 24 फरवरी से पंजीकरण की भी शुरुआत होगी। हंसोजी धाम के महंत भंवरनाथ ज्याणी व परमहंस संत सोमनाथ जी महाराज ने बताया कि पश्चिमी राजस्थान के विभिन्न जिलों से पहुंचे हजारों श्रद्धालुओं ने राम दूत शपथ कार्यक्रम में भाग लिया। देव जसनाथ संस्थागत वन मंडल अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध ने बताया कि इस अवसर पर 26 सौ बेलपत्र सहित जामुन, अमरूद, नींबू के करीब 52 सौ पौधों का रुंख प्रसाद के रूप में वितरण किया गया। इस अवसर पर ओमनाथ ज्याणी, राधेश्याम सिद्ध ने बताया कि इस हरित मुहिम में हंसोजी आदर्श विद्या मंदिर, राजकीय विद्यालय के संचालक विद्यार्थियों, शिक्षक रामरतन गोदारा, सहीराम के अलावा ग्रामीण मदननाथ ज्याणी, नेमनाथ मूंड, बीरबलनाथ जाखड़, बजरंग भाम्भू , भागीरथ ज्याणी, जगदीश नाथ, हुक्माराम झोरड़, देवेंद्र जाखड़, हंसराज मोटसरा, शिवरतन महिया, श्याम सांई आदि ने राम रूंख वितरण में अपनासहयोग किया।

लिखमादेसर गांव में मानव श्रृंखला बनाकर हरित राम दूत बनने की शपथ लेते पर्यावरण प्रेमी।

लिखमादेसर गांव में राम रूंख अभियान में पौधों के साथ महिलाएं।

प्रोफेसर अनूठे तरीके से दे रहा संदेश

मेले में रूंख प्रसाद, चौथा फेरा पौधे के साथ, आठवां हरित वचन

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

रायसिंहनगर. रायसिंहनगर के एक छोटे से गांव 12 टीके से निकला एक व्याख्याता अनूठे तरीके अपनाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दे रहा है। बीकानेर में आयोजित होने वाले जसनाथी संप्रदाय के जसनाथ जी और कालल दे के मेले में रूंख प्रसाद की अनूठी परम्परा की शुरुआत की तो विवाहों में चौथा फेरा पौधे के साथ और सात वचन के बाद आठवां वचन हरित वचन की परम्परा अब तक दो दर्जन से अधिक विवाहों में शुरू करवा चुके हैं।

परिवार में चाहे जन्म, विवाह हो या फिर मृत्यु। हर अवसर की यादगार को बनाए रखने के लिए समाज शास्त्र के इस व्याख्याता ने अनूठे तरीके की परम्पराएं शुरू करवाई हैं। इससे पूर्व 2008 में बीकानेर जिले के गजसुखदेसर गांव में मात्र 3 मिनट व 50 सैकंड में एक लाख पौधे लगवाकर सबसे तेज पौधे लगवाने और 2009 में एक लाख परिवारों से 2 लाख 93 हजार पौधे एक साथ लगवाकर सर्वाधिक पौधे लगवाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बना चुके श्यामसुंदर ज्याणी अब सोशल मीडिया पर भी लगातार पर्यावरण संरक्षण का संदेश दे रहे हैं। ज्याणी के दोनों ही रिकॉर्ड लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज हैं।

पहली बार शुरू हुआ रूंख प्रसाद का वितरण

बीकानेर जिले के कतरियासर गांव में जसनाथी संप्रदाय के सबसे बड़े मेलों में शुमार जसनाथ जी व माता कालल दे के पिछले साल अक्टूबर माह में आयोजित हुए मेलों में जसनाथ जी के प्रसाद के साथ एक-एक पौधा देने की परम्परा की शुरुआत की। मेला प्रबंधन ने रूंख प्रसाद के रूप में इस परम्परा को जारी रखने का निर्णय लिया। वहीं ज्याणी ने विवाह के अवसर पर वर-वधू द्वारा लिए जाने वाले फेरों में चौथा फेरा पौधे के साथ और सात वचनों के बाद आठवां वचन हरित वचन के रूप में वर वधू द्वारा लिए जाने की अनूठी परम्परा शुरू करवाई गई है। पर्यावरण और वृक्षारोपण को परिवार से जोड़ने के लिए जन्म, मृत्यु व विवाहों के अवसर पर पौधों की भेंट को घरेलू परम्पराओं में शामिल करने के प्रयासों के तहत अब तक कितने ही विवाहों में इस परम्परा का निर्वहन किया जा चुका है।

सोशल मीडिया से दे रहे संदेश

राजकीय डूंगर महाविद्यालय में समाज शास्त्र के एसोसिएट प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर फेमिनियन फॉरेस्ट्री नाम से पेज बनाया हुआ है जिससे संयुक्त राष्ट्र संघ सहित 45 से अधिक देशों के पर्यावरणविद् एवं वृक्षारोपण में रुचि रखने वाले लोग जुड़े हुए हैं। इसी नाम से उन्होंने वैबसाइट भी बना रखी है वहीं फेसबुक पेज पर प्रतिदिन आलेख लिखकर भी पर्यावरण संरक्षण का संदेश दे रहे हैं।

खुद के खर्च पर विविधता वाला जंगल

डूंगर महाविद्यालय में ज्याणी ने खुद के खर्चे पर ही राज्य का सर्वाधिक विविधता वाला छोटा जंगल विकसित कर दिया है जिसमें वृक्षों की 90 प्रजातियों के दो हजार से अधिक पौधे लगे हुए हैं। इसके अलावा इसी जंगल में खुद के खर्चे पर ही जन पौधशाला भी तैयार कर दी है जिसमें कोई भी नागरिक किसी भी तरह का पौधा कभी भी नि:शुल्क प्राप्त कर सकता है। वे श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर जिलों के सरकारी स्कूलों में पौध भी तैयार करवा चुके हैं।

रायसिंहनगर निवासी प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी स्कूली बच्चों से पौधे लगवाते हुए। (फाइल फोटो)

रायसिंहनगर निवासी प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी बीकानेर के जसनाथ जी के मेले में रूंख प्रसाद की परम्परा की शुरुआत करते हुए। (फाइल फोटो)

पत्रिका

#BikanerPride

राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय फलक पर सराहा जा रहा बीकानेर का सकारात्मक प्रयास

पर्यावरण की दुनिया से लेकर साहित्य के क्षेत्र तक फैली बीकाणा की खुशबू

प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी को मिला संयुक्त राष्ट्र से विशेष आमंत्रण

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

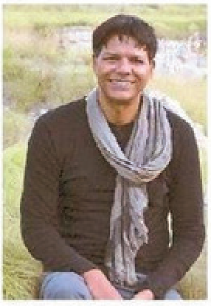

बीकानेर. राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर के एसोसिएट प्रोफेसर एवं पारिवारिक वानिकी अवधारणा के जनक श्याम सुंदर ज्याणी को संयुक्त राष्ट्र की ओर से COP16 (यूएन लैंड समिट) में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। यह प्रतिष्ठित विश्व सम्मेलन 2 दिसंबर से 13 दिसंबर के बीच रियाद, सऊदी अरब में आयोजित किया जाएगा। प्रोफेसर ज्याणी का यह आमंत्रण उनके पर्यावरण संरक्षण में योगदान और भूमि पुनर्स्थापन के क्षेत्र में उनकी अनूठी पहल को देखते हुए दिया गया है। उन्होंने पारिवारिक वानिकी के माध्यम से भूमि संरक्षण के क्षेत्र में एक नई मिसाल कायम की है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसमें पेड़ों को परिवार का हिस्सा समझा जाता है और उनकी देखभाल वैसी परिवार के सदस्य जैसी ही होती है।

प्रो. ज्याणी प्रदेश भर के 18 हजार से अधिक गांवों के 20 लाख से ज्यादा परिवारों को पारिवारिक वानिकी से जोड़ते हुए अब तक 40 लाख से अधिक वृक्षारोपण करवा चुके हैं। लगभग 200 से अधिक संस्थागत वन विकसित हो चुके हैं। ज्याणी ने जन पौधशालाओं का नेटवर्क विकसित किया। इससे प्रतिवर्ष 2 लाख से अधिक फलदार व स्थानीय कस्मिों के पौधे निःशुल्क वितरित किए जाते हैं । डूंगर कॉलेज के प्राचार्य डॉ आर के पुरोहित ने प्रो. ज्याणी को आमंत्रण मिलने पर गौरवान्वित करने वाला क्षण बताया। प्रो. ज्याणी संयुक्त राष्ट्र के भूमि संरक्षण से संबंधित सर्वोच्च वैश्विक पुरस्कार लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड से सम्मानित हो चुके हैं। ज्याणी की प्रेरणा से बीकानेर के लूणकरनसर स्थित देव जसनाथ अवतार भूमि डाबला तालाब सहित पश्चिमी राजस्थान में सैकड़ों हेक्टेयर बंजर भूमि वनस्पतियों और वन्यजीवों से गुलजार है।

साहित्यकार नन्दकिशोर आचार्य को भंवरमल्ल सिंघी स्मृति सम्मान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

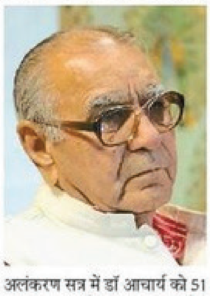

बीकानेर. साहित्यकार डॉ. नन्दकिशोर आचार्य को भंवरमल्ल सिंघी स्मृति सम्मान देने की घोषणा की गई है। अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के गांधीधाम गुजरात में 26 से 29 दिसंबर को होने वाले द्विवार्षिक राष्ट्रीय अधिवेशन अनंतम में डॉ. आचार्य को यह सम्मान दिया जाएगा। उन्हें यह सम्मान गांधी-दर्शन और शान्ति-अहिंसा पर उन के विशिष्ट और मौलिक शोध के लिए प्रदान किया जा रहा हैं। आयोजन के अलंकरण सत्र में डॉ आचार्य को 51 हजार रुपए सहित सम्मान पत्र भेंट किया जाएगा।

डॉ. आचार्य के अब तक 22 काव्य संग्रह, 8 नाटक, 11 आलोचनात्मक कृतियां और गांधी-दर्शन, अहिंसा, मानवाधिकार, और शिक्षा पर 22 सामाजिक-दार्शनिक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं।

उन्होंने अज्ञेय, निर्मल वर्मा, विनोबा भावे, नेमिचंद्र जैन, गोविंद मिश्र और विद्यानिवास मिश्र जैसे भारतीय साहित्यिक विभूतियों के कार्यो का संपादन किया है। डॉ. आचार्य इस समय एमेरिटस प्रोफ़ेसर के रूप में आइटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर से जुड़े हैं, जहां वह लोहिया के विचार और जीवन-दर्शन पर केन्द्रित पुस्तक-माला पर कार्य कर रहे हैं।

पत्रिका

विश्व मंच से गूंजा देव जसनाथ की पर्यावरणीय शिक्षाओं का संदेश व राम रूंख अभियान

प्रो. ज्याणी ने रियाद में आयोजित कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में लिया भाग

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायसिंहनगर. कार्यक्रम में भाग लेते हुए प्रोफेसर श्याम सुन्दर ज्याणी।

रायसिंहनगर. निकटवर्ती चक 12 टीके निवासी व डूंगर कॉलेज बीकानेर के प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी ने गुरुवार को यूएनसीसीडी के 16 वें कॉन्फ्रेंस ऑफ द पार्टीज़ (कोप 16) के तहत रियाद सऊदी अरब में आयोजित कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया।

इसके दौरान उन्होंने पारिवारिक वानिकी को विशेष आयोजन युवा-नेतृत्व नवाचार एक सतत भविष्य के लिए लैंड फॉर लाइफ प्रोग्राम की झलक मुख्य आकर्षण के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह आयोजन चीन के पवेलियन में एलियन फाउंडेशन और कुबुची इंटरनेशनल डेजर्ट फोरम के सचिवालय यूएनसीसीडी के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. ज्याणी ने देव जसनाथ की पर्यावरणीय शिक्षाओं का संदेश व राम रूंख अभियान का जिक्र करते हुए भूमि पुनर्स्थापन पहलों में सांस्कृतिक एकीकरण की परिवर्तनकारी शक्ति पर जोर दिया। उन्होंने मध्य काल के आध्यात्मिक और पर्यावरणीय चिंतक देव जसनाथ की शिक्षाओं का संदर्भ देते हुए बताया कि कैसे संस्कृति मानसिकता को पोषित करती हैं और समुदायों को एकजुट करती हैं। उन्होंने बताया कि सांस्कृतिक मूल्य सहनशीलता व परानुभूति को प्रेरित करते हैं और भूमि क्षरण की समस्याओं से निपटने के लिए सामूहिक प्रयासों को प्रोत्साहित करते हैं।

जहां उगी हरियाली, वहीं थमा अपराध, प्रोफेसर की मेहनत से बदली तस्वीर

पृथ्वी दिवस विशेष

प्रोफेसर की मेहनत रंग लाई

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

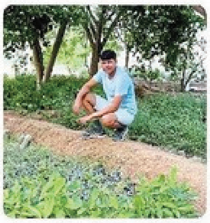

बीकानेर. हरियाली सिर्फ पर्यावरण का सौंदर्य नहीं बढ़ाती, बल्कि सामाजिक जीवन में भी बड़ा बदलाव लाती है। डाबला गांव इसका जीवंत उदाहरण है, जहां हरियाली बढ़ते ही न केवल जल संरक्षण हुआ। वातावरण खुशगवार हुआ, बल्कि आपराधिक गतिविधियों में भी उल्लेखनीय कमी आई।

ऐसे बदलाव के पीछे है एक युवा प्रोफेसर की सोच और उसका दृढ निश्चय, जिसने एकला चलो से शुरू करके हरियाली की इस पहल को सामूहिक प्रयास का बेहतरीन उदाहरण बना दिया। राजकीय डूंगर कॉलेज के प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी की पर्यावरण के प्रति निष्ठा उनके जज्बे में बखूबी दिखाई देती है, जो अब पूरी दुनिया के सामने है। हर साल पृथ्वी दिवस पर पर्यावरण संरक्षण की शपथें ली जाती हैं, पौधे लगाए जाते हैं। लेकिन डूंगर कॉलेज में उगी हरियाली यह दिखा रही है कि यदि इन पौधों की देखभाल हो, तो उनका असर मौसम, समाज और मानव मन तीनों पर पड़ता है।

डाबला गांव में हरियाली आई, तो अपराधों में आई कमी

डाबला गांव से जुड़े 62 वर्षीय बहादुरमल सिद्ध बताते हैं कि तीन साल पहले यहां पौधरोपण का कार्य शुरू हुआ। अब चारों ओर हरियाली है। 12 तलाई भी बनाई जा चुकी है। पहले जहां अवैध खनन और आपराधिक गतिविधियां होती थीं, वहां अब शाम को लोग घूमने आते हैं। शांति का यह माहौल हरियाली का सीधा परिणाम है। वहीं शिक्षक खुमाणा राम सारण ने बताया कि प्रो. ज्याणी की प्रेरणा से कालवास स्थित स्कूल में सामूहिक प्रयास से वनखंड विकसित किया गया। अब गर्मियों में भी परिसर ठंडा रहता है।

16 एकड़ पर हरियाली का संस्थागत वन

प्रो. ज्याणी ने 2013 में अपने वेतन से डूंगर कॉलेज की 16 एकड़ परित्यक्त भूमि पर हरियाली लाने का बीड़ा उठाया। आज वहां 90 से अधिक प्रजातियों के करीब 3 हजार पेड़ लहलहा रहे हैं। संस्थागत वन में सेवण, धामण, बूर जैसी स्थानीय मरुस्थली घास भी उगाई गई है, जो पारिस्थितिकी और जैव विविधता संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यहां आज लोमड़ी, खरगोश, छिपकलियां और अन्य सरीसृप सहज दिखते हैं।

बीकानेर मॉडल बन सकता है उदाहरण

प्रो. ज्याणी बताते हैं कि हाल ही में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी, किंग्स कॉलेज लंदन और भारत के सस्टेनेबल फ्यूचर्स कोलेबोरेटिव की ओर से प्रकाशित एक रिपोर्ट में यह बताया गया है कि भारत के अधिकांश शहरों में ग्रीन इन्फ्रास्ट्रक्चर की भारी कमी है। ऐसे में डूंगर कॉलेज का संस्थागत वन हीट एक्शन प्लान और जलवायु आपदाओं से निपटने के लिए एक सफल मॉडल के रूप में अपनाया जा सकता है।

22/04/2025 | Bikaner City | Page : 6
Source : https://epaper.patrika.com/

Climate-resilient urban forest offers hope amid 'gaps' in heat action plan

Neel.Kamal@timesofindia.com

Shyam Sunder Jyani, associate professor, Government Dungar College in Bikaner, has created an urban forest in the Rajasthan town

Bathinda: Amid the backdrop of the Indian Meteorological Department (IMD) forecasting an increase in the number of heatwave days between April and June, a recent report has raised alarm about the shortcomings of India's heat action plans.

"Is India ready for a warming world? How heat resilience measures are being implemented for 11% of India's

EARTH DAY TODAY

urban population in some of its most at-risk cities," released by think tank Sustainable Futures Collaborative, involving experts from Harvard University, King's College London, and other global institutions, has highlighted a critical oversight: the lack of green infrastructure — urban forests, green corridors, and public green spaces—capable of providing natural cooling and climate resilience. However, an unexpected solution has emerged in one of the driest corners of the country — Bikaner, Rajasthan.

Shyam Sunder Jyani, associate professor, Government Dungar College in Bikaner, has not only created a forest but has also cultivated a model of climate resilience.

Jyani began transforming 16 acres of barren institutional land into a thriving green space in 2013. Without any financial support from the college or govt, he invested his personal salary into the project, which has since blossomed into a flourishing urban forest with more than 3,000 trees across 90 species.

One notable feature of the forest is its section dedicated to native desert grasses, including Sewan (Lasiurus sindicus), Dhaman (Cenchrus ciliaris), and Boor (Cymbopogon martini). These plants are essential for restoring the local ecology, supporting biodiversity, and stabilising the environment in an area prone to extreme temperatures and limited rainfall. The forest is now home to foxes, desert hares, lizards, reptiles, and a variety of birds.

A standout initiative within this green space is the public nursery named after Dev Jasnath, a medieval eco-spiritual leader. The nursery, which distributes thousands of saplings free of charge every year, has become a hub for community engagement. In 2023 alone, over 21,000 saplings were distributed to local students, villages, and the Indian Army. Many of these saplings were sent to remote areas like Barmer in western Rajasthan, contributing to wider ecological restoration efforts.

The impact of Jyani's work has not gone unnoticed. The Nature Positive Universities Network—a global initiative led by the University of Oxford and the UN Environment Programme—has recognised the institutional forest as a model of climate resilience. Last year, Jyani was celebrated as a Staff Champion under this initiative, underscoring the global significance of his work in shaping sustainable solutions for the future.

सत्यमेव जयते

On the occasion of the Independence Day

The President of Bharat

requests the pleasure of the company of

Shri Shyam Sundar Jani

to

'At-Home' Reception

at Rashtrapati Bhavan Cultural Centre, New Delhi

on Friday, August 15, 2025 at 1800 hrs.

R.S.V.P. : Tel : 23012960, 23018345, 23015321 Extension 4229, 4479
e mail : invitation@rb.nic.in

Dress : Formal / Summer Ceremonial Dress.

पत्रिका

CITY BOOK

प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी राष्ट्रपति भवन एट होम कार्यक्रम में हुए शामिल

बीकानेर @ पत्रिका. राष्ट्रपति की ओर से स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित एट होम कार्यक्रम में डूंगर कॉलेज के प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी भी शामिल हुए ।

यह आयोजन 15 अगस्त 2025 को राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली में संपन्न हुआ। इसमें भारत की राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रिमंडल, तीनों सेनाओं के अध्यक्ष, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, विदेशी राजदूत आदि शामिल हुए। इस अवसर पर प्रो. ज्याणी ने राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को पारिवारिक वानिकी के तहत पिछले 20 वर्षों में किए गए कार्यों, वर्तमान में जारी चौधरी चरण सिंह पारिवारिक वानिकी मिशन के तहत एक पेड़ मां के नाम अभियान से अवगत करवाया।

डूंगर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राजेन्द्र पुरोहित ने कहा कि प्रो. ज्याणी का राष्ट्रपति भवन के कार्यक्रम में शामिल होना न केवल उनके व्यक्तिगत योगदान कासम्मान है, बल्कि हमारे महाविद्यालय और पूरे बीकानेर क्षेत्र के लिए गर्व का विषय है।

17/08/2025 | Bikaner City | Page : 9
Source : https://epaper.patrika.com/

पत्रिका

घर-घर हरियाली, घर-घर सहजन... एक प्रोफेसर की अनूठी पहल

115 पौधशालाओं में तैयार हो रहे 5 लाख पौधे

बीकानेर @ पत्रिका. "हर आंगन में सहजन" का सपना अब साकार होता दिख रहा है। राजकीय डूंगर महाविद्यालय के प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी ने व्यक्तिगत समर्पण के साथ घर-घर सहजन अभियान की शुरुआत की है। इसके तहत पश्चिमी राजस्थान के पांच जिलों में 115 जन पौधशालाओं में पांच लाख पौधे तैयार किए जा रहे हैं।

इस अभियान में स्कूली बच्चे और शिक्षक मिलकर पौधों की देखरेख कर रहे हैं। बालिकाओं को पौधे देकर उन्हें "हरित पारिवारिक सदस्य" की तरह बड़ा करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। **सहजन** अपने पोषण गुणों, जलवायु सहनशीलता और पर्यावरणीय महत्व के कारण ग्रामीण परिवारों व रेगिस्तानी पारिस्थितिकी के लिए वरदान है।

2027 तक का बड़ा लक्ष्य

प्रो. ज्याणी ने बताया कि अभियान का लक्ष्य 2027 तक चौधरी चरण सिंह की 125वीं जयंती पर 1 करोड़ 25 लाख पौधे लगाने और 125 स्मृति वन विकसित करने का है। खास बात यह है कि प्रशिक्षण, बीज और पॉलीबैग्स की सारी व्यवस्था उन्होंने अपनी तनख्वाह से की है। प्रो. ज्याणी का पारिवारिक वानिकी आंदोलन 2006 से अब तक 18 हजार गांवों और 20 लाख परिवारों तक पहुंच चुका है। 43 लाख से अधिक पौधे लगाए जा चुके हैं। अब सहजन अभियान उसी आंदोलन की नई कड़ी है।

27/08/2025 | Bikaner City | Page : 4
Source : https://epaper.patrika.com/

पत्रिका

10 अगस्त
अग्रदूत 2.0
जो गढ़ रहे राजस्थान

ये हैं अग्रदूत...जो चुपच मगर ठोस बदलाव लि रहे हैं। इनके लिए 15 अगस्त कोई एक दिन हर दिन की प्रेरणा है।

श्यामसुंदर ज्याणी (46)

बीकानेर, राजस्थान

हर सूनी जमीन पर हरियाली का सपना

जब भी हरियाली का विस्तार करने की बात होती है, बीकानेर के पर्यावरणविद प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी का नाम सबसे पहले आता है। उन्होंने पारिवारिक वानिकी के जरिए प्रकृति से रिश्ता जोड़ा है।

हरियाली के लिए परिवारों को वृक्षों से जोड़ना होगा, यही भविष्य की सच्ची सुरक्षा है। परंपरा को बढ़ना होगा।
श्यामसुंदर ज्याणी

श्यामसुंदर ज्याणी पर्यावरणविद् और शिक्षाविद हैं। वे पारिवारिक वानिकी आंदोलन के संस्थापक हैं, जो पारिस्थितिक पुनर्स्थापन और मरुस्थलीकरण से निपटने के उद्देश्य से एक जमीनी स्तर की पहल है। वे वर्तमान में बीकानेर के राजकीय डूंगर कॉलेज में समाजशास्त्र के एसोसिएट प्रोफेसर हैं। ज्याणी का जन्म श्रीगंगानगर के 12 टीके गांव में एक ग्रामीण कृषक परिवार में हुआ था। उनके प्रयासों को संयुक्त राष्ट्र ने लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड भूमि संरक्षण के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा है। वे यूएनईपी और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के एनपीयू नेटवर्क में स्टाफ चैंपियन हैं। उन्हें इस बार राष्ट्रपति भवन में स्वतंत्रता दिवस ऐट होम समारोह के लिए राष्ट्रपति की ओर से बुलाया गया है। जन पौधशालाओं का नेटवर्क हर साल 2 लाख पौधे निःशुल्क उपलब्ध कराता है।

- 2003 में डूंगर कॉलेज, बीकानेर से शुरू हुआ सफर आज हरित आंदोलन में बदल चुका है। वे 20 लाख से अधिक परिवारों को पारिवारिक वानिकी से जोड़ चुके हैं।
- 43 लाख से ज्यादा पौधरोपण कर 208 संस्थागत वनखंड स्थापित किए।

डाबला तालाब बना हरित तीर्थ

बीकानेर के डाबला तालाब क्षेत्र की 207 एकड़ बंजर भूमि को उन्होंने जसनाथी समुदाय के सहयोग से जैव विविधता युक्त पारिस्थितिकी तंत्र में बदल दिया। यहां अब दुर्लभ वन्यजीव लौट आए हैं। यह उनके होलिस्टिक हैबिटेट हीलिंग मॉडल की सफलता का प्रमाण है। इस परियोजना ने बंजर भूमि को एक समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र में बदल दिया।

10/08/2025 | Jaipur City | Page : 24
Source : https://epaper.patrika.com/

दैनिक भास्कर
2025-08-08
जयपुर (13)

हरियाली का प्रतीक बना बीकानेर का डाबला तालाब इलाका

वीरान रेगिस्तान में विकसित कर दी 50 हजार पौधों की जन पौधशाला

जयपुर/बीकानेर | हरियाली बढ़ाने के लिए चलाए गए एक अभियान ने बीकानेर जिले में वीरान रेगिस्तान वाले डाबला तालाब इलाके की तस्वीर बदल दी है। बीकानेर से 50 किमी दूर यह इलाका 20 साल से जिप्सम के अवैध खनन के कारण होता जा रहा था। अब हरियाली का प्रतीक बन चुका है। इस बदलाव का प्रमुख श्रेय जसनाथी समुदाय को है। संयुक्त राष्ट्र के 'लैंड फॉर लाइफ अवार्ड' से सम्मानित बीकानेर में राजकीय डूंगर महाविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी की अगुवाई में समाज की ओर से चलाए गए हरियाली अभियान से यहां करीब 50 हजार पौधों की जन पौधशाला विकसित हो गई है। यहां सहजन, रोहिड़ा, खेजड़ी, करंज, फोग, ऊंट फोग, गूंदी, जाल जैसी कई किस्मों के पौधे लगे हैं।

ये पौधे राम रूंख अभियान के तहत जसनाथ जी के रूंख प्रसाद के रूप में ग्रामीणों को निशुल्क वितरित किए जा रहे हैं। प्रोफेसर

रंग लाई प्रोफेसर ज्याणी की मेहनत

ज्याणी ने बताया कि बीकानेर संभाग में हमारी पांच जन पौध शालाओं से हरियालो राजस्थान अभियान के तहत दो लाख पौधों का निशुल्क वितरण की शुरुआत कर दी गई है। सामूहिक प्रयासों से अब यहां घास, पेड़ व जीवों की भरमार हो गई है। जीव-जंतुओं की प्यास बुझाने के लिए यहां 11 तलाइयों का निर्माण कराया गया है। बीकानेर जिले के 100 सरकारी विद्यालयों में जन पौध शालाएं स्थापित कर सितंबर में पांच लाख सहजन के पौधे जिले की बेटियों को वितरित करने के लिए भी कार्य शुरू कर दिया गया है। देव जसनाथ वन मंडल के अध्यक्ष बहादुर नाथ सिद्ध ने कहा कि प्रोफेसर ज्याणी के नेतृत्व में यह बदलाव अब गांव-गांव में पौधा रोपण की प्रेरणा बन चुका है।

पत्रिका

पारिवारिक वानिकी अभियान ने डाबला तालाब की बदली सूरत

हरियाली छाने से वन जीवों की बना शरणस्थली

लूणकरनसर @ पत्रिका. यहां उतमदेसर रोही स्थित देव जसनाथ की अवतार भूमि डाबला में सोमवार को पारिवारिक वानिकी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन कर पौधरोपण किया गया। पर्यावरणविद् प्रो. श्यामसुन्दर ज्याणी ने कहा कि पारिवारिक वानिकी अभियान ने डाबला तालाब की सूरत बदल दी है। उन्होंने कहा कि पहले केवल अवैध खनन से भूमि बंजर थी। अब अभियान ने पारिस्थितिकी पुनरुत्थान से साढ़े तीन सालों में 207 एकड़ बंजर भूमि हरा-भरा कर दिया है। यह भूमि अब वन्य जीवों की शरणस्थली बन गई है। इलाके के आमजन के सहयोग से पारिवारिक वानिकी के समग्र पारिस्थितिकी उपचार मॉडल से पुनर्जीवित किया गया। उपखण्ड अधिकारी दयानंद रूयल ने कहा कि यह आयोजन केवल एक दिन का कार्यक्रम नहीं था। बल्कि एक विचारधारा का उत्सव था, जो भूमि को मां मानकर उसकी आराधना करता है। पुलिस वृत्ताधिकारी नरेन्द्र पूनिया ने कहा कि डाबला तालाब रेस्टोरेशन की मुहिम पूरे समाज के

लिए एक प्रेरणा है। देव जसनाथ वन मण्डल अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध, मंहत मोहननाथ, मंहत रुघनाथ, भाजपा जिला उपाध्यक्ष हेम नाथ जाखड़, बुद्धनाथ महिया, बीकानेर सिद्धाश्रम ट्रस्ट अध्यक्ष धन्नानाथ, सिद्ध समाज विकास अध्यक्ष मांगीनाथ, शिव भवन जाट धर्मार्थ संस्थान अध्यक्ष मोटाराम चौधरी, रावांसर सरपंच बिशननाथ सिद्ध आदि ने विचार रखे। इस मौके पर पूर्व में लगाए पौधों में पानी सिंचित किया।

प्रकृति का संरक्षण जरूरी

धीरेरां स्टेशन स्थित वन विभाग की नर्सरी में सोमवार को एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधरोपण किया गया। उपखण्ड अधिकारी दयानंद रूयल ने कहा कि पर्यावरण व प्रकृति के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए पौधरोपण जरूरी है। पुलिस वृताधिकारी नरेन्द्र पूनिया, भाजपा नेता हनुमानमल बैंद, लेखराम गोदारा समेत ग्रामीणों ने पौधरोपण किया।

स्मृति वन में पौधरोपण

ठुकरियासर. लोढ़ेरा गांव में सोमवार को श्मशान भूमि में बने चौधरी चरणसिंह स्मृति वन में ग्रामीणों ने पौधरोपण किया। इस अवसर पर पर्यावरणविद् प्रो.श्यामसुन्दर ज्याणी ने जसनाथ रूंख प्रसाद के रूप में ग्रामीणों को सहजन के पौधे वितरित किए। उन्होंने बताया कि एक पेड़ मां के नाम की थीम के तहत लोढ़ेरा गांव में ग्रामीणों ने सामूहिक रूप से पौधरोपण किया है। इस दौरान ग्रामीणों के साथ भूमि संरक्षण, पारिस्थितिकीय संतुलन, जल संरक्षण और जलवायु परिवर्तन जैसे विषयों पर चर्चा हुई।

05/08/2025 | Bikaner Zila | Page : 6
Source : https://epaper.patrika.com/

पर्यावरण के सच्चे सिपाही मिलिए रायसिंहनगर के गांव 12 टीके के प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी से ... इनकी जिंदगी पर्यावरण को समर्पित

20 वर्षों में 8 हजार+ गांवों के 20 लाख परिवारों से पौधे लगाकर पर्यावरण प्रेमी बनाया, दुनिया के बड़े अभियानों में 'पारिवारिक वानिकी' शामिल, हुआ सम्मान

मनप्रीतसिंह | रायसिंहनगर

भारत-पाक सीमा से सटे रायसिंहनगर का छोटा सा गांव 12 टीके। इस गांव के प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी अब पूरे भारत में प्रसिद्ध हो चुके हैं । ज्याणी ने 20 वर्षों में 8 हजार से अधिक गांवों के 20 लाख परिवारों को पर्यावरण प्रेमी बनाया है।

जिसकी बदौलत 40 लाख से अधिक पेड़ हरित सदस्य के रूप में लहलहा रहे हैं और 200 संस्थागत वन खण्ड विकसित किए जा चुके हैं । इनकी बदौलत ज्याणी का देश-विदेशों में अनेकों बार सम्मान हुआ। प्रोफेसर ज्याणी इस नेटवर्क से जुड़े दुनियाभर के करीब 150 विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के गुर सिखाते हैं। अब जानिए 30 सालों का सफर

अभिनाय के तहत पौधेरोपण करते लोग। दूसरी तस्वीर में पौधे बांटते प्रो. श्याम सुंदर ज्याणी।

30 साल पहले गांव में पौधा लगा की शुरुआत...अब एक अभियान

ऐसे किया सफर शुरू: 30 साल पहले मैंने गांव में नीम का एक पौधा लगा और उसको अपने दोस्त का नाम दिया। दो साल में पौधा पेड़ में पनप रहा था। पौधे में दीमक लगी तो उसमें मैंने कीटनाशक डाल दी। पौधा जल गया। ऐसे लग रहा था कि मैंने अपने दोस्त को मार दिया। जब से मन में ठान लिया कि मैं बड़ा होकर खूब पेड़ लगाऊंगा और बाकी लोगों को सिखाऊंगा कि मेरे जैसी गलती कभी मत करना। वह दिन है और आज का दिन कभी पौधों में कीटनाशक का छिड़काव नहीं किया।

2006 में 'पारिवारिक वानिकी': 2003 में बीकानेर के राजकीय डूंगर कॉलेज में बतौर असिस्टेंट प्रोफेसर स्थानांतरित होकर गया। सबसे पहले पौधे लगाने की शुरुआत महाविद्यालय से ही की। 2006 में हिमतासर गांव से पारिवारिक वानिकी का सफर शुरू किया। आज राजस्थान के 8 हजार से अधिक गांवों के 20 लाख परिवारों को पर्यावरण से जोड़ चुका हूं। हर साल लाखों देसज पौधे राजस्थान व आस-पास के राज्यों में निःशुल्क उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

अनूठी पहल से सकारात्मक बदलाव: मैं और पत्नी कविता लोगों को जागरूक करने के लिए गांव-गांव जाते। धीरे -धीरे लोग जुटने लगते थे और तीज-त्योहारों से लेकर शादी- विवाह, मेलों आदि सामाजिक जीवन के पलों में पौधे बांट लोगों को मुहिम से जोड़ते। मेरे इस अभियान से लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ते रहे। ये नारा बुलंद किया कि 'पेड़ हमारे परिवार के हरित सदस्य हैं'। 100 गांवों में अवैध खनन को रुकवाया कर वहां पर पौधे लगाए। जैसा कि प्रो. श्याम सुंदर ज्याणी ने बताया

- 2021 में संयुक्त राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय ज्यूरी द्वारा सद्गुरु जग्गी वासुदेव के रैली फ़ॉर रिवर अभियान सहित दुनिया के 11 अभियानों में पारिवारिक वानिकी का
- संयुक्त राष्ट्र के मरुस्थलीकरण रोधी अभिसमय यूएनसीसीडी ने पारिवारिक वानिकी के लिए ज्याणी को भूमि संरक्षण के सर्वोच्च वैश्विक सम्मान 'लैंड फ़ॉर लाइफ अवार्ड' के
- 2022 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम व इंग्लैंड की ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी ने वानिकी को प्रमुखता से इस शिक्षक नेटवर्क का हिस्सा बनाया और ज्याणी को स्टाफ चैंपियन के दर्जे से

पत्रिका

पारिवारिक वानिकी राम रुंख अभियान के तहत जुड़े लोग

पालोजी के मेले में 5100 पौधों को परिवार के हरित सदस्य बनाने का लिया प्रण

सूडसर @ पत्रिका. पूनरासर गांव में सोमवार को ग्रामीण अंचल से पहुंचे हजारों जसनाथी परिवारों ने सामूहिक रूप से 5100 जामुन व नींबू के फलदार पौधों को परिवारों से हरित सदस्य के रूप में जोड़ने का प्रण लिया। महंत प्रेमनाथ सिद्ध ने बताया कि पालो जी महाराज के अंतर्ध्यान दिवस पर आयोजित इस मेले में पर्यावरणविद्ध प्रो.श्यामसुंदर ज्याणी की ओर से आहूत अभियान के प्रति श्रद्धालुओं ने विशेष उत्साह दिखाया। सांचौर निवासी हिमताराम ज्याणी की ओर से 5100 पौधे भेंट किए गए। इन्हें मुंबई निवासी युवा उद्यमी दुर्गाराम ज्याणी, देव जसनाथ वन मंडल उपाध्यक्ष बीरबल नाथ जाखड़, जसराज गोदारा, देवेंद्र जाखड़, शिवनाथ गोदारा, श्रवण, राजू नाथ कूकणा, हरि किशन पारीक, श्याम, पूरनाथ, सावंतनाथ, लालनाथ, ओम नाथ ज्याणी व पूनरासर की युवा टीम ने वितरित किया। इस अवसर पर प्रोफेसर ज्याणी ने कहा कि पेड़ व पर्यावरण का संरक्षण जसनाथी परंपरा है। आज दुनिया पर जलवायु परिवर्तन का संकट गहराता जा रहा है।

पूनरासर में पालोजी महाराज के मेले में मौजूद लोग।

जसनाथजी की पर्यावरणीय शिक्षाओं को शिद्दत के साथ में अपनाने की ज़रूरत है। व्यापक जनजागरण के लिए देव जसनाथ वन मंडल जल्द ही प्रोफ़ेसर ज्याणी की अगुवाई में पर्यावरण चेतना यात्रा निकालेगा।

प्रोफ़ेसर ज्याणी ने बताया कि पारिवारिक वानिकी हरित बदलाव का एक ऐसा सिलसिला है जो आमजन को सीधे पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनाता है। चार दिन पूर्व 11 अप्रेल को कतरियासर में माता काल्लदे के मेले के अवसर पर भी

पूनरासर में पालोजी मेले में सम्मानित लोग।

महंत मोहन नाथ सिद्ध के सान्निध्य में 5100 फलदार पौधों के रुंख प्रसाद का आयोजन किया गया था।

प्रोफ़ेसर ज्याणी ने बताया कि यह अभियान साल 2030 तक लगातार चलाया जाएगा। वर्ष 2021 से 2030 के दशक को संयुक्त राष्ट्र ने पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली का दशक घोषित किया है। इस अवसर पर 114 यूनिट रक्तदान किया गया।

Healed scars

Residents of Rajasthan village revive land destroyed due to gypsum mining, see return of native plants and animals

MADHAV SHARMA

THE AREA was scarred with deep pits and hills of mining waste. Women were afraid to pass by the land since it was so deserted," recalls Shanti Devi. The area she refers to is the land around Dabla *talab*, a reservoir that was only source of water in her village of Uttamdesar, before the operationalisation of the Indira Gandhi Canal that passes through the region. For over two decades, the village saw rampant gypsum extraction. It is located in Bikaner district, which has some of the largest gypsum deposits in Rajasthan, a major producer of the mineral.

The quest for gypsum had destroyed the reservoir, which was also a major source of water for wildlife. Several animal species and native grasses disappeared from the area, leaving the ecosystem in ruins.

But since 2022, nearly 84 hectares (ha) of the degraded land have been restored and now serve as a flourishing grazing ground. The transformation came after environmentalist Shyam Sunder Jyani led an initiative to restore Dabla *talab*.

"In 2007-08, I had tried to curb illegal mining around Dabla *talab*. But the administration and local community did not provide much support, as mining is a means of livelihood. In 2021, the priest of a temple in the village asked me to help restore the reservoir area," says Jyani, a professor of sociology at Bikaner's Government Dungar College.

Jyani roped in the Jasnathi community that is prominent in the village. He drew on the learnings and practices followed by the community, which highlight the significance of grazing lands, forests and biodiversity. In June 2022, Jyani and the residents organised an awareness march in 104 villages in the region, raising around ₹1 crore.

The first step in restoration was fencing the 84-ha area around the reservoir. Next, the residents undertook plantations through familial forestry—a concept pioneered by Jyani, for which he received the UN's Land for Life award in 2021. "Under this concept, families are encouraged to treat trees as members of their households, fostering an emotional connection with nature. We planted hundreds of native trees, including *khejri* (*Prosopis cineraria*, the state tree of Rajasthan)," says Jyani. The community also cultivated native grass varieties. Additionally, 12 small ponds were created as water sources for wildlife. They are replenished through a solar-powered system.

"The transformation is striking. We not only see growing trees and grasses but also animals that were last spotted 20-25 years ago, including jackals, deer, foxes, *nilgai*, hares, black partridges, owls and even wild boars," says Bhagirath Motsara of the village. Birbal Nath Jakhar, another resident, adds, "We have spotted rare species like caracals, spiny-tailed lizards and Asiatic wild cats—a sign of ecological recovery."

The revival has inspired neighbouring villages to reclaim their encroached or neglected lands. Where mining once stripped the land bare, rare grasses like *sewan* (*Lasiurus scindicus*) now sway in the wind, says Jyani.

Shyam Sunder Jyani (seated between two children at the centre) with residents of Uttamdesar village in Bikaner district, Rajasthan

PHOTOGRAPH: MADHAV SHARMA

पत्रिका

#Plantation

राजकीय डूंगर महाविद्यालय में तैयार हुई देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला

बन कर तैयार हो गई पौधशाला, 20 हजार से अधिक पौधों का होगा निशुल्क वितरण, 10 हजार पौधे सेना को

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. राजकीय डूंगर महाविद्यालय में देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला बनकर तैयार हो गई है। यहां पर जरूरत के हिसाब से निशुल्क पौधों का वितरण किया जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय इंग्लैंड की ओर से संचालित नेचर पॉजिटिव यूनिवर्सिटी नेटवर्क की स्टूडेंट एम्बेसडर अवनी ज्याणी ने बताया कि हमारी यह जन पौधशाला

पौधशाला में इस तरह से तैयार की गई है पौध।

नेचर पॉजिटिव यूनिवर्सिटी नेटवर्क का हिस्सा है। विश्व के 500 विश्वविद्यालय व उच्च शिक्षण संस्थान इस नेटवर्क का हिस्सा हैं।

उन्होंने बताया कि यह एक ऐसी पौधशाला है, जिसमें इतनी संख्या में पौधे निःशुल्क रूप से उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। इस जन पौधशाला में विभिन्न देसज प्रजातियों के 26 हजार 500 पौधे हैं, जो निशुल्क रूप से उपलब्ध करवाए जाएंगे। 10 हजार पौधे भारतीय सेना की रणबांकुरा डिवीजन को आर्मी एरिया में रोपण के लिए प्रदान किए जा रहे हैं और शेष पौधे महाविद्यालय परिसर, विद्यार्थियों व आस-पास के स्कूलों व अन्य संस्थाओं को उपलब्ध करवाए जाएंगे।

आज होगा शुभारंभ

यूएनओ अवार्डी प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी ने बताया कि महाविद्यालय के गांधी संस्थागत वन में विकसित इस जन पौधशाला का शुभारंभ कार्यक्रम कतरियासर महंत मोहन नाथ सिद्ध व लिखमादेसर महंत भंवरनाथ सिद्ध के सानिध्य में होगा। मुख्य अतिथि जिला कलक्टर नम्रिता वृष्णि व विशिष्ट अतिथि के रूप में भारतीय सेना के अधिकारी शामिल होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. इंद्रसिंह राजपुरोहित करेंगे। उद्घाटन कार्यक्रम शाम 5.30 बजे से शुरू होगा।

पत्रिका

कॉलेज प्रोफेसर की अनूठी पहल

हरा-भरा प्रदेश बनाने के लिए 20 साल से समर्पित है श्याम सुन्दर

किताबों से धरातल पर लाए पारिवारिक वानिकी, लाखों परिवारों को पेड़ और पर्यावरण से जोड़ा

अतुल आचार्य
patrika.com

बीकानेर @ पत्रिका. विद्यार्थियों को पर्यावरण विषय की किताबों में पढ़ाई जाने वाली 'पारिवारिक वानिकी अवधारणा' धरातल पर साकार होती नजर आने लगी है। इसे साकार करने का कार्य किया है बीकानेर के राजकीय डूंगर कॉलेज के प्रोफेसर श्याम सुन्दर ज्याणी ने। वे दो दशक से अधिक समय से पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधशाला तैयार करने, परिवारों को पेड़ों से जोड़ने का कार्य कर रहे हैं।

प्रो. ज्याणी ने बताया कि 22 साल की उम्र में सरकारी कॉलेज में प्रोफेसर की नौकरी लगने के साथ ही गांव-गांव जाकर रेगिस्तान को हरा-भरा करने के लिए प्रयास शुरू कर दिए। उन्होंने खुद के पैसों से पौधों

प्रो. श्यामसुंदर विद्यार्थियों को पारिवारिक वानिकी के बारे में बताते हुए।

की व्यवस्था कर लोगों को बांटे। वर्ष 2003 में डूंगर कॉलेज में पदस्थापन के बाद विद्यार्थियों को साथ लेकर कॉलेज परिसर को हरा-भरा किया। पुराने सूख रहे नीम के पेड़ों को वैज्ञानिक पद्धति से बचाने का काम किया। कॉलेज और क्षेत्र में ग्रामीणों के साथ पेड़ व पर्यावरण पर संवाद शुरू किया।

18 साल पहले शुरुआत

वर्ष 2006 में प्रो. ज्याणी ने बीकानेर से बीस किमी दूर गांव हिमतासर में पेड़ों को परिवारों से जोड़ने की पारिवारिक वानिकी की अवधारणा को धरातल पर आकार देना शुरू किया। कोविड काल में पारिवारिक वानिकी कार्यकर्ताओं व स्कूली शिक्षकों को साथ लेकर प्रदेश में 14 लाख सहजन के पौधों को परिवारों से जोड़ा। अभी तक वह पारिवारिक वानिकी के तहत 20 लाख से अधिक परिवारों को उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तान को हरा-भरा करने की मुहिम से जोड़ चुके हैं। करीब 40 लाख पेड़ों और 200 से अधिक संस्थागत वनों के रोपण व संरक्षण का कार्य हुआ है। उन्होंने जन पौधशालाएं तैयार की है। जिनके माध्यम से स्थानीय जलवायु के अनुकूल पौधे तैयार कर मुफ्त लोगों को उपलब्ध करवा रहे हैं।

मिल चुका है लैंड फॉर लाइफ सम्मान

वर्ष 2021 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने प्रो. ज्याणी को पारिवारिक वानिकी के लिए लैंड फॉर लाइफ पुरस्कार से सम्मानित किया है। भूमि संरक्षण और बहाली के लिए यह दुनिया का सर्वोच्च पुरस्कार है। संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन टू कॉम्बैट डेजर्टिफिकेशन की ओर से दिया जाता है।

16 एकड़ भूमि पर वन

संस्थागत वन को एक मॉडल के रू में ज्याणी ने डूंगर कॉलेज परिसर म विकसित कर दिखाया। उन्होंने 16 एकड़ भूमि पर एक जंगल विकसि किया। विद्यार्थियों भागीदारी से ज पौधशाला स्थापित की। बीकाने संभाग के 150 से अधिक गांवों व सरकारी स्कूलों के शिक्षकों क सहभागिता से 150 संस्थागत वनों क विकास कराया। फलों के बगीचों क विकसित करने के लिए जामुन, अनार आंवला, बील पत्र, शहतूत, सहजन इमली, अमरूद, सीताफल के पौ रोपित कराए।

पत्रिका

जन पौधशाला से लाखों पौधों का नि:शुल्क वितरण

पौधों वाले गांव के रूप में बनाई अंतरराष्ट्रीय पहचान

हर घर में हरित सदस्य के रूप में लगे हैं पेड़

पत्रिका मंगेश कौशिक
patrika.com

श्रीगंगानगर. जलवायु परिवर्तन के असर को लेकर आज वैश्विक स्तर पर चिंतन हो रहा है। इस असर को कम करने के लिए सभी देश अपने-अपने स्तर पर प्रयास भी कर रहे हैं। राजस्थान के अनूपगढ़ जिले में भारत- पाक अन्तरराष्ट्रीय सीमा से 20 किलोमीटर दूर रायसिंहनगर तहसील का छोटे से गांव 12 टी.के. के ग्रामीणों ने इस दिशा में जो अनूठी पहल की है, उसका अनुसरण अगर विश्व का हर गांव करने लगे तो न केवल पर्यावरण शुद्ध होगा बल्कि जलवायु परिवर्तन के असर से उत्पन्न खतरों को कम करने में मदद मिलेगी।

मात्र 100 घरों की आबादी वाले इस गांव की पहचान आज पौधों वाले गांव के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बन चुकी है। यह पहचान बनी है पर्यावरण संरक्षण में इस गांव की अनोखी भूमिका के कारण। गांव के सभी घरों में पेड़ों को हरित सदस्य के रूप में परिवार का हिस्सा बनाया हुआ है । गांव के हर घर में आपको हरे-भरे पेड़ नजर आएंगे। उनकी देखभाल ठीक वैसे ही की जाती है, जैसे परिवार के सदस्य की।

जन पौधशाला में पौध तैयार करते गांव के बच्चे।

फुर्सत के समय गांव की महिलाएं भी पौधशाला में करती हैं श्रमदान।

ऐसे हुई शुरुआत

इस गांव की पहचान पौधों वाले गांव के रूप में बनने के पीछे भी एक कहानी है। राजकीय डूंगर कॉलेज बीकानेर में समाजशास्त्र के प्रोफेसर श्यामसुन्दर ज्याणी जो इसी गांव के बेटे हैं, उन्हें 2021 में संयुक्त राष्ट्र की ओर से भू- संरक्षण का सर्वोच्च वैश्विक सम्मान दिया गया। तब गांव की ओर से रखे गए सामूहिक स्वागत के कार्यक्रम में ज्याणी ने गांव के सामने एक जन पौधशाला शुरू करने का प्रस्ताव रखा। उनके कहने का यह असर हुआ कि अगले ही दिन पूरा गांव सरकारी स्कूल में खाली पड़ी भूमि पर जन पौधशाला तैयार करने में जुट गया। पौधशाला का नामकरण हुआ 'शहीद भगत सिंह पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला।' गांव के बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक का इस पौधशाला से जुड़ाव है और सभी इसकी देखभाल करते हैं।

दो लाख पौधे वितरित

पौधशाला के संयोजक अजय ज्याणी ने बताया कि पिछले चार साल में दो लाख से अधिक पौधों का नि:शुल्क वितरण किया जा चुका है। अभी पौधशाला में विभिन्न किस्मों के लाखों पौधे तैयार हो रहे हैं। पंजाब व हरियाणा से लेकर जैसलमेर तक के पर्यावरण प्रेमी इस जन पौधशाला से पौधे लेने आते हैं। वर्ष 2021 में गांव में खेजड़ी मेले का आयोजन हुआ तब संयुक्त राष्ट्र संघ की डिप्टी सेक्रेटरी जनरल ने जर्मनी से ऑनलाइन जुड़ते हुए खेजड़ी मेले का उद्घाटन किया था।

विदेशों से सहायता

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना चुके इस गांव की पौधशाला को विकसित करने पर होने वाले खर्च का चौथाई हिस्सा प्रो. ज्याणी खुद वहन करते हैं। इसके अलावा कनाडा की सुनैनरु, अमरीका की प्राणदा और इंग्लैण्ड की बिलियन ट्री संस्थाएं तीन हिस्सा खर्च वहन कर रही हैं। पौधशाला से पौधे नि:शुल्क मिलते हैं। पौधशाला में मरुभूमि की पहचान जाल, खेजड़ी, कुमट, छोटा लेसुआ, रोहिड़ा जैसे देसज पौधे तैयार किए जाते हैं जो निजी नर्सरियों में तो मिलते ही नहीं है। सरकारी नर्सरियों में भी इनकी संख्या न के बराबर होती है।

पत्रिका

पर्यावरण तीर्थ बना डाबला : 207 एकड़ में छाई हरियाली, दुर्लभ प्रजातियां के वन्यजीवों ने भी डाला डेरा

रेत के समंदर में हिलोरें मार रही हरित वानिकी

यह थे तब धोरों के हालात।

01 व्यक्ति से शुरू हुई मुहिम से जुडा समाज

40 लाख पौधों से हरा भरा किया मरू क्षेत्र

पत्रिका बृजेश सिंह
patrika.com

पत्रिका स्पॉट लाइट

बीकानेर. हौसला हो। भरोसा हो। ध्येय पवित्र हो, तो दशरथ मांझी पहाड़ काट कर रास्ता बना सकता है। ऐसा ही एक साहिल यहां भी है, जिसने उजाड़, लेकिन खनन माफिया के चंगुल में फंसी 207 एकड़ जमीन न सिर्फ उनके जबड़े से खींच ली। बल्कि सामुदायिक भागीदारी के जरिए एक ऐसा जनांदोलन खड़ा कर दिया कि अब उसी धरती पर पेड़-पौधे लहलहा रहे हैं। यह कारनामा हुआ है बीकानेर से करीब 40 किलोमीटर दूर लूणकरनसर के उत्तमदेस की रोही स्थित महान पर्यावरण चिंतक जसनाथ जी की जन्म-कर्मस्थली डाबला तालाब क्षेत्र में। जसनाथी समुदाय के साथ मिल कर डूंगर कॉलेज के एसोसिएट प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी ने महज दो साल में क्षेत्र का कायापलट कर दिया। अवैध खनन खत्म हो चुका है। वृक्ष कटाई व शिकार रुक गए हैं।

डाबला तालाब क्षेत्र में स्थानीय निवासियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करते प्रो. ज्याणी।

इस तरह शुरुआत

भूमि को तारबंदी से संरक्षित कर देसज पेड़ों, घास, झाड़ियों और सूक्ष्म वनस्पति का रोपण, संरक्षण शुरू हुआ। सौर ऊर्जा संचालित ट्यूबवेल लगाया। ऐसी 11 छोटी तलाइयां बनवाई कि वन्य जीवों को पानी पीते समय एकदम प्राकृतिक जलस्रोत जैसा अहसास हो। सेवण, धामण, बूर, डाब, हिरण चाब, लांपड़ी, फोग, जाल, कुमट, रोहिड़ा, बेर, कैर, खेजड़ी, छोटी गुंदी, लसोड़ा, सहजन, बीलपत्र, पिलुणी, खींप, के तरह के हैलोफाइट, शंखपुष्पी, गोखरू, साटा, कागारोटी जैसी वनस्पति रोपी।

ऐसे चली मुहिम

देव जसनाथ संस्थागत वन मंडल के अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध व मेंटर प्रो. ज्याणी बताते हैं कि सबसे पहले 100 गांवों की यात्रा की। करीब 90 लाख रुपए एकत्र हुए। ट्रैक्टर टैंकर खरीदा, तीन युवकों को वैतनिक आधार पर नियुक्त किया, जो व्यवस्था संभालते हैं।

प्रो. ज्याणी की हरित यात्रा के कुछ अहम पड़ाव

- 2003 में राज. डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर में स्थानांतरण। परिसर में मरणासन्न नीम के पेड़ों को पुनर्जीवन के साथ हरित यात्रा शुरू की।
- 2006 में पारिवारिक वानिकी अवधारणा विकसित की। पेड़ को हरित सदस्य के रूप में परिवार से जोड़ा। बीकानेर के हिम्मटसर गांव में इस विचार को जमीन पर उतारा। आज वहां हर घर में पेड़ है। किसी-किसी में तो 20-25 पेड़-पौधे हैं।
- दो अनूठे रिवाज रुंख रीत व लिली लाग शुरू किए। रुंख रीत में प्रति व्यक्ति एक रुपया रोज का योगदान लिया। अब तक हजारों परिवार जुड़े। लाखों का सहयोग। कतरियासर जसनाथ जी के मेले में साल 2017 में रुंख प्रसाद की शुरुआत।
- 2011 से ही जन पौधशालाओं का विकास। 6 बड़ी एवं कुछ छोटी पौधशालाओं में हर साल दो लाख देसज पौधे तैयार होते हैं।
- डूंगर कॉलेज में 6 हेक्टेयर भूमि पर संस्थागत वन खड़ा किया। करीब सौ किस्मों के तीन हजार पेड़, मरुस्थली घास व एक जन पौधशाला शुरू की। 11 साल में इस पर 19 लाख से अधिक खर्चे। करीब 14 लाख प्रो. ज्याणी ने अकेले वहन किया।
- 2019 में संभाग के 150 गांवों के राजकीय स्कूलों में गांधी संस्थागत वन विकसित करवाए।
- मनरेगा को वृक्षारोपण से जोड़ा। 2018 में चूरू के सरदारशहर में 173 गांवों के 84 हजार परिवारों को पारिवारिक वानिकी से जोड़ा।
- 23 लाख सहजन के पेड़ों को हरित सदस्य के रूप में परिवारों से जोड़ा ।
- 40 लाख पेड़ अब तक पनपाने में कामयाब हुए।
- 60 हजार सहजन पौधे देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला से प्रशासन को निशुल्क सौंपे।

70 साल बाद दिखी कैराकल

चीते सी दिखाई देने वाली कैराकल कैट भारत में विलुप्ति के कगार पर है। बीकानेर क्षेत्र में अंतिम बार 1954 में देखा गया।

अब फिर उसकी उपस्थिति कैमरों में कैद हुई है। एशियाटिक वाइल्ड कैट, एफ्रो- एशियाई सैंड स्नेक, ईगल आउल, स्पाइनी टेल लिजर्ड, मरु लोमड़ी, सियार, चील, बाज, कठफोड़वा, वीवर बर्ड, बी ईटर, खरगोश, चिंकारा, नील गाय, जंगली सुअर आदि यहां विचरते दिखते हैं।

संयुक्त राष्ट्र से सराहना

प्रो. ज्याणी 2021 में संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से भूमि संरक्षण के सर्वोच्च वैश्विक सम्मान से नवाजे गए। भारतीय संसद में भी दो बार पारिवारिक वानिकी पर चर्चा हो चुकी है।

पत्रिका

केंद्रीय मंत्री जयंत चौधरी और शिक्षा मंत्री दिलावर ने वानिकी सदस्यों से किया संवाद

जलवायु परिवर्तन गंभीर चुनौती, जनभागीदारी से ही बचेगी धरती: चौधरी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. केंद्रीय शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्री जयंत चौधरी ने शनिवार को राजकीय डूंगर कॉलेज के गांधी वन में संस्था वन का निरीक्षण किया। उन्होंने इस कार्य को पर्यावरण बचाने के लिए प्रेरित करने वाला बताया। साथ ही पारिवारिक वानिकी पर श्रीगंगानगर, अनूपगढ़, हनुमानगढ़, चूरू, बीकानेर और फलौदी सहित 6 जिलों के पारिवारिक वानिकी समिति के प्रतिनिधियों से संवाद किया। चौधरी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन पूरे विश्व के सामने गंभीर चुनौती है। आम लोगों की प्रत्यक्ष भागीदारी से ही जलवायु को बचाया जा सकेगा।

चौधरी ने कहा कि हमारे देश में आदिवासियों की परंपराएं जलवायु को बचाने का जरिया रही हैं। सरकार इन परंपराओं को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रयत्नशील है। उन्होंने राजकीय डूंगर कालेज में खेल सुविधाएं विकसित करने लिए सांसद निधि से 15 लाख रुपए देने की घोषणा की। चौधरी ने

डूंगर कॉलेज में गांधी वन का अवलोकन करते केन्द्रीय मंत्री चौधरी व शिक्षा मंत्री दिलावर।

पारिवारिक वानिकी का नेतृत्व कर रहे डॉ. श्याम सुंदर ज्याणी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि इन कार्यों को देश के साथ विदेश में भी सराहना मिली है। विशेष तौर पर युवा पीढ़ी को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ना जरूरी है।

शिक्षा मंत्री ने मदन दिलावर ने कहा कि जलवायु संरक्षण और धरती के तापमान को नियंत्रित करने का एकमात्र तरीका पौधरोपण ही है। अधिक से अधिक पेड़ लगाकर ही हम धरती को बचा सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक पेड़ मां के नाम अभियान से जन-जन जुड़ा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में लाखों पौधे लगाए गए हैं। इससे पहले डूंगर कालेज में गांधी वन के अवलोकन के दौरान डॉ. ज्याणी ने दोनों मंत्रियों को वन में रोपित पौधों और पारिवारिक वानिकी की जानकारी दी। इस दौरान विधायक सुभाष गर्ग भी साथ में रहे।

शहीदों की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित

केंद्रीय मंत्री चौधरी और शिक्षा मंत्री दिलावर ने कैप्टन चन्द्र चौधरी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर उनके बलिदान को याद किया। कैप्टन चन्द्र चौधरी की वीरांगना शारदा चौधरी, उनके पुत्र सहित परिवार के सदस्यों से मुलाकात की। इसके बाद मेजर पूरन सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर शहीद की शहादत को नमन किया।

खुशखबर • रायसिंहनगर के 12 टीके की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान, भगतसिंह पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला के कुल खर्चे का चौथाई भाग वहन करते हैं प्रो. ज्याणी

एक छोटे से गांव की पौधशाला, जो तीन राज्यों को उपलब्ध करवाती है लाखों निशुल्क पौधे

भास्कर संवाददाता | रायसिंहनगर

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को लेकर पूरी दुनिया चिंतित है और सभी सरकारें इन प्रभावों को कम करने के लिए अपनी कोशिश कर रही हैं, लेकिन अनूपगढ़ जिले की रायसिंहनगर तहसील में एक गांव ऐसा भी है, जिसने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से मुकाबले के लिए अपने स्तर पर अनूठी पहल की है। भारत- पाक सीमा से 20 किमी दूर बसा रायसिंहनगर तहसील का चक 12 टी.के.।

गांव की आबादी करीब 100 घरों की बस्ती है, मगर गांव की पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है। इस पहचान की वजह है पर्यावरण संरक्षण में इस गांव की अनूठी भूमिका। गांव के सभी घरों में पेड़ों को हरित सदस्य के रूप में परिवारों का हिस्सा बनाया हुआ है। वर्ष 2021 में जब गांव के बेटे व राजकीय डूंगर कॉलेज बीकानेर में समाजशास्त्र के प्रोफेसर श्यामसुन्दर ज्याणी को संयुक्त राष्ट्र की ओर से भूमि संरक्षण का सर्वोच्च वैश्विक सम्मान दिया गया। तब गांव ने उनके सामूहिक स्वागत का कार्यक्रम आयोजित किया। उस कार्यक्रम में ज्याणी ने गांव के सामने एक जन पौधशाला शुरू करने का प्रस्ताव रखा। ताकि आस- पास के गांवों को निःशुल्क स्थानीय किस्मों के अच्छे पौधे उपलब्ध करवाए जा सकें। अगले ही दिन पूरा गांव सरकारी स्कूल में खाली पड़ी भूमि पर जन पौधशाला स्थापित करने के लिए आ जुटा।

इस काम में ज्याणी के साथ कनाडा की सुनैरा, अमेरिका की प्रागदा और इंग्लैंड की बिलियन ट्री संस्थाएं भी आ जुटी। इस जन पौधशाला में लगने वाले खर्चे का चौथाई हिस्सा खुद ज्याणी वहन करते हैं और बाकी तीन हिस्से ये तीनों संस्थाएं। बकौल ज्याणी हमने एक माली नियुक्त कर रखा है जो पौधशाला को संभालता है। जबकि गांव के युवा जरूरत के अनुसार समय-समय पर इस पौधशाला में मदद करते हैं।

ज्याणी ने इस जन पौधशाला को शहीदे आजम भगत सिंह को समर्पित करते हुए इसका नामकरण शहीद भगत सिंह पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला' रखा है। साथ ही भगत सिंह की स्मृति में एक छोटे वन खण्ड का भी विकास किया है। जिसमें 31 किस्मों के पेड़ लहलहा रहे हैं।

पौधशाला में जाल, खेजड़ी, कुमट, छोटा लेसुआ, रोहिड़ा जैसे देसज आदि पौधे किए जाते हैं तैयार

प्रोफेसर ज्याणी के अनुसार हम अलग-अलग स्थानों पर जन पौधशालाएं संचालित करते हैं, जिनमें हर साल करीब दो लाख पौधे तैयार होते हैं और ये सभी पौधे पूरी तरह से निःशुल्क उपलब्ध हैं। गांव 12 टीके. की जन पौधशाला सबसे अनूठी पौधशाला है, क्योंकि पूरे प्रदेश में किसी गांव द्वारा संचालित यह प्रथम और एकमात्र पौधशाला है, जिसमें इतनी बड़ी संख्या में पौधे तैयार करके तीन राज्यों को निःशुल्क उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

यहां जाल, खेजड़ी, कुमट, छोटा लेसुआ, रोहिड़ा जैसे देसज पौधे तैयार किए जाते हैं, जो प्राइवेट नर्सरियों में तो मिलते ही नहीं है और सरकारी नर्सरियों में भी इनकी संख्या न के बराबर होती है। इसलिए हरियाणा और पंजाब से लेकर जैसलमेर, जोधपुर तक के लोग इस पौधशाला में पौधे लेने के लिए आते हैं। इस साल खेजड़ी, जाल, रोहिड़ा, कुमट, छोटा लेसुआ के 33 हजार पौधे हैं, जिनका वितरित 23 अगस्त से शुरू होगा।

12 टीके में कल होगा पौधों का निःशुल्क वितरण: भगत सिंह पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला चक 12 टीके में पौधों का निःशुल्क वितरण शुक्रवार को होगा। पारिवारिक वानिकी के जनक प्रो श्यामसुंदर ज्याणी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ बीकानेर रेंज के आईजी ओमप्रकाश, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (एसजीपीसी) के कार्यकारिणी सदस्य गुरजीत सिंह कंग, डडाण आश्रम के संस्थापक बाबा हरि सिंह करेंगे। इस दौरान भगत सिंह पुस्तकालय श्री करणपुर की ओर से नशा मुक्ति से संबंधित नाटक का मंचन किया जाएगा। पारिवारिक वानिकी पर संवाद होगा और पुलिस पब्लिक पंचायत में समुदाय आधारित पुलिसिंग पर चर्चा होगी।

पंजाब व हरियाणा के पर्यावरण प्रेमी भी आते हैं पौधे लेने : पौधशाला संयोजक अजय ज्याणी ने बताया कि पिछले चार वर्षों में हम दो लाख के आस-पास पौधे इस जन पौधशाला से निःशुल्क वितरित कर चुके हैं। नजदीकी गांव ठाकरी में व्याख्याता के रूप में पदस्थापित सतवीर सिंह बराड़ भी इस जन पौधशाला में नियमित सेवाएं देते हैं।

उन्होंने बताया कि पंजाब व हरियाणा से लेकर जैसलमेर तक के पर्यावरण प्रेमी इस जन पौधशाला से पौधे लेने आते हैं। वर्ष 2021 में जब यहां खेजड़ी मेले का आयोजन किया गया, तब संयुक्त राष्ट्र संघ की डिप्टी सेक्रेटरी जनरल ने जर्मनी से ऑनलाइन जुड़ते हुए खेजड़ी मेले का उद्घाटन किया था।

United Nations Convention to Combat Desertification

14 Sep 2022 ·

Great news from our Land4Life Award winner Familial Forestry led by Professor Shyam Sunder Jyani! As part of their Loonkaransar project, the abandoned and degraded public lands have been restored to a thriving grassland, using native local grasses, herbs and shrubs. A public nursery established and grown 75,000 moringa saplings. They will be distributed to the desert dwellers of 500 villages on 2 October, International Non-violence Day to promote environmental peace and on 15 October, the International Rural Women Day. The project team has shared photos of land restored in just six months, planting 30 000 native plants over 74 hectares. Congratulations!

#united4land #landrestoration #nodroughtland

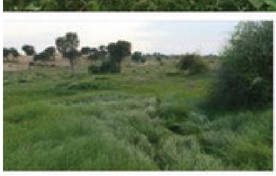

यूएनसीसीडी कोप-15 सम्मेलन

संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर गूंजा धोरों की धरती का हरित विचार

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

लूणकरणसर. पश्चिमी अफ्रीका के देश आइवरी कॉस्ट की राजधानी अबिदजान में चल रहे संयुक्त राष्ट्र के भूमि संरक्षण सम्बन्धी वैश्विक सम्मेलन यूएनसीसीडी कोप-15 में भूमि संरक्षण के सर्वोच्च पुरस्कार लैण्ड फॉर लाइफ अवार्ड विजेता एवं बीकानेर के डूंगर कॉलेज के एसोसियेट प्रो. श्यामसुन्दर ज्याणी का यूएनसीसीडी के कार्यकारी सचिव इब्राहिम थियाव ने अवार्ड का प्रमाण पत्र प्रदान कर विशेष सम्मान किया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि के तौर पर उद्बोधन देते हुए प्रो. ज्याणी ने कहा कि धरती हम सबकी मां है और देशज पौधों, घास और पेड़ों से सामुदायिक भागीदारी से ही भूमि का संरक्षण संभव है। उन्होंने कहा कि 500 साल पहले देव जसनाथजी ने अपने हाथों जालका पौधा रोपकर और हिरणों की रक्षा का उपदेश देकर यही शिक्षा देने का प्रयास किया था। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी का यह विचार कि साधन व साध्य दोनों की पवित्रता जरूरी है। भूमि संरक्षण के लिए मार्गदर्शक है, भूमि का संरक्षण व पौधारोपण कोई कार्यक्रम नहीं है, बल्कि प्रक्रिया है। यूएनसीसीडी के कार्यकारी सचिव इब्राहिम थियाव ने प्रो. ज्याणी द्वारा विकसित पारिवारिक वानिकी को एक युगान्तकारी विचार बताया । इस अवसर पर आइवरी कॉस्ट में भारत के कार्यवाहक राजदूत पीयूष गुप्ता व यूएनसीसीडी सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के सदस्य एवं पर्यावरण मंत्रालय के संयुक्त सचिव जिग्मेत टटपा, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. ओपी यादव, ग्रैमी पुरस्कार विजेता रिकी केज ने विचार रखते हुए पारिवारिक वानिकी से जुड़ने का आह्वान किया।

लैण्ड फॉर लाइफ अवार्ड प्रदान करते यूएनसीसीडी के कार्यकारी सचिव।

सम्मेलन में पारिवारिक वानिकी की लघु डॉक्यूमेन्टरी ने सबका ध्यान खींचा

संयुक्त राष्ट्र के कोप-15 सम्मेलन में प्रो. ज्याणी द्वारा विकसित पारिवारिक वानिकी अवधारणा पर एक विशेष लघु डॉक्यूमेन्टरी प्रदर्शित की गई। इसमें किस तरह से पारिवारिक वानिकी के विचार ने मरुस्थल में लाखों पेड़ पनपाकर जमीनी स्तर पर सकारात्मक बुनियादी बदलाव को गति दी है। सम्मेलन के दौरान धोरों की धरती राजस्थान से उपजी प्रो. ज्याणी की पारिवारिक वानिकी अवधारणा आज पूरी दुनिया का ध्यान खींच रही है। सम्मेलन में तकरीबन दुनिया के 70 से अधिक देशों के प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं।

देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी यात्रा : डाबला तालाब को पर्यावरण तीर्थ बनाने की मुहिम का आगाज

104 गांवों में जगाई पर्यावरण चेतना की अलख

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

अभियान में पर्यावरण चेतना यात्रा में शामिल हुई महिलाएं।

लूणकरनसर. उतमदेसर गांव की रोही स्थित डाबला तालाब में माफिया द्वारा जिप्सम के अवैध खनन पर अंकुश लगाने के बाद अब इसे पर्यावरण तीर्थ बनाने की मुहिम के तहत गुरुवार को पौधारोपण अभियान से आगाज किया गया। पर्यावरण दिवस 5 जून से शुरू हुई देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी यात्रा पंजाब, हरियाणा समेत राजस्थान के आठ जिलों के 104 गांवों में पर्यावरण चेतना की अलख जगाने के बाद उतमदेसर गांव में यात्रा का समापन हुआ।

संयुक्त राष्ट्र संघ के यूएनसीसीडी द्वारा भूमि संरक्षण के तह लैण्ड फॉर लाइफ अवार्ड विजेता प्रो. श्याम सुन्दर ज्याणी ने कहा कि देव जसनाथ संस्थागत वन मण्डल के बैनर तले आयोजित इस 18 दिवसीय यात्रा में जसनाथजी अनुयायियों का इस मुहिम से जोड़ने का प्रयास किया गया। अभियान के तहत गांवों में देव जसनाथ की शिक्षाओं के आधार पर पारिवारिक वानिकी की अवधारणा के बारे में बताया गया।

उन्होंने बताया कि 4500 किलोमीटर की यात्रा में सभी 104 गांवों पर्यावरण पंचायत का आयोजन कर 25 हजार से अधिक परिवारों से सीधा संवाद किया गया। इस दौरान देव जसनाथ की पर्यावरण शिक्षाओं, जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने में भूमिका समेत सामाजिक मुद्दों पर व्यापक चर्चा हुई।

देव जसनाथ संस्थागत वन मण्डल के अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध बताया कि अखिल भारतीय जसनाथी महासभा, सिद्ध धर्मार्थ ट्रस्ट, सिद्ध युवा महासभा, रूस्तम धोरा ट्रस्ट ने यात्रा का सहयोग किया। संस्थान के समन्वयक हंसराज मोटसरा, उपाध्यक्ष वीरबलनाथ जाखड़ व कोषाध्यक्ष बिसननाथ ने बताया कि डाबला तालाब की 294 बीघा भूमि की तारबंदी का कार्य पूर्ण हो चुका है। अब मानसून के दौरान पौधारोपण किया जाएगा।

यात्रा का कतरियासर धाम के महन्त मोहननाथ सिद्ध, भण्डारा हरोजी धाम बम्बलु, लिखमादेसर के भंवरनाथ सिद्ध, पूनरासर के प्रेमनाथ सिद्ध, पांचला सिद्धा के पीठाधीश सूरजनाथ सिद्ध, लीलसर धाम के पीठाधीश मोटनाथ सिद्ध, दूधवा आश्रम के परमहंस संत जोगेश, तेखलाश्रम के आचार्य भुवनेश्वर मुनि ने आशीर्वाद व समर्थन दिया।

लीली लाग व रूंख गीत की परम्परा की शुरूआत: पारिवारिक वानिकी अभियान के तहत पर्यावरण चेतना यात्रा में लीली लाग व रूंख गीत की नई परम्परा की शुरूआत की गई। इसमें लीली लाग के तहत शादी, वर्षगांठ, जन्मोत्सव समेत सामाजिक कार्यक्रम के तहत देव जसनाथ स्थल को पर्यावरण तीर्थ बनाने के लिए पौधारोपण अभियान में जन सहयोग की मुहिम शुरू की गई है। रूंख गीत में परिवार के हर सदस्य की प्रतिदिन के हिसाब से एक रुपया का सहयोग दिया जा रहा है। इसको लेकर उत्साह बना है।

...करण, जयपुर

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद

डॉ० राधाकृष्णन् शिक्षा संकुल, राजीव गांधी विद्या भवन, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर-302017

शिक्षा से वंचित बच्चों को विद्यालय से जोड़ने हेतु शिक्षा विभाग द्वारा प्रवेशोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

संदर्भ : 5 जून : विश्व पर्यावरण दिवस

पर्यावरण व जीवन को बचाने का जज्बा

पूरी दुनिया में 5 जून को हर साल विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह दिन लोगों में पर्यावरण को लेकर जागरूकता पैदा करने के लिए मनाया जाता है। अगर आप भारत के किसी बड़े शहर में रहते हैं, तो आप जानते होंगे कि यहां रह रहे लोग हर साल बढ़ते तापमान और प्रदूषण के बीच किस तरह जी रहे हैं। ये हाल सिर्फ दिल्ली या मुंबई जैसे शहरों का नहीं है बल्कि पूरी दुनिया का है। आज तेजी से बढ़ता तापमान और प्रदूषण इंसानों के साथ-साथ पृथ्वी पर रह रहे सभी जीवों के लिए बड़ा खतरा बन गया है। यही वजह है कि कई जीव-जन्तु विलुप्त हो रहे हैं।

परिवार सहित पौधारोपण करते पर्यावरणविद श्याम सुन्दर ज्याणी।

कॉलेज परिसर में ही 6 हैक्टेयर भूमि पर 3000 पेड़ों का एक जंगल खड़ा कर दिया

आज की तारीख में 1 अरब 8 करोड़ रुपए मूल्य की ऑक्सीजन उत्पन्न कर रहा है

इनके लगाए जंगल आज 'फेफड़ों' का काम कर रहे

रामकिशन शर्मा

श्रीगंगानगर (सीमा सन्देश)। कोरोना की दूसरी लहर में ऑक्सीजन की भारी माँग व यूरोपियन कार्डियोलोजी सोसायटी द्वारा कोरोना से होने वाली मौतों में वायु प्रदूषण की भूमिका सम्बन्धी शोध ने हमारे शहरों की आबोहवा को लेकर होने वाली बहसों को तेज कर दिया है। कुछ विशेषज्ञ अस्पतालों में बढ़ती ऑक्सीजन की मांग को हमारे शहरों में वायु प्रदूषण की भयावह स्थिति से जोड़ते हुए प्रकृति की पुनः स्थापना की आवश्यकता पर तत्काल ध्यान देने पर जोर दे रहे हैं तो आम आदमी की चर्चा में उन व्यक्तियों व संस्थाओं का जिक्र होने लगा है जो अपने स्तर पर पेड़ लगाकर शहरों की सेहत को सुधारने में लगे हुए हैं। बीकानेर शहर में भी एक ऐसे प्रोफेसर हैं ,जिनके लगाए जंगल आज फेफड़ों का काम कर रहे हैं। राजकीय डूंगर कॉलेज में समाज शास्त्र के एसोसिएट प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी ने अपने विद्यार्थियों की मदद से कॉलेज परिसर में ही 6 हैक्टेयर भूमि पर 3000 पेड़ों का एक जंगल खड़ा कर दिया जो सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गठित पैनल के फार्मूले के अनुसार गणना करने पर आज की तारीख में 1 अरब 8 करोड़ रुपए मूल्य की ऑक्सीजन उत्पन्न कर रहा है।

170 गांधी संस्थागत वन विकसित करवाए

पारिवारिक वानिकी के प्रणेता ज्याणी अपने इस वन खंड को संस्थागत वन कहते हैं। बकौल ज्याणी संस्थागत वन मानव निर्मित जंगल की एक नई श्रेणी है, जो विद्यार्थियों व स्थानीय समुदाय को सतत वन प्रबंधन के तरीके सिखाती है। स्कूली शिक्षकों व ग्रामीण युवाओं के सहयोग से पश्चिमी राजस्थान में 170 गांधी संस्थागत वन विकसित करवा दिए हैं यह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा।

अब तक 25 लाख पेड़ लगवा चुके हैं

डूंगर कॉलेज में विकसित इस संस्थागत वन में पेड़ों की करीब 100 किस्में हैं। हिमाचल प्रदेश के वानिकी प्रशिक्षण संस्थान से प्रशिक्षु वन अधिकारियों के तीन दल इस जंगल में प्रयुक्त हो रही सतत वन प्रबंधन तकनीकों को सीखने हेतु आ चुके हैं। ज्याणी पिछले 18 सालों में दस लाख से अधिक परिवारों को पारिवारिक वानिकी से जोड़ते हुए अपनी देखरेख में 25 लाख पेड़ रोपित करवा चुके हैं ।

सोशल मीडिया पर 67 हजार लोग जुड़े

इस कारण धार्मिक मेलों में रूंख प्रसाद और तमाम तरह के रीति - रिवाजों से वृक्षारोपण तेजी से जुड़ता चला जा रहा है। जमीनी स्तर की गतिविधियों के साथ-साथ सोशल मीडिया पर भी 67 हजार लोग ज्याणी से जुड़े हुए हैं। ज्याणी ने प्रदेश के गांव -ढाणी तक घर-घर सहजन अभियान को पहुंचाकर 29 जिलों में 14 लाख सहजन रोपित करवा दिए।

Sociologist leads horticulture revolution

Rosamma.Thomas@timesgroup.com

Jaipur: By day, Shyamsunder Jyani is a teacher of sociology at the Government Dungar College, Bikaner. After his teaching assignments at college, though, for over ten years now he has been leading a rich life, leading what he calls the 'familial forestry' movement in Ganganagar and Bikaner, among the hottest and most arid of India's districts. The 37-year-old won an award from the President of India for his efforts in 2012. Now, he has another achievement – he has managed to start budding on desert bush Zyzyphus nummularia, which grows about two metres high and spreads out, forming a thicket in desert soil. This is the source of the smaller variety of fruit called 'ber' – the dark pink little fruit that is sold with masala on the wayside in Jaipur and other cities. It has a large seed and a just a little pulp that is edible.

Scientists had long expressed disbelief that this bush could be budded – where the bud and some epidermal tissue is added to a new root-stock to increase fruit yield. The stem of the bush is rather narrow, and budding would create what scientists call a "bottleneck" effect, making the base of the plant too narrow to bear the load of the top, which could grow broader. Jyani, however, did not allow the skepticism of scientists from stopping his efforts. He went ahead and tried budding on a few bushes in his friend Rameshwer Lal's land in 2010. Now, the farmer has a rich crop of ber, lasuda and khejri.

Lal told TOI, "The scientists told us that we must not attempt to drive a truck on a vehicle fitted with the wheels of a car. They said the 'bottleneck issue' would ruin our plants. We did initially face some trouble, but we found ways around it. Today, the yield of the plants and the quality of the fruit surprise the very scientists who were initially skeptical."

TOI

TEEMING WITH FRUIT

कार्यक्रम • देव जसनाथ यात्रा का बताया उद्देश्य, डाबला तालाब को पर्यावरण तीर्थ के रूप में विकसित करने की अपील

महिलाओं की भागीदारी के बिना पर्यावरण संरक्षण की बात बेमानी, हर घर में हो चर्चा: प्रो. श्यामसुंदर

भास्कर संवाददाता | हनुमानगढ़

पर्यावरण संरक्षण के बारे में बातें बहुत होती है, लेकिन धरातल पर अब तक कोई परिवर्तन नजर नहीं आ रहा। एक दिन पर्यावरण दिवस मनाकर हम भूल जाते हैं। घर में हर प्रकार की चर्चा होती है, लेकिन पर्यावरण को लेकर कोई बात नहीं होती। इसके लिए आमजन को जागरूक होना होगा और महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। यह बात 'लैंड फॉर लाइफ' अवार्ड से सम्मानित प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी ने मंगलवार को जिला परिषद सभागार में देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी यात्रा के तहत हुए कार्यक्रम में कही। उन्होंने कहा कि पौधों को परिवार का हिस्सा बनाना होगा। जब तक हम पौधों को परिवार का सदस्य नहीं मानेंगे, तब तक पर्यावरण संरक्षण की बातें बेमानी हैं। इस में महिलाओं की भागीदारी बढ़ानी होगी। आमजन को जागरूक करना होगा। प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी ने देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी यात्रा का उद्देश्य बीकानेर जिले की लूणकरणसर तहसील के डाबला तालाब को पर्यावरण तीर्थ के रूप में विकसित करना है। राजस्थान के 7 और पंजाब व हरियाणा के 2-2 जिलों में पारिवारिक वानिकी यात्रा जाएगी। इसके माध्यम से 100 रेगिस्तानी गांवों में इको जसनाथी समूहों का गठन किया जाएगा। डाबला तालाब में पर्यावरण तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए हर व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है। प्रतिदिन एक रुपया देकर बड़ा योगदान दे सकते हैं।

पारिवारिक वानिकी यात्रा की कलेक्टर ने की सराहना, बोले- हर काम में जन भागीदारी जरूरी

कलेक्टर नथमल डिडेल ने पारिवारिक वानिकी यात्रा की सराहना करते हुए कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए अच्छी मुहिम चलाई जा रही है। उन्होंने स्कूल व कॉलेज के युवाओं को भी पर्यावरण संरक्षण की मुहिम से जोड़ने का आह्वान किया। कलेक्टर ने कहा कि आमतौर पर सरकार के निर्देश पर सरकारी कार्यालयों में सरकारी कार्यक्रम होते हैं। जब तक हर कार्य में आमजन की भागीदारी नहीं होगी तब तक सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिलता। कार्यक्रम में जूली फ्लोरा की समस्या बताए जाने पर कलेक्टर ने कहा कि इनको नष्ट करने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएंगे। हर सप्ताह शनिवार और रविवार को अभियान चलाया जाएगा। डीएफओ करणसिंह काजला ने कहा कि प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी को भूमि संरक्षण के संबंध में विश्व का सर्वोच्च सम्मान मिलना सभी के लिए सम्मान की बात है। जिला परिषद के जिला समन्वयक आईईसी पदमेश सिहाग ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए पारिवारिक वानिकी के तहत जिले में हुए पौधरोपण के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर सेवानिवृत एक्सईएन एनआर ज्याणी, हुकमाराम, कृष्ण चाहर, अनिल कुमार, लाधूसिंह भाटी, नितिन चुघ आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

इधर, नोहर के सिरंगसर पहुंची देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी यात्रा, स्वागत किया

नोहर| क्षेत्र के गांव सिरंगसर में देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी यात्रा के पहुंचने पर सरपंच रजीराम ज्याणी के नेतृत्व में ग्रामीणों ने स्वागत किया गया। बीकानेर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर व संयुक्त राष्ट्र के सर्वोच्च सम्मान लैंड फॉर लाइफ अवार्ड से सम्मानित प्रोफेसर श्यामसुन्दर ज्याणी के नेतृत्व में यात्रा गांव सिरंगसर पहुंची। वानिकी यात्रा का उद्देश्य वन संरक्षण व जीव संरक्षण है। इस मौके पर प्रोफेसर श्यामसुन्दर ज्याणी ने बताया कि वन संरक्षण व जीव संरक्षण से प्रकृति को बचाया जा सकता है। उन्होंने अधिक से अधिक पेड़ लगाने पर बल दिया। उन्होंने पेड़ों में जाल, सहजन व खेजड़ी के रोपण का सन्देश दिया। साथ ही जाल, सहजन व खेजड़ी के बीज वितरित किये। इस मौके पर उपस्थित खुइयां थाना प्रभारी विजेंद्र शर्मा पर्यावरण संरक्षण में वृक्षों के महत्व पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहने व यातायात नियमों का पालन करने की बात कही। इस मौके पर गांव के नागरिक व युवा उपस्थित थे। ग्रामीणों व युवाओं ने मानसून में एक व्यक्ति एक पेड़ लगाने का भरोसा दिलाया।

Rajasthan women vow to nurture 'green family'

Volunteers in 33 panchayats of Taranagar block plant 5,100 saplings as part of Harit Marubhumi drive

MOHAMMED IQBAL
JAIPUR

Taking a pledge to treat the plants as "green members" of their families, 100 women each in 33 village panchayats of Taranagar block in Rajasthan's Churu district planted a total of 5,100 saplings earlier this week to mark the 'World Day to Combat Desertification and Drought'. The initiative was part of a unique *Harit Marubhumi* (green desert land) drive.

Women planting saplings in Taranagar block on 'World Day to Combat Desertification and Drought'. • SPECIAL ARRANGEMENT

The campaign highlighted the crucial interconnection between humanity and nature, making the tree an inseparable part of the "family consciousness", which in turn brings every issue related to plant, tree, leaves and the climate to the ecosystem for generating environmental sensitivity and empowerment.

All the panchayats in Taranagar block joined the drive and identified the land where the plantation drive could be taken up. Block Development Officer Sant Kumar Meena said the inaugural programme at Gajuwas panchayat witnessed the plantation of 251 saplings of desert species such as *khejri, rohida, neem, ber* and *sheesham*.

The women were also gifted with fruit-bearing saplings of lemon, guava, mulberry, jamun and pomegranate for planting them at home. At the plantation sites, which included government schools and panchayat land, the saplings were sown at a distance of 15 feet each to help them grow with enough space and sunlight.

The sarpanches of the panchayats and the women residing in the nearby areas owned up the responsibility of keeping the plants safe until they grow into trees, shrubs and perennial herbs.

UN award

Shyam Sunder Jyani, the recipient of this year's Land for Life Award of the UN, guided the volunteers in preparing the soil, selecting the saplings and planting them with care. The UN Convention to Combat Desertification conferred the award on Mr. Jyani, an associate professor at Government Dungar College, Bikaner, in recognition of his contribution to promote "familial forestry", relating the tree with the family. The award has put the spotlight on land restoration and conservation through exemplary efforts for improving the relationship of communities with nature.

More than 10 lakh families have joined the familial forestry campaign in 15,000 villages of western Rajasthan and over 25 lakh trees have been planted over the last 17 years. Mr. Jyani's concept of institutional forest has executed sustainable forest management in educational institutions by involving students and local communities.

पारिवारिक वानिकी की दिशा में तारानगर क्षेत्र में अनूठा नवाचार, लगेंगे डेढ़ लाख से अधिक पेड़

शपथ लेकर पेड़ों को बना रहे परिवार का सदस्य

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

पौधरोपण में अग्रणी दिख रही हैं महिलाएं

मटका पद्धति से न्यूनतम पानी में पाल रहे पौधे

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

चूरू. तारानगर के मरुस्थलीय क्षेत्र में पौधरोपण करती महिलाएं।

चूरू. तारानगर के मरुस्थलीय क्षेत्र में पौधरोपण करते अधिकारी।

चूरू. प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद यूं तो मरुभूमि का पेड़-पौधों के लिए प्रेम हमेशा ही अनुकरणीय रहा है लेकिन चूरू के तारानगर ने इन दिनों एक अनूठी शुरुआत कर पेड़ों को शपथ लेकर परिवार कर सदस्य मानना शुरू कर दिया है। तारानगर ब्लॉक के कई गांवों में पारिवारिक वानिकी अंतर्गत यह नवाचार हो रहा है और देखने वाली बात यह है कि पुरुषों की बजाय महिलाओं में पौधरोपण को लेकर ज्यादा उत्साह देखने को मिल रहा है। मुहिम को सरकारी योजनाओं का भी खूब साथ मिल रहा है और महानरेगा में प्रत्येक ग्राम पंचायत में पौधे लगाये जा रहे हैं। इस पौधरोपण में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग सूत्रधार का काम कर रहा है। तारानगर विकास अधिकारी संत कुमार मीणा ने बताया कि महानरेगा में एक लाख पौधे लगाने का लक्ष्य है, जिसमें पहले चरण में 66 काम मंजूर किए गए हैं। प्रत्येक कार्य में 500 पौधे लगाए जाएंगे, इस प्रकार कुल 33 हजार पौधे लगेंगे। इसके साथ ही 44 गांवों में रोड के किनारे पौधरोपण के काम स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें कुल 1760 पौधे लगाए जाएंगे। पारिवारिक वानिकी कार्यक्रम के तहत महानरेगा एवं वन विभाग की नर्सरियों में 30 हजार पौधे तैयार किए गए हैं जो आमजन को निःशुल्क वितरित किए जाएंगे। विधायक नरेंद्र बुडानिया इस पौधरोपण की इस मुहिम से सक्रिय ढंग से जुड़े हैं।

तैयार हो रहे सहजन के एक लाख पौधे

बीडीओ संत कुमार मीणा के मुताबिक, ब्लॉक में वितरण के लिए सहजन के एक लाख पौधे तैयार किए जा रहे हैं प्रत्येक घर में दो पौधे सहजन के वितरित किए जाएंगे। मीणा बताते हैं कि विधायक नरेंद्र बुडानिया एवं प्रधान संजय कस्वां सहित जनप्रतिनिधियों तथा जिला कलक्टर सांवर मल वर्मा, सीईओ सत्तार खान, एसीईओ डॉ नरेंद्र चौधरी सहित अधिकारियों के सकारात्मक रवैये एवं सहयोग के चलते गांवों में बड़े पैमाने पर पौधरोपण कार्य संभव हो रहे हैं। आमजन का पूरा सहयोग मिल रहा है तथा पौधरोपण के साथ-साथ लोगों की जागरूकता पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है ताकि लोग जागरूक होकर पौधे की देखभाल करें। इसी सिलसिले में विश्व मरुस्थलीकरण रोकथाम दिवस पर 17 जून को प्रत्येक ग्राम पंचायत पर सौ-सौ महिलाएं जुटीं और करीब 5100 पौधे एक साथ लगाए। पौधरोपण के साथ ही महिलाओं ने पौधों को परिवार का हरित सदस्य बनाकर उसकी देखभाल की शपथ ली। भूमि संरक्षण के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित पुरस्कार लैंड फॉर लाइफ के विजेता प्रो. श्याम सुन्दर ज्याणी के मार्गदर्शन में यह पौधरोपण किया गया। सभी 33 पंचायतों में पौधरोपण के लिए 17 अधिकारियों को दो-दो पंचायतों पर प्रभारी लगाया गया। मीणा ने बताया कि महिलाओं को इस कार्य में अग्रणी बनाने में एसडीएम मोनिका जाखड़ की विशेष भूमिका रही। जाखड़ ने महिलाओं एवं प्रभावी समूहों से संवाद कर इस दिशा में काफी प्रयास किए। पौधरोपण की तकनीक और दूरी पर विशेष ध्यान दिया गया। सभी पौधे 15-15 फीट दूरी से लगाए गए। पौधों को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी ग्रामीण महिलाओं व सरपंचों ने ली है।

A small village in Raj fights global warming big way

Neel.Kamal@timesofindia.com

FRIENDLY NEIGHBOUR: This nursery in Chak 12 TK village of Rajasthan's Anupgarh district is feeding Punjab and Haryana too

Bathinda: A small village in Rajasthan is working in a different way to mitigate the impacts of global warming through community-driven initiative. The public nursery — established at Chak 12 TK village in Raisinghnagar tehsil of Anupgarh district nearly four years ago named 'Shaheed Bhagat Singh familial forestry' — is feeding Rajasthan, Punjab and Haryana.

After distributing over 2 lakh saplings in three states, now this nursery has prepared 33,000 saplings which it will start distributing from Aug 23. The initiative has three distinct factors — it is a collective effort of all the nearly 100 households in the village; it is promoting indigenous saplings; and these are distributed free of cost.

The nursery primarily grows indigenous species such as jal, khejri, kumat, small lesua, and rohida that are increasingly rare in both private and govt nurseries.

With the world grappling with the challenges posed by climate change and the govts across the globe striving to find solutions, the tiny settlement with less than 100 households, situated nearly 20 kilometers from the India-Pakistan border, despite its size, is playing a pioneering role in environmental conservation.

Familial Forestry

This initiative exemplifies how small communities can drive significant environmental change. Familial forestry, a concept championed by Prof Shyam Sunder Jyani, involves treating trees as green members of the family.

This initiative emphasises the integration of trees into human habitats, agricultural landscapes, and institutions. In 2021, when Prof Jyani was awarded the 'Land for Life Award' by the United Nations for his outstanding contributions to land conservation, his village celebrated this honour with a collective event of establishing a public nursery in the village to prepare high-quality, indigenous saplings to be distributed free of charge to surrounding villages. The initiative attracted the support of international organisations such as SuNaAnRu from Canada, Praanada from the US and the Billion Tree Initiative from the UK, who fund the initiative.

In addition to the nursery, which stands as a living tribute to the legacy of freedom fighter Bhagat Singh, a small forest block has been developed in his memory, where 31 species of trees flourish. "Efforts also embody the principles of agroforestry and community-based land restoration, central to familial forestry movement," Jyani said.

राजस्थान पत्रिका . चेन्नई, शनिवार, 28 जुलाई, 2018 Weekend पत्रिका राजस्थ

84 हजार परिवारों ने मनाया पारिवारिक वानिकी महोत्सव

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सरदारशहर के अजीतसर गांव में पौधारोपण करती महिलाएं

सरदारशहर. पंचायत समिति के तत्वावधान में आयोजित पारिवारिक वानिकी महोत्सव के तहत 50 ग्राम पंचायतों के 173 गांवों के 84 हजारों परिवारों ने एक जुट होकर एक लाख पौधों का रोपण किया। प्रधान सत्यनारायण सारण ने बताया कि सभी श्मशान घाट, स्कूल परिसर, पंचायत भवन व लोगों के घरों में पौधारोपण किया गया है। विकास अधिकारी संतकुमार मीणा ने बताया कि ग्रामवासी गांवों में लगे इन पौधों की देखभाल अपने परिवार का सदस्य मानकर करेंगे। सार्वजनिक भूमि पर लगे पौधों की देखभाल में ग्रामीणों के लिए सरपंचों व संस्था प्रधानो को आवश्यक सुविधा मुहैया करवाई जाएगी। अजीतसर में शुभारंभ व गाजूसर में हुए महोत्सव के मुख्य अतिथि जिला कलक्टर मुक्तानन्द अग्रवाल ने कहा कि प्रकृति के साथ चलने से ही हमारा भविष्य सुखद है।

हर कोई पेड़ों को अपने जीवन का अहम् हिस्सा बनाये इसके लिए लोगों की मानसिकता में भी इनकी जगह होनी चाहिए : प्रोफेसर श्याम सुन्दर ज्याणी

बीकानेर। समाज की मूलभूत इकाई परिवार होता है, उसी तरह परिवार में पेड़ भी महत्वपूर्ण सदस्य होना चाहिए। ऐसा करने से हमारे समाज के बच्चे-बूढ़े सभी में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता बढ़ेगी। प्रोफेसर श्याम सुन्दर ज्याणी की कहानी आज पूरे विश्वभर में चर्चा का विषय बन गयी है।

उनके द्वारा लाखों की संख्या में लगाए गए पौधे अब पेड़ का रूप लेकर उनकी संघर्षशीलता और सफलता की कहानी को बयां कर रहे है। भूमि संरक्षण से सम्बंधित संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा प्रदत्त दुनिया के सबसे बड़े सम्मान लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड के लिए ज्याणी के चयन से उनकी वनीकरण की अनूठी अवधारणा 'पारिवारिक वानिकी' के प्रति दुनिया उम्मीद भरी नजर से देख रही है। जिसके जरिए अब तक राजस्थान के करीब 18 हजार गांवों में 15 लाख से ज्यादा परिवारों की सक्रिय सहभागिता से लगभग 38 लाख पेड़ों को घर, गाँव व खेत -खलिहान में हरित सदस्य के रूप में जोड़ा जा चुका है। ज्याणी की 'पारिवारिक वानिकी' पहल के चर्चे देशभर में हैऔर राजस्थान से बाहर भी असंख्य परिवार इसे अपना रहे है। श्यामसुंदर ज्याणी का कहना है किपारिवारिक वानिकी वक्त की जरूरत है। इसका मतलब ये है कि वन एवं पर्यावरण के संरक्षण की जिम्मेदारी अब हर व्यक्ति को उठानी होगी। गमले में पौधे लगा देने से काम नहीं चलेगा। जहां जरूरत हो वहां पौधा लगाया जाए और उसके पेड़ बनने तक हिफाजत की जाए।

ज्याणी का यह भी कहना है जब हम प्रकृति को कुछ देंगे तो वह बदले में हमें बहुत कुछ देगी। खेत-खेत खेजड़ी के जरिए भूमि को फिर से सेहतमंद बनाने में जुटे ज्याणी के साथ लाखों युवाओं व शिक्षकों की एक पूरी फौज जन पौधशालाएं विकसित कर सामुदायिक स्तर पर वृक्षारोपण को सामाजिक रीति-रिवाजों से जोड़ कर पेड़ के प्रति सोच व समझ में बुनियादी बदलाव ला रही है। जानकारी के अनुसार मूल रूप से राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के एक किसान परिवार से ताल्लुक रखने वाले श्याम सुन्दर ज्याणी ने समाजशास्त्र विषय में अपनी पढ़ाई की। किसान परिवार से होने के कारण हमेशा से ही श्याम सुन्दर को पेड़ों व प्रकृति से लगाव था। साल 2002 में गंगानगर जिले में ही कॉलेज शिक्षक के रूप में उनका पदस्थापन हुआ। पर एक साल के भीतर उन्हें, जुलाई 2003 में बीकानेर स्थानांतरित कर दिया गया। उन्होंने बताया कि अपने तबादले के बाद वे बीकानेर आये तो उन्होंने देखा कि उनके कॉलेज में बहुत ज्यादा पेड़ नहीं है और जो कुछ नीम आदि के पेड़ है वे भी धीरे-धीरे मरते जा रहें थे। उन्होंने अपने कुछ विद्यार्थियों के सहयोग से उन पेड़ों की देख-रेख का कार्य शुरू किया। सबसे पहले अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर उन्होंने सभी पेड़ों के चारों तरफ खुदाई करके थांवले बनाए ताकि पानी संग्रहित होकर पेड़ों की जड़ों तक जाये। इतना ही नहीं उन्होंने अपने जेब-खर्च से एक पानी के टैंकर वाले को भी पेड़ों के लिए रोज पानी लाने के लिए नियुक्त किया। उन्होंने धीरे-धीरे बाकी प्रांगण में भी पेड़ लगाये और अपने विद्यार्थियों के साथ रोज उन में पानी देने और देख-रेख का कार्य शुरू किया। इससे प्रभावित हो कर उन्हें एनएसएस का काम भी संभालने की जिम्मेदारी सौंपी गयी।

साल 2006 में राजस्थान सरकार के एक प्रोग्राम के तहत वे बीकानेर के पास हिम्मतासर गांव में बच्चों के साथ कैंप के लिए गये। श्याम सुन्दर ने बताया, 'मुझे बहुत हैरानी हुई जब मैनें उस गांव के किसी भी घर में कोई पेड़ नहीं देखा और गांव की चौपाल पर भी 4-5 ही पेड़ थे। मुझे और मेरी टीम को गांव के लोगों की अकाल राहत कार्य के तहत जौहड़ की खुदाई में मदद करते देख गांव वाले साथ आ गए। धीरे-धीरे गांव वालों से जान-पहचान बढ़ी तो मैंने उन्हें प्रस्ताव दिया कि हम आपके हर घर में एक पेड़ लगाएंगे और उन्हें पेड़ों का महत्व समझाया। गांव वालों के साथ से श्यामसुन्दर ने उस गांव के हर घर में और आस-पास पेड़ लगाए और आज की तारीख में उस गांव मेंलगभग 3,000 से भी अधिक पेड़ है। इन पेड़ों की लागत का सारा खर्चा श्याम सुन्दर ने अपने वेतन से दिया।

उसी गांव से श्याम सुन्दर की 'पारिवारिकवानिकी' की अवधारणा शुरुआत हुई। जो सिलसिला हिम्मतासर में साल 2006 में शुरू हुआ वह आज भी बरकरार है। कई लोगों को उनसे प्रेरणा भी मिली, उन्होंने बताया कि साल 2016 में गंगानगर के पास एक गांव में पारिवारिक वानिकी के तहत कार्य कर रहा था, जिसे देख कर एक पत्रकार ने शिक्षक दिवस पर उनके काम पर एक लेख प्रकाशित किया। जिसके बाद लाखों लोग उनसे जुड़े। ज्याणी का मानना है कि यदि घरों में फल के वृक्ष लगाए जाएँ तो एक वक्त के बाद घर के सदस्यों के आहार में एक फल शामिल हो जाएगा। अगर हर गरीब के घर में कोई भी फल का वृक्ष हो तो बच्चों में कुपोषण की समस्या को कुछ हद तक कम किया जा सकता है। इसके अलावा बढ़ते जलवायु परिवर्तन और घटते वनों के कारण बहुत से जीव जैसे तितलियां, चिड़ियां आदि की प्रजातियां लुप्त हो रही है तो घरों में पेड़ होने से उन्हें भी आश्रय और कुछ भोजन मिले तो हम अपनी बायोडायवर्सिटी को भी सहेज सकते है। बहुत से पेड़ों के पत्ते घरेलू जानवरों के चारे के रूप में भी इस्तेमाल हो सकते है।

ज्याणी ने बताया की उनका उद्देश्य पेड़ों को न केवल लोगों के घरों में बल्कि दिलों और विचारों में जगह दिलाना है। हर कोई पेड़ों को अपने जीवन का अहम् हिस्सा बनाये इसके लिए लोगों की मानसिकता में भी इनकी जगह होनी चाहिए। जैसे बच्चे के जन्म की खुशी में भी उसके नामकरण पर पेड़ लगवाये जाएं। उन्होंने कहा, शादी में जिस तरह सात वचन दूल्हा-दुल्हन लेते है और उन्हें जीवनभर निभाने का वादा करते है वैसे ही हमने लोगों से अपील की कि वे सात वचनों के अलावा एक आठवां महावचन भी ले, जिसे हम हरित वचन कहेंगे कि वह दंपति अपनी शादी पर एक पौधा जरूर लगाएगा और अन्य किसी दम्पति को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करेगा।

ऐसे ही श्याम सुन्दर ने किसी की मृत्यु के पश्चात् महाभोज पर पैसे लगाने की बजाय उस व्यक्ति की याद में पूरे समुदाय द्वारा पेड़ लगवाने का सन्देश दिया।

यदि कुछ करने की ठान ली जाये तो यकीनन जीत हासिल होती है। जानकारी के अनुसार उन्होंने इंडियन काउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च के वैज्ञानिकों के सामने प्रस्ताव रखा कि यदि मरुस्थली पेड़ जैसे कि झारबेरी, जिसे पनपने के लिए ना के बराबर पानी की जरूरत होती है, उस पर बड़ा बेर (थाई एप्पल) की बडिंग कर दी जाये तो बिना किसी पानी की जरूरत के प्राकृतिक रूप में यह फल उग जाएगा। पर ज्याणी के इस प्रस्ताव को उन्होंने असंभव बताते हुए मना कर दिया। लेकिन इसे चुनौती के रूप में लेने वाले श्याम सुन्दर ने अपने कुछ विद्यार्थियों के साथ मिल कर इसे सम्भव कर दिखाया। उनका यह प्रयोग अन्य मरुस्थली पेड़ जैसे लसोड़ा और खेजड़ी पर भी कारगर साबित हुआ।

पारिवारिक वानिकी के तहत उनके काम के लिए श्याम सुन्दर को संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ -साथ, राष्ट्रपति द्वारा साल 2012 में इंदिरा गाँधी एनएसएस नेशनल अवार्ड और साल 2016 व 2022 में राज्य सरकार द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में भी दो बार पारिवारिक वानिकी का नाम दर्ज हुआ है। दुनियाभर के तमाम मीडिया हाउस पारिवारिक वानिकी पर आलेख प्रकाशित कर चुके है।

श्याम सुन्दर का उद्देश्य पारिवारिक वानिकी को समाज के साथ-साथ शिक्षा से भी सही मायनों में जोड़ना है। अपनी इसी सोच पर काम करते हुए उन्होंने अपने कॉलेज, बीकानेर में ही तरह-तरह के पेड़ लगा एक छोटा-सा जंगल बनाया है जिसे उन्होंने गांधी संस्थागत वन नाम दिया है, इस जंगल का उद्घाटन नवम्बर 2022 में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने किया। आज ऐसे 200 जंगल ज्याणी के प्रयासों की बदौलत बीकानेर संभाग व बाड़मेर, जोधपुर, सांचौर तक विकसित किए जा चुके है जो धीरे-धीरे अन्य छोटे-मोटे जीव जैसे तीतली, चिड़िया के जरिए एक माइक्रो इकोसिस्टम का रूप ले रहे है। बातचीत में प्रोफेसर ज्याणी कहते है अब जलवायु परिवर्तन के दौर में मोटे अनाजों की जरूरत फिर से है। इसीलिए हमारे पूरे समाज को वापस अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा, क्योंकि बाजरा जैसा मोटा अनाज ना सिर्फ कम पानी, अधिक गर्मी और रेतीली जमीन में होता है बल्कि इसमें भरपूर पोषक तत्व होते है।

उन्होंने कहा की मैं पर्यावरण पर एक मॉडल दे सकता हूँ जिसके तहत हम विद्यार्थियों को सही मायनों में उनका पर्यावरण दे सके और उसकी देख-रेख के गुर सिखा सके। उनका कहना है कि अगर सरकार उनका उचित सहयोग करे तो पूरे देश में पारिवारिक वानिकी को और अधिक मजबूत पहचान मिल सकती है। इसके अलावा बडिंग तकनीक को और आगे ले जाने के लिए भी सरकार और अधिकारियों के साथ व सहयोग की आवश्यकता है।

जिले के 21 ब्लॉकों और 689 ग्राम पंचायत में शिक्षकों ने घर और विद्यालय में किया पौधरोपण

पारिवारिक वानिकी दिवस पर हजारों शिक्षकों ने पेड़-पौधों को बनाया परिवार का हरित सदस्य

भास्कर संवाददाता | बाड़मेर

पारिवारिक वानिकी दिवस पर बुधवार को अनूठी पहल करते हुए राजस्थान शिक्षक संघ प्रगतिशील से जुड़े हजारों शिक्षकों, उनके परिवार के सदस्यों ने पेड़ पौधों को परिवार का हरित सदस्य बनाया।

संघ के प्रदेशाध्यक्ष बनाराम चौधरी ने कहा कि पारिवारिक वानिकी दिवस के अवसर पर शिक्षकों और उनके परिवार के सदस्यों ने पेड़ पौधों को अपने परिवार में हरित सदस्य के रूप में शामिल किया। पहले से लगाए हुए पेड़ों में खाद, पानी देकर देखभाल की। जिले के 21 ब्लॉकों और 689 ग्राम पंचायतों में ब्लॉक संयोजकों के नेतृत्व में सभी शिक्षकों ने अपने कार्य स्थल विद्यालयों और घर पर छायादार, फूलदार, फलदार और औषधीय पौधरोपण कर उन्हें हरित सदस्य मानते हुए देखभाल की शपथ ली। पारिवारिक वानिकी घर-घर सहजन अभियान के जिला संयोजक भैराराम भाखर ने बताया कि 4 अगस्त को पारिवारिक वानिकी दिवस पर थीम हमारा हरित सदस्य के रूप में पेड़ पौधों से आमजन को जोड़ने और जागरूकता के लिए मुहिम चलाई है। भाखर ने कहा कि बाढ़, सूखा, बेमौसम बारिश और मौसम के दौरान न बरसना अथवा बहुत कम या अधिक बारिश, ओला वृष्टि, चक्रवात, टिड्डी के प्रकोप से लेकर डेंगू, चिकनगुनिया और कोरोना वायरस जैसी वैश्विक महामारी का प्रकोप पर्यावरण के खराबे की देन है, जिसे जलवायु परिवर्तन के नाम से पुकारा जाता है। बढ़ते प्रदूषण से धरती बड़ी तेजी से गर्माती जा रही है, जिसका समाधान है। अधिकाधिक पेड़ों को पनपाना और प्राकृतिक संसाधनों की बर्बादी करने की जगह उनकी परवाह करने की सोच व जीवन शैली का विकास करना है। पेड़ को परिवार में हरित सदस्य के रूप में शामिल करने की अपील हमारे परिवार की चेतना को पर्यावरण से जोड़ने की एक प्रक्रिया है जो हमारे व हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित पर्यावरण का निर्माण करने के लिए बेहद जरूरी है।

इस दौरान जिलाध्यक्ष देरावरसिंह चौधरी, चुतराराम सियाग, गोरधनराम प्रजापत, जोगाराम सारण, गीता माली, हरीसिंह राठौड़, वसायाखान, चिमाराम घाट, मनोहर जाखड़, मुकेशसिंह, देवीसिंह आसू सहित ब्लॉक संयोजकों, ग्राम पंचायत प्रभारी शिक्षकों ने पारिवारिक वानिकी दिवस का आमजन तक संदेश पहुंचाया। प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने के लिए अधिकाधिक पौधे लगाकर परिवार का हरित सदस्य बनाने का आह्वान किया।

बाड़मेर. पारिवारिक वानिकी दिवस पर पौधरोपण करते हुए शिक्षक।

पंचायत परिसर में किया पौधरोपण

रामसर | ग्राम पंचायत खारिया राठौड़ान के पंचायत परिसर में बुधवार को सरपंच प्रतिनिधि नूर मोहम्मद समेजा के नेतृत्व में अलग अलग किस्म के 21 पौधे रोपे गए। पौधों की सुरक्षा के लिए जाली भी लगाई गई। इस अवसर पर सरपंच ने बताया कि पेड़ पौधों की कमी से निरंतर पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा है। पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए पौधरोपण जरूरी है। हम सभी का फर्ज बनता है कि पर्यावरण संरक्षण में सहयोग करें। इस अवसर पर सहायक अभियंता जगदीश, बीडीओ दिलीप सिंह, इंद्रराज मीणा, उप सरपंच प्रतिनिधि जुसब नोहड़ी, प्रधानाचार्य हनुमान देव सहित कई ग्रामवासी उपस्थित रहे।

धन्वंतरी वाटिका छोटू में मनाया वानिकी दिवस

आडेल | पारिवारिक वानिकी दिवस के अवसर पर हरित निरोग राजस्थान अभियान और पौधरोपण के तहत राजस्थान शिक्षक संघ प्रगतिशील द्वारा चलाई जा रही मुहिम के तहत पंचायत समिति आडेल की ग्राम पंचायत अर्जुन की ढाणी और छोटू के संयुक्त रूप से सहजन बीज वितरण कार्यक्रम का आयोजन राउमावि छोटू की शिक्षकों की मेहनत से सृजित धन्वंतरी वाटिका में किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए आडेल ब्लॉक सहजन संयोजक चिमाराम घाट ने बीजारोपण विधि एवं पौधे की औषधीय गुणों के बारे में बताया। इस दौरान मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य छोटू धर्मवीर रोज ने बताया कि सूखा, बेमौसम बरसात, ओलावृष्टि प्रकोप से लेकर डेंगू चिकनगुनिया और कोरोना वायरस जैसी महामारी का प्रकोप पर्यावरण के खराबे की देन है। बढ़ते प्रदूषण का समाधान अधिकाधिक पेड़ों को पनपाना ही है। इस अवसर पर प्रदेशाध्यक्ष बनाराम चौधरी की प्रेरणा को आत्मसात करते हुए पेड़ों को परिवार का हरित सदस्य के रूप में दुर्गाराम जाखड़, भुवनेश बेनीवाल, दीपाराम नेहरा, हनुमानराम कड़वासरा, पेमाराम नेहरा, नवल किशोर, ठाकराराम कड़वासरा, रामराज, भागीरथ विश्नोई, दुर्गादास, भानाराम लेगा, रामनिवास, मंगली देवी, अशोक शर्मा, बलवंत गौड़, चुतराराम विश्नोई व कैलाश बोस ने शामिल होने का संकल्प लिया।

आडेल. पौधरोपण कार्यक्रम के दौरान उपस्थित शिक्षक।

रासारा तला स्कूल में पौधरोपण

शिव | ग्राम पंचायत मुंगेरिया में स्थित राउप्रावि रासारा तला में मंगलवार को पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आगाज करते हुए उपखण्ड अधिकारी शिव महावीर सिंह जोधा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारकाप्रसाद शर्मा एवं अतिरिक्त विकास अधिकारी माधो सिंह ने पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उपखण्ड अधिकारी महावीर सिंह ने अपने सम्बोधन में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं व बालिका शिक्षा के बारे में विस्तार से जानकारी दी। वहीं मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी द्वारकाप्रसाद शर्मा ने पौधरोपण एवं विद्यालय के भौतिक विकास के लिए प्रेरित किया। प्रधानाध्यापक द्वारकासिंह राजपुरोहित ने सभी का आभार प्रकट किया।

हमारी खेजड़ी, हमारी धरोहर...पारिवारिक वानिकी को मिलेगा संरक्षण

100 गांवों के किसानों को 20 हजार खेजड़ी के पौधों का करेंगे वितरण

पत्रिका सोशल प्राइड

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

श्रीगंगानगर. पर्यावरण वानकी का संरक्षण कर बढ़ावा देने के लिए हमारी खेजड़ी, हमारी धरोहर अभियान के तहत रायसिंहनगर तहसील के गांव 12 टीके के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर में स्थापित नर्सरी में बुधवार शाम पांच बजे पारिवारिक वानिकी खेजड़ी मेले का आयोजन किया जाएगा। इस मेले का वर्चुअल उद्घाटन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व संयुक्तराष्ट्र संघ की उप कार्यकारी सचिव टीना बह्मलील करेंगी। इस वर्चुअल उद्घाटन सत्र में तेलंगाना के मुख्य प्रधान वन संरक्षक मोहनचन्द्र परजाई, संयुक्त राष्ट्र के लैंड फार लाइफ कार्यक्रम के समन्वयक शेरा बेन्डा, कनाडा के पर्यावरण कार्यकर्ता सुमीत हेयर अतिथि के रूप में शामिल होंगे।

रायसिंहनगर. गांव 12 टीके के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर में स्थापित नर्सरी में खेजड़ी के पौधे।

इनकी भी यह अहम भूमिका

पारिवारिक वानिकी के रायसिंहनगर के संयोजक पन्नालाल मेघवाल भी इस मुहिम में जुटे हुए हैं। यहां पर इनकी देखरेख में ही यह पौधशाला में 35 हजार खेजड़ी के पौधे तैयार किए गए हैं। इसके अलावा यह एक नर्सरी ओर भी स्थापित कर रखी है और वहां पर निःशुल्क पौधों का वितरण कर पारिवारिक वानिकी को बढ़ावा दे रहे हैं।

इस विशाल खेजड़ी मेले में हनुमानगढ़ व श्रीगंगानगर जिले के 100 से अधिक गांवों के किसानों को 20,000 खेजड़ी के पौधे रोपण के लिए वितरित किए जाएंगे। खेजड़ी मेले के आयोजक लैंड फार लाइफ अवार्ड के विजेता पारिवारिक वानिकी अवधारणा के जनक एसोसिएट प्रो. श्याम सुंदर ज्याणी ने बताया कि सबसे अधिक पानी से सिंचित श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ जिले में खेजड़ी की प्रजाति लुप्त होती जा रही है। खेतों की पैदावार रासायनिक खाद पर निर्भर हो चुकी है। जलवायु परिवर्तन की इस विकट स्थिति में खेजड़ी किसान के लिए एक वरदान साबित होती। इसलिए 2030 तक एक करोड़ खेजड़ी के वितरण एवं रोपण की विस्तृत कार्ययोजना की शुरुआत में 35,000 खेजड़ी के पौधे खेतों में रोपण के लिए दिए जाएंगे।

संयुक्त राष्ट्र द्वारा लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड से सम्मानित पर्यावरणविद् और प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी के प्रयास हुए सफल

शादी में मोटे अनाजों के भोजन को बढावा, किसानों की कमाई में होगा इजाफा

बीकानेर। बीकानेर जिले के लूणकरणसर में एक अनोखी शादी के लोग गवाह बने हैं। इसमें घराती-बरातियों को मिलेट्स से बना खाना परोसा गया। साथ ही विवाह में मिलेट्स से बनी राबड़ी नहीं बनाने और खिलाने की सदियों पुरानी परंपरा को भी बदल दिया गया। दरअसल, लूणकरणसर में 11 मई को यहां एक शिक्षक भैराराम गोदारा की बेटी की शादी में मिलेट से बना खाना बराती और घरातियों को परोसा गया। इसकी चर्चा सोशल मीडिया पर काफी हो रही है। इस पहल के जरिए दूल्हा-दुल्हन ने मिलेट्स से बना खाना खाया। वहीं, विदाई के समय समधी व बरातियों ने बाजरा व मोठ से बनने वाला खाना खाया। सभी बारातियों व वधू पक्ष के रिश्तेदारों ने एक जाजम पर बैठकर सामूहिक रूप से खाया। इतना ही नहीं सुबह के भोजन में भी मोटे अनाज को शामिल किया गया।

प्लास्टिक को ना, सभी मेहमानों को दिए फलदार पौधे : शिक्षक भैराराम गोदारा ने बताया कि इस शादी में उन्होंने किसी भी तरह का प्लास्टिक या डिस्पोजेबल चीजों का उपयोग नहीं किया है। पारिवारिक वानिकी हरित विवाह के विचार को अपनाया गया है। सभी बरातियों व रिश्तेदारों को फलदार पौधे भेंट किए गए। साथ ही पौधों को हरित सदस्य के रूप में अपने परिवार का हिस्सा बनाने का आग्रह किया। दुल्हन अभिलाषा व दूल्हे संजय ने देसज फलदार पौधे को रोपा भी और हर साल एक पौधे को पेड़ बनाने का संकल्प लिया। पर्यावरणविद् प्रोफेसर ने शुरू की यह पहल

शादी-ब्याह और अपने तीज-त्योहारों में देसज खाने और परंपराओं को फिर से स्थापित करने की यह पहल पर्यावरणविद् और प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी ने शुरू की है। ज्याणी संयुक्त राष्ट्र द्वारा लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड से सम्मानित हैं।

जानकारी के अनुसार ज्याणी कई सालों से पारिवारिक वानिकी के विचार को आगे बढ़ाने के लिए उसे रीति-रिवाज का हिस्सा बनाने में लगे हुए हैं ज्याणी की ओर से अभी तक 15000 से अधिक गांवों के दस लाख से ज्यादा परिवारों को जोड़ते हुए 25 लाख पौधारोपण करवाया जा चुका है।

इसके तहत तीज-त्योहार और विवाह की रस्मों में पौधारोपण व पर्यावरण हितैषी व्यवहार को जोड़ा जाता है। उन्होंने इस बार एक और कदम आगे बढ़ाया है। इसमें अपने मित्र भैराराम गोदारा की बेटी की शादी में मोटे अनाज को शादी के खाने में जोडने् का विचार दिया. परिवार भी इस बात के लिए राजी हो गया और फिर जो हुआ वो बीकानेर क्षेत्र में अपने आप में इतिहास बना है ज्याणी बताते हैं कि पिछले कुछ दशकों में हमारे समाज में पारंपरिक, पौष्टिक खाने से दूरी बनी है।

दैनिक भास्कर
बाड़मेर भास्कर 05-08-2023

अंतरराष्ट्रीय पारिवारिक वानिकी दिवस पर जिले में लगाए 11 हजार पौधे, संरक्षण की शपथ दिलाई

भास्कर संवाददाता | बाड़मेर

अंतर्राष्ट्रीय पारिवारिक वानिकी दिवस पर तीन सौ पेड़ एक जिंदगी अभियान के तहत शुक्रवार को बाड़मेर जिले में आमजन, राजस्थान शिक्षक संघ प्रगतिशील से जुड़े हजारों शिक्षकों, विद्यार्थियों, जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, स्काउट्स, एनएसएस ने एक ही दिन में 11 हजार से अधिक पौधे रोपित कर संरक्षण का संकल्प लिया। विद्यालयों में प्रार्थना सभा में पर्यावरण संरक्षण की शपथ दिलाई गई। साथ ही पर्यावरण चेतना यात्रा रैली का आयोजन किया गया।

शिक्षक संघ प्रगतिशील के प्रदेशाध्यक्ष बनाराम चौधरी ने कहा कि पर्यावरण संरक्षणवाद के लिए हमें हमारे परिवार के सभी सदस्यों को पेड़ों से पारिवारिक बंधन स्थापित करना जरूरी है। प्रदेश भर में 25 हजार पौधे लगाकर और 2 लाख पौधे वितरण कर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में संगठन का महत्वपूर्ण नवाचार हैं।

अभियान संयोजक भेराराम भाखर ने बताया कि पर्यावरण चेतना यात्रा के तहत जिलेभर में 21 ब्लॉकों में एक साथ जन आंदोलन के रूप में पौधरोपण कर हरित क्रांति का आगाज किया गया। पौधों के संरक्षण और संवर्धन के लिए हरित बंधन स्थापित कर पेड़ मित्र बनाए गए।

इस दौरान देरावरसिंह चौधरी, जिलाध्यक्ष चुतराराम सियाग, हुकमाराम मेघवाल, खेताराम, वसायाखान, मनोहरलाल, श्रवण, चिमाराम घाट, संतोष कुमार गोदारा, गीता माली, रमेश मिर्धा, जेती चौधरी, हसनखान, हेमी चौधरी, मुकेशसिंह, नरपत, गोरधनराम प्रजापत, गौतम, मुकेश कुमार सहित सभी ब्लॉकों के संयोजक, ग्राम पंचायत प्रभारियों ने वानिकी मुहिम का संदेश आमजन तक पहुंचाया।

भेराराम भाखर ने 1000 पौधे, रामसर में उम्मेदाराम सियाग ने 200 पौधे, हाथमा सरपंच बाबसिंह सोढ़ा ने 500 पौधे, इन्द्रोई सरपंच ने 500 पौधे, चाडी में बांकाराम सारण, धोरीमन्ना में जगदीश प्रसाद विश्नोई, समदड़ी में ठाकरराम पटेल, नरसाराम चौधरी ने विद्यालयों में 50-50 पौधे वितरण करवाए गए।

आचार्य का आयुर्वेद की पुनर्स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान: तिवाड़ी

बाड़मेर | पथमेड़ा गो चिकित्सालय में शुक्रवार को आचार्य बालकृष्ण का जन्मदिन जड़ी बूटी दिवस के रूप में मनाया गया। इस दौरान दुर्घटनाग्रस्त गोवंश को पौष्टिक आहार खिलाकर एवं नीम, पीपल, बड़, गिलोय, तुलसी, हारसिंगार आदि के औषधीय पौधे रोपित किए।

योग सेवक दिलीप कुमार तिवाड़ी ने बताया कि आयुर्वेद की पुनर्स्थापना में आचार्य बालकृष्ण का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है। आचार्य बालकृष्ण सर्व समावेशी व्यक्तित्व के धनी है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद योग के क्षेत्र में नए अनुसंधान को बढ़ावा देने और स्वास्थ्य सेवाओं में योगदान देने के लिए 2019 में आचार्य बालकृष्ण को यूएन ने सम्मानित किया था।

औषधीय पौधे लगाते हुए।

पतंजलि योग पीठ के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण के नेतृत्व में वर्ल्ड हर्बल एनसाइक्लोपीडिया का निर्माण किया गया हैं जिसमें 50 हजार से ज्यादा मेडिशनल प्लांट का सचित्र वर्णन हैं। जिसके 111 वॉल्यूम प्रकाशित हो चुके हैं। दो हजार से ज्यादा विश्व की अलग-अलग भाषाओं में इनका प्रकाशन होना हैं। आचार्य बालकृष्ण की लगभग 200 पुस्तकें, 300 से ज्यादा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान के पेपर प्रकाशित हो चुकी हैं।

इस मौके पर कंवर राज सिंह, सोहन सिंह, जितेंद्र सिंह, नरेंद्र चौहान, महादेव विश्नोई, जीवन सिंह भाटी, कानसिंह चौहान, मोटाराम चौधरी और द्रविंद्र चौधरी ने सहयोग दिया।

धोरीमन्ना | उपखंड के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पाबूबेरा में अध्ययनरत छात्रा संतोष गोदारा ने जन्मदिन पर विद्यालय परिसर में पौधरोपण किया। पुरस्कृत शिक्षक फोरम के जिला उपाध्यक्ष व स्टेट अवार्डी शिक्षक जगदीश प्रसाद विश्नोई ने बताया कि इस मौके पर व्याख्याता हनुमानराम बिश्नोई, संस्था प्रधान अचलाराम सेवदा, मोहनलाल, ओमप्रकाश तेतरवाल, कमला चौधरी, धुड़ाराम माचरा, मेघाराम, देव कुमार मीणा मौजूद रहे।

रामजी का गोल | पौधो की हमारे जीवन में बहुत ही महत्ता हैं, पौधे हमारे जीवन का आधार है। यह बात शुक्रवार को रामजी का गोल में पौधरोपण कार्यक्रम के दौरान अध्यापक प्रेम सिंह बैरड़ ने कही। सरपंच प्रतिनिधि मूलाराम सियाग ने कहा कि पर्यावरण को संतुलित रखने में पौधो की महत्वपूर्ण भागीदारी रहती हैं। युवा नेता मोहनलाल बैरड़ ने कहा कि पेड़-पौधे धरती का श्रृंगार हैं इनका सरंक्षण करना हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है। इस मौके पर सरपंच प्रतिनिधि मूलाराम सियाग, जसराज गोदारा, रिड़मल राम वांभू, भेराराम , रामअवतार, अवतार सिंह, प्रकाश कड़वासरा उपस्थित रहे।

United Nations

CERTIFICATE OF RECOGNITION

The United Nations Convention to Combat Desertification
is proud to award

Familial Forestry, Shyam Sunder Jyani

the **2021 Land for Life Award**
under the theme Healthy Land, Healthy Lives.

SECRETARIAT OF THE CONVENTION TO COMBAT DESERTIFICATION
UNCCD

Ibrahim T... w
Executive Se...

दैनिक भास्कर हिमाचल 07-09-2020

राजस्थान के शिक्षक की पहल; घर-घर सहजन पहुंचाने के लिए अपने विद्यार्थियों व साथियों की ली मदद, मकसद- बच्चों में खत्म हो कुपोषण

पोषक तत्वों से भरपूर सहजन बढ़ाता है इम्युनिटी, शिक्षक ने कोरोना काल में 27 जिलों में लगवाए 13 लाख पौधे, श्रीगंगानगर में 2 लाख

संदीपसिंह धामू | श्रीगंगानगर

राजस्थान के रायसिंहनगर तहसील के गांव 18 टीके निवासी एसोसिएट प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी शिक्षा का उजियारा फैलाने के साथ पर्यावरण संरक्षण और विद्यार्थियों में कुपोषण दूर करने के लिए अनूठी मुहिम चला रहे हैं। गवर्नमेंट डूंगर कॉलेज बीकानेर के समाजशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी ने सही मायनों में महामारी के दौरान आपदा को अवसर में बदला। लॉकडाउन के दौरान राज्य में 27 जिलों में सहजन के 12.98 लाख पौधे तैयार करवाए। इसमें श्रीगंगानगर व हनुमानगढ़ जिले में 3.70 लाख पौधे तैयार करवाए और उनका रोपण करवाया। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित श्याम सुंदर ज्याणी ने श्रीगंगानगर जिले में पर्यावरण संरक्षण में मददगार और प्रचुर पोषक तत्वों के स्रोत औषधीय महत्व के सहजन के 2.05 लाख और हनुमानगढ़ जिले में 1.65 लाख पौधों का रोपण करवाया। इसमें होने वाला 9 लाख रुपए खर्च ज्याणी अपने वेतन कर चुके हैं। ये विशेष किस्म की सहजन के पौधे 6 से 8 महीनों फूल देने लगते हैं। इन पर सालभर फलियां लगती हैं।

प्रोफेसर ज्याणी ने घर घर तक सहजन पहुंचाने के लिए अपने पूर्व और वर्तमान विद्यार्थियों, राजस्थान शिक्षक संघ शेखावत, विभिन्न स्कूलों के शिक्षकों, युवाओं व ग्राम पंचायत स्तर पर ग्रामीणों का सहारा लिया। उन्हें सहजन के बीज दिए। इनके पौधे तैयार करवा कर अप्रैल में पृथ्वी दिवस पर सहजन का पौधरोपण अभियान शुरू करना था।

जानिए सहजन की खूबियां...पालक से 24 गुना अधिक आयरन, संतरे से 7 गुना ज्यादा विटामिन-सी, इसके पत्तों का पाउडर कैंसर और हार्ट रोगियों के लिए भी बेहतरीन दवा

1. कृषि विज्ञान केंद्र आबूसर के अध्यक्ष और वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ दयानंद का कहना है कि सहजन औषधीय महत्व का पौधा है। इसका निरंतर सेवन करने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। जो कोरोना जैसी महामारी से लड़ने में फायदेमंद साबित हो सकता है।

2. एक अध्ययन के अनुसार इसकी पत्तियों में संतरे से 7 गुना अधिक विटामिन, दूध से 3 गुना अधिक कैल्शियम, अंडे से 36 गुना अधिक मैग्नीशियम है। वहीं,पालक से 24 गुना अधिक आयरन, केले से 3 गुना अधिक पोटेशियम मिलता है। इसका प्रयोग सब्जी और अचार बनाने में होता है।

3. सहजन के पत्तों का पाउडर कैंसर और दिल के रोगियों के लिए एक बेहतरीन दवा है। यह ब्लड प्रेशर कंट्रोल करता है। इसका प्रयोग पेट में अल्सर के इलाज के लिए किया जा सकता है। सहजन (मोरिंगा) के पत्ते के पाउडर का नियमित रूप से खाने से एनीमिया दूर होता है।

सोशल मीडिया पर बनाई 'पर्यावरण पाठशाला', इस पर 55 हजार हैं फॉलोअर

ज्याणी वर्ष 2006 से पारिवारिक वानिकी कार्यक्रम चला रहे हैं जिसमें कस्बों व गांवों में पौधे तैयार करवा कर मुफ्त में वितरण करवाते हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्यावरण वानिकी कार्यक्रम चला रहे हैं। वर्ष 2019 में जारी विश्व भूख सूचकांक में भुखमरी में भारत 102 वीं रैंकिंग में था। आईसीएमआर की रिपोर्ट में भी देश के 4 राज्यों राजस्थान, बिहार, उत्तर प्रदेश और आसाम में सबसे ज्यादा भुखमरी होने से छोटे बच्चों व विद्यार्थियों में कुपोषण ज्यादा है। तब प्रोफेसर ज्याणी ने पारिवारिक वानिकी कार्यक्रम के तहत 'घर-घर सहजन निरोग हरित राजस्थान' अभियान शुरू किया। दिसंबर 2019 में इसकी रूपरेखा बनाते हुए गुजरात, तमिलनाडु और छत्तीसगढ़ से सहज की हाइब्रिड वैरायटी के 20 लाख बीज मंगवाए। इनसे पौधे तैयार करवाए। पौधरोपण के प्रति जागरूक करने के श्यामसुंदर ज्याणी ने सोशल मीडिया पर पर्यावरण पाठशाला पेज बनाया है। इसमें पौधे तैयार करने और इन्हें रोपने के बाद सारसंभाल की जानकारी शेयर की जाती है। इसके 55 हजार फॉलोअर हैं।

ट हाउस के सामने मोनिकपुर, सरहिंद जिला फतेहगढ़ साहिब (पंजाब) से मुद्रित एवं मालरोड़ी हाउस, DPRO ऑफिस छोटा शिमला के नजदीक, शिमला (हिमाचल प्रदेश) से प्रकाशित। संपादक (हिमाचल) दीपक धीमान*, RNI No. HPHIN/2008/25611, फोन नं. 0177-3988884, फैक्स नं. 2651150, *समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।

FAMILIAL FORESTRY

Sociology professor sparks 'green' revolution in state, spreads message on environment conservation

Aparnesh Goswami
htraj@htlive.com

BIKANER: Amid concerns of climate change and low agricultural productivity, a new forestry model called "familial forestry", a concept conceived and developed by a local sociology teacher, is gaining currency among village communities in western Rajasthan.

Professor Shyam Sunder Jyani, a teacher at the Government Dungar College in Bikaner, has come up with the concept of familial forestry or domesticating trees by families for conserving the environment.

Jyani has sparked a mass movement in western Rajasthan through the concept.

Under the concept, Jyani encourages villagers to plant fruit trees in their house and care for these plants as family members.

Launched in 2006 from a desert village in Bikaner's Himtasar, today, the concept has been replicated by more than 200,000 families with more than 750,000 trees planted in more than 2,600 desert villages of north-west Rajasthan.

Jyani has developed a forest on four hectare of land within the college campus, where more than 100 varieties of trees and plants have been planted and also launched an Android-based mobile app-- My Forest and Green Leaders—to help people to connect with the concept and become aware about the environment.

"There is more than 819 gigatonne of atmospheric carbon dioxide and to develop climate change resilience, we have to bring down the carbon dioxide content in the atmosphere," said Jyani.

"The present method and practice of teaching environment, especially as an academic subject or theoretical concept, doesn't make any sense and it needs deeper involvement of students," he said.

"Familial forestry is an idea that is based on head, hand and heart and involvement of families, especially students, in learning about environment. Familial forestry is a way through which we can engage every household in growing forests."

The "Mission Hariyali" team, which is running the plantation drive in Bihar's Nalnda, too has adopted the concept and the team has involved more than 40,000 families in its plantation drive, Jyani said.

Jyani has also developed in-situ budding of desert ber or Zyzyphus nummularia bush that grows about two meters high and spreads out, forming a thicket in the desert soil.

This is the source of the smaller variety of fruit called Ber. He developed a technique in which epidermal tissue is added to a new rootstock to increase fruit yield.

The fruit yield of these trees has increased manifold without water except rain, said Jyani, who is also working to revive the Khejari, the state tree of Rajasthan.

The grafted trees can bring revolutionary changes in the bio-diversity of the deserts in western Rajasthan, he said, adding that it will also help villagers in fighting malnutrition as the fruit is very nutritious.

The tree after budding grows thicker and higher compared to the natural bushes that become a valuable source for fodder and fuel.

Jyani, who carrying out the work with limited resources apart from his salary, said there is a need of setting up a centre for familial forestry with adequate resources and an eco task force-- on the lines of the Territorial Army--can change the ecology of the Thar Desert.

▪ Professor Shyam Sunder Jyani, a teacher at the Government Dungar College in Bikaner, shows one of his trees. HT PHOTO

> Familial forestry is an idea that is based on head, hand and heart and involvement of families, especially students, in learning about environment.
> SHYAM SUNDER JYANI, Sociology professor

ENVIRONMENT FRIENDLY

Couple tie a green knot in Bikaner

Aparnesh Goswami
htraj@htlive.com

BIKANER: Marriage vows went hand in hand with green pledges when a couple tied the knot at Ramnagar village in Rajasthan's Bikaner district on Sunday night.

After taking seven traditional marriage vows, groom Vijaypal Beniwal and bride Sumitra Bhambhu pledged to plant a sapling every year and take care of the plants like family members.

The green pledge at the wedding was inspired by professor Shyam Sunder Jyani of Government Dungar College in Bikaner, who formulated the concept of 'familial forestry' to promote plantations.

"I just went to invite him (Jyani) for my marriage. During discussions, he told me about this unique way of getting married and supporting a noble cause. I shared the idea with my fiancee and she happily agreed," said Beniwal, a former students' union president at Government Dunger College. "We will always remember and follow the oath we took."

The couple plant a sapling during their wedding in Bikaner. HT PHOTO

Jyani, who formulated the 'familial forestry' concept in 2006, urges villagers to plant fruit trees within their compounds and treat them as their own family members. "This way, the villagers not only contribute towards the betterment of biodiversity, but they also make use of the fruits in their diet," the green crusader said.

Guests at the wedding were given fruit tree saplings to take forward the message of protecting biodiversity. The couple also planted a sapling at the entrance of the village as part of 'kankar' (village boundary) pooja, a wedding ritual.

Eco-friendly utensils were used for the wedding feast, and no crackers were burst for celebrations. The groom's family planted saplings at a public place at the bride's village; Beniwal's father planted a 'khejari' (date) sapling at the bride's home.

Bride's father Mohanram Bhambhu said, "If such values are propagated through festivals and rituals, the younger generation will grow up to be more conscious towards the environment and strive for its conservation." A total of 2100 saplings were planted during the marriage ceremony.

One man's quest to save the earth

Laxman Raghav
correspondent@dnaindia.net

As the world debates the issues related to climate change, there are some for whom the environment is a personal concern. That too in the dry, hot deserts of Western Rajasthan where the might and fury of nature are witnessed in dust storms and rampant drought. In the midst of these extreme climes and scanty vegetation one man dreamt of trees in every village and then spent close to a lifetime in trying to make his dreams a reality by traveling from village to village and encouraging lakhs of households to nurture these trees. In the very heart of the Thar desert this Sociology HOD from Bikaner's Dungar College conceptualised the theme of Familial Forestry in 2006 which has at its central theme linking each family to the care of one tree.

What started in 2006 with one village has become a life mission for Shyam Sunder Jyani. This mission has reached across 2,500 villages in Bikaner Division and connects 1.5 lakh families through a process of environmental education and the care of over 6 lakh trees planted by these very families.

WORLD ENVIRONMENT DAY

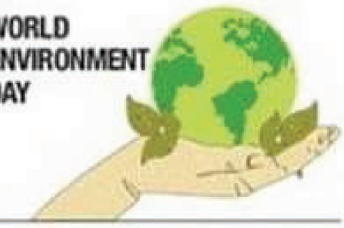

In 2016, this family oriented model of environmental conservation reached Bihar where 30,000 trees were planted in Nalanda. Families across villages are encouraged to plant trees and nurture them keeping in mind the unique bio-diversity of this area. This has a positive impact on the entire environment, ecology and the economy of the village. Along with this mission Prof Jyani has taken it upon himself to educate school-going children in rural areas on the critical issue of climate change. The most incredible part of this huge exercise is that he does not depend on any external funding for this drive.

Jyani has been working on local species like Zyzyphus Nummularia (commonly known as ber) which is best adapted for the arid climate. The new technique involves adding epidermal tissue to root stock and leads to increase in fruit yield. Successful intervention in other local species like lasunda and khejri have shown good results. Jyani believes that propogation of these varieties will not just have a positive impact on the bio-diversity, ecology and environment but can also reduce malnutrition and increase fodder availability in the villages where they are being nurtured. The central theme of Familial Forestry is that environmental learning involves the 3H model — printing together the Head, Hand and Heart in order to plant, protect, nurture and propagate trees. In keeping with the times Jyani has even had an android app My Forest to educate people regarding trees and their care. He is a recipient of an award from the President for his commendable work for the environment.

On World Environment Day the world has been plunged into a debate on climate change and who takes the onus of it. But here, far away from the noise, one man has chosen to realise that if we do not act now and today it will be too late. The Earth needs more Shyam Sunder Jyanis to take onus for it.

Truly an inspiring personality who puts the Earth before himself!

राजस्थान : 11 सालों में प्रोफेसर ने वेतन से लगवा दिए 6 लाख पौधे

घर, स्कूल-कॉलेज, गांवों को हरा-भरा करने में जुटे प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी

अशोक कक्कर | रामसिंहपुर (श्रीगंगानगर)

राजस्थान के गर्म रेतीले और वीरान धोरों को हरियाली में बदलने के लिए बीकानेर संभाग में पर्यावरण संरक्षण की अलख जगा रहे हैं श्रीगंगानगर के प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी। 2006 में बीकानेर तहसील के गांव हिम्मतासर में एक कार्यक्रम में पौधरोपण किया, तब से पौधे लगाने की ऐसी लगन लगी कि 11 सालों में अब तक 6 लाख पौधे अपनी देखरेख में लगवा चुके हैं। 1 लाख से भी अधिक घरों, 2500 स्कूल व हजारों किसानों के खेत उनकी जिद के गवाह हैं। वर्तमान में बीकानेर के डूंगर कॉलेज में समाज शास्त्र के विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत ज्याणी राजस्थान सरकार के वन विभाग, खान विभाग, शिक्षा विभाग व भारत सरकार के केंद्रीय कृषि फार्म व केंद्रीय युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय पारिवारिक वानिकी से भी जुड़े हैं।

ज्याणी ने बताया कि शिक्षण कार्यों के साथ-साथ वे पौधे खरीदने, तैयार करने, गांवों व ढाणियों तक पहुंचाने का काम खुद ही करते हैं, इसके लिए वे अपना पूरा वेतन खर्च कर देते हैं। कभी-कभी तो अपने खर्च के लिए उन्हें घर से पैसे मंगाने पड़ते हैं। यही नहीं, पर्यावरण संरक्षण में उनका पूरा परिवार भी उनका सहयोग करता है। उन्होंने बताया कि वे और उनका परिवार पौधों को अपने घर का सदस्य मानकर उनकी पूरी देखभाल करते हैं।

वर्ष 2012 में राष्ट्रपति से हो चुके हैं सम्मानित

श्रीगंगानगर के प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी को पर्यावरण संरक्षण की मुहिम के तहत राष्ट्रपति से वर्ष 2012 में राष्ट्रीय पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। वहीं, दैनिक भास्कर ने भी ज्याणी को राज्यस्तरीय ग्रीन आइडल अवॉर्ड दिया था।

आज विश्व पर्यावरण दिवस पर राहत की खबर • लिम्का बुक रिकॉर्डधारी एसोसिएट प्रोफेसर की पहल, हर महीने 35 हजार खर्च करते हैं

डूंगर कॉलेज में 6 साल में 16 बीघा वनक्षेत्र विकसित; 'पारिवारिक वानिकी' कॉन्सेप्ट से 3 हजार गांवों के 3.50 लाख परिवार पेड़ों से जोड़े

परिमल हर्ष | बीकानेर

साल-दर-साल वन क्षेत्र घट रहा है। लेकिन, बीकानेर में नए वन क्षेत्र विकसित हो रहे हैं। बीकानेर डूंगर महाविद्यालय में 6 सालों में 4 हैक्टेयर यानी 16 बीघा वन क्षेत्र विकसित हुआ है। शहरी क्षेत्र में विकसित इस वन क्षेत्र में 90 किस्मों के 2000 पेड़ खड़े हो गए हैं। इन पेड़ों की झुरमुट में अब जंगली जानवर भी बसने लगे हैं। इसका क्रेडिट डूंगर कॉलेज में समाजशास्त्र के एसोसिएट प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी को जाता है। वन क्षेत्र विकसित करने में हर माह करीब 30 हजार रुपए जेब से खर्च कर रहे हैं। कॉलेज के बाद वह अपने कुछ स्टूडेन्ट्स को साथ लेकर पौधे रोपते हैं। उनकी देखभाल करते हैं। उनकी पत्नी भी इस काम में साथ देती हैं। इस वन क्षेत्र में एक जन पौधशाला भी है, जहां से हर साल करीब 25 हजार फलदारों पौधों का निशुल्क वितरण किया जाता है। 2006 से पारिवारिक वानिकी की अवधारणा से काम कर रहे ज्याणी ने पिछले 16 साल में अब तक 3000 गांवों के 3.50 लाख परिवारों को पौधरोपण के लिए प्रेरित किया है। उनका दावा है कि अब तक 8 लाख से अधिक पौधे लगाकर करीब 4 लाख स्टूडेन्ट्स को पारिवारिक वानिकी की जानकारी दे चुके हैं। ज्याणी और उनके स्टूडेन्ट्स अब अपने रिश्तेदारों की शादियों में हरित वचन 'हर साल एक पौधा लगाएंगे और एक दंपती को इसके लिए प्रेरित करेंगे' दिलवा रहे हैं।

वन क्षेत्र में लगाए ये पौधे जो पेड़ बन गए
पीपल, बड़, अंजीर, बेर, खेजड़ी, रोहिड़ा, अरडू, जामुन, शहजन, सागवान, नीम, इंडिया, मेलिया, बकायन, पंजाबी डेक, शीशम, नींबू, कीनू, बादाम, रुद्राक्ष, कल्पवृक्ष, मोलश्री, सीता अशोक, पेंडुला, शहतूत के 90 किस्म के पेड़।

पेड़ को परिवार से जोड़ने का मजबूत पक्ष है। परिवार के बच्चे जीवन के शुरुआती समय में ही पेड़-पौधों से जुड़ जाते हैं। पेड़ उनके स्वभाव का स्थायी भाग बन जाता है। पश्चिमी राजस्थान जैसे रेगिस्तानी व शुष्क इलाके में पौधा तभी पेड़ बन पाता है, जब उसकी व्यक्तिगत स्तर पर नियमित देखभाल की जाए। पारिवारिक वानिकी का अर्थ पौधे को परिवार से जोड़ने और उसकी व्यक्तिगत देखभाल करना है। पेड़ को सीधे परिवार से जोड़कर पर्यावरण संवेदनशीलता को बढ़ाना है। **– श्यामसुंदर ज्याणी, एसोसिएट प्रोफेसर**

इधर, सियाणा पार्क में लगाए 1600 पौधे

संसोलाव आगोर की 15 बीघा जमीन पर कपिल आश्रम और सियाणा पार्क दो वन क्षेत्र विकसित किए गए हैं। जिसमें करीब 1600 पेड़ लगे हैं। इसमें 108 पेड़ पीपल के हैं। इन पर हर माह करीब 30 हजार रुपए खर्च किए जा रहे हैं। सियाणा पार्क के मदन मोहन छंगाणी ने बताया कि यह राशि हम जनसहयोग से एकत्रित कर वन क्षेत्र विकसित कर रहे हैं।

PRESENT. COLEMAN'S CO. LTD. | ESTABLISHED 1838 | TIMESOFINDIA.COM JAIPUR | THURSDAY, DECEMBER 3, 2009 | PAGES 20 | PRICE RS. 1.90

THE TIMES OF INDIA

THE TIMES OF INDIA, JAIPUR
THURSDAY, DECEMBER 3, 2009 **4**

'Familial Forest' a boon for Bikaner, Sriganganagar

TIMES NEWS NETWORK

Bikaner: A unique forestry technique involving schoolchildren and their families is proving effective in tree plantation in Bikaner and Sriganganagar districts. Interestingly, the technique is not a brainchild of any forest official or an expert but is conceived and developed by a young college lecturer Shyam Sunder Jyani. Jyani calls his technique 'Familial Forestry' in which the saplings are planted by students inside the house boundaries and the survival and growth of the plants are monitored by their schoolteachers.

Jyani started this concept in 2006 when he was a programme officer of National Service Scheme (NSS). He had planted saplings in 120 houses of Himtasar village located about 15 km from the district headquarters of Bikaner. The village households were divided into two part; 60 households were told about the benefits of trees and were included in the 'after plantation care' of village teachers.

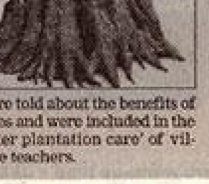

Jyani said survival rate of saplings in the inspired families were an astonishing 90% while the other 60 households had only 20-30%. Jyani and his NSS volunteers also planted trees in campuses of scout-guide training center in Sagar village and department of science and technology, Bikaner, with high success ratio. In 2007, a mass plantation drive was taken up in Gajsukhdesar village about 100 kms from Bikaner. A team of 1,500 volunteers, schoolchildren and villagers planted 1,05,000 saplings in and around the village. Later, Jyani found that only those saplings survived which were inside the houses of villagers.

This year Jyani took up his passion to a higher level and visited scores of villages of Ganganagar district for his plantation drive. The Harit Rajasthan campaign gave reasons for the district administration of Ganganagar to associate with Jyani's concept.

दैनिक भास्कर बीकानेर 21-09-2020

दैनिक भास्कर

बीकानेर फ्रंट पेज

सूर्यास्त (सोमवार) 06:35 बजे | सूर्योदय (मंगलवार) 06:24 बजे

दैनिक भास्कर सोमवार, 21 सितंबर, 2020

मंडे पॉजिटिव • डूंगर कालेज के शिक्षक का जुनून, बीछवाल में 10 बीघा खेत पर महिला कृषक ने लगाए 2 हजार पौधे, अब पेड़ बन गए

भारत को भूख मुक्त करने की जिद...इम्युनिटी बढ़ाता है सहजन, कोरोनकाल में राजस्थान सहित 7 राज्यों में लगवा दिए 13.75 लाख पौधे, बीकानेर में 4.65 लाख

नवीन शर्मा | बीकानेर

विश्व भूख सूचकांक में भारत का नम्बर 117 देशों में से 102 नम्बर पर है। आईसीएमआर और नीति आयोग ने भी भारत में कुपोषण की स्थिति को उजागर किया है। इन रिपोर्ट्स को देखने के बाद एक शिक्षक ने भारत को भूख मुक्त करने की मुहिम छेड़ी है। कोरोना काल में सोशल मीडिया का फायदा उठाया। राजस्थान सहित देश के सात राज्यों में मात्र चार महीने में पौने 14 लाख सहजन के पौधे तैयार कर दिए। इनमें बीकानेर के 4 लाख 65 हजार पौधे शामिल हैं।

श्याम सुंदर ज्याणी

राजकीय डूंगर महाविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी ने कोरोना को देखते हुए मई में घर-घर सहजन, भूख मुक्त भारत के लिए एक सामाजिक पहल नाम से मुहिम शुरू की। चूंकि सहजन एक ऐसा पेड़ है जिसकी फलियां और पत्ते इम्युनिटी को बढ़ाते हैं। डॉक्टर्स भी आजकल मोरिंगा के कैप्सूल लिखने लगे हैं। इसलिए उन्होंने सहजन को परिवार से जोड़ने का संकल्प लिया। सोशल मीडिया के जरिये पर्यावरण की पाठशाला से जुड़े फॉलोअर्स को सहजन के फायदे और खेती की जानकारी वीडियो के माध्यम से पोस्ट की। प्रदेशभर में सहजन लोगों तक पहुंचाने के लिए शिक्षक संघ शेखावत की मदद ली। करीब ज्याणी सहजन के 17 लाख 70 हजार बीज राजस्थान के 29 जिलों के अलावा उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, पंजाब और दिल्ली निःशुल्क भेजे। इन बीजों से पौने 14 लाख पौधे तैयार होने की रिपोर्ट आई है। मदुरई यूनिवर्सिटी ने सहजन के हाई ब्रीड बीज तैयार किये हैं, जो छह माह में ही फसल देते हैं। बीकानेर संभाग सहित कई जिलों में बीज के किट आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को भी बांटे जा रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि ज्याणी ने 15 साल पहले पर्यावरण के क्षेत्र में पारिवारिक वानिकी की अवधारणा विकसित की थी। इसके तहत प्रदेश में अब तक 24 लाख पौधारोपण करवा चुके हैं।

महिला कृषक ने 10 बीघा में लगाए 2 हजार पौधे

महिला कृषक नेहा तंवर।

बीछवाल स्थित काउबेल डेयरी फार्म पर एक महिला कृषक ने हर्बल गार्डन विकसित किया है। दो साल की अथक मेहनत से नेहा तंवर ने 10 बीघा जमीन पर सहजन के 2 हजार पौधे लगाए ही नहीं उन्हें पेड़ बनाने में सफलता हासिल की है। इसके साथ ही आंवला, ग्वार पाठा, अश्वगंधा, तुलसी, कीनू भी लगाए हैं। अपने ससुर ठाकुर नरेंद्र सिंह तंवर को प्रेरणास्रोत मानने वाली नेहा ने बताया कि कोरोना में लॉकडाउन के कारण बाहर आना नहीं सकते। इसलिए परिवार सहित फार्म पर ही आ गए। सहजन और गार्डन को विकसित करने का समय भी मिल गया। इसमें फार्म पर काम करने वाली कृषक महिलाओं की भी अच्छी भूमिका रही। काउबेल फार्म के नवीन सिंह तंवर बताते हैं कि खेती के लिए केंचुए की खाद भी फार्म पर ही तैयार की जा रही है। सहजन के पत्तों को सुखाकर उनका पाउडर बनाया जा रहा है। इसके औषधीय गुण इतने हैं कि कोरोनाकाल में इसका सेवन काफी लाभदायक है।

उद्देश्य-कुपोषण खत्म हो

विश्व भूख सूचकांक के अनुसार विश्व में कम आय वर्ग के 117 देशों में भारत 102 नम्बर पर है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च(आईसीएमआर) की रिपोर्ट के अनुसार सर्वाधिक कुपोषित चार राज्यों असम, बिहार और उत्तर प्रदेश के साथ राजस्थान भी शामिल है। नीति आयोग के अनुसार भारत में 0 से 5 साल तक के 40-45% बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। उनका वजन और लंबाई एवरेज से भी कम है। ज्याणी ने बताया कि इन रिपोर्ट्स का अध्ययन करने के बाद भारत को भूख से मुक्त करने का संकल्प लिया।

सहजन में क्या : कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, विटामिन सी और डी, एमिनो एसिड, ओमेगा फैटी एसिड आदि पोषक तत्व एक पेड़ में पाए जाते हैं।

कैसे उपयोग में लें : सहजन की फलियों की सब्जी बनती है। पत्तों को सुखाकर उनका पाउडर बनाया जा सकता। विशेषज्ञ की सलाह पर उसे उपयोग में लिया जा सकता है।

• सहजन बहुत ही उपयोगी औषधि युक्त पेड़ है। गठिया में उपयोगी है। न्यूट्रिशन, कैल्शियम सहित काफी पोषक तत्व मिलते हैं। बच्चों की ग्रोथ के लिए बढ़िया है। गैस निवारक है। एक चम्मच पाउडर पानी के साथ प्रतिदिन सेवन से लाभ है।
गोविंद ओझा, आयुर्वेद चिकित्सक

• सहजन लोगों को लगाना चाहिए। पशुओं को देने से दूध की मात्रा बढ़ती है। खारे पानी में भी हो जाता है। पानी कम चाहिए। फलियों और पत्तियों का व्यापार भी किया जा सकता है। सबसे जल्दी फल देने वाला पेड़ है। यूपी सरकार ने तो हर स्कूल में सहजन के पौधे लगाने के आदेश जारी कर रखे हैं। पहले साउथ में लगाते थे। अब राजस्थान में भी इसके प्रति किसानों का रुझान बढ़ने लगा है। राजस्थान की सभी स्कूलों और धार्मिक स्थलों पर इसे लगाना अनिवार्य कर देना चाहिए।
इंद्र मोहन वर्मा, वानिकी विशेषज्ञ, स्वामी केशवानंद, विश्वविद्यालय

लिम्का बुक में दर्ज हुआ नाम

रेतीले धोरों को हरा-भरा करने वाले प्रोफेसर

जयपुर से
देवेंद्र सिंह राठौड़
की रिपोर्ट

राष्ट्रपति-मुख्यमंत्री के हाथों सम्मानित

मेले में दे रहे रूंख प्रसाद

हौसले बुलन्द हो तो फिर जिंदगी में कुछ भी मुश्किल नहीं। इसी लक्ष्य पर बीकानेर के राजकीय डूंगर महाविद्यालय के प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी भी चल रहे हैं। समाजशास्त्र के एसोसिएट प्रोफेसर ज्याणी ने करीब 15 साल पहले रेगिस्तान को हराभरा करने के मकसद से पारिवारिक वानिकी की अवधारणा विकसित की। जिसमें परिवारों को पेड़ से जोडने का कार्य शुरू किया। विद्यार्थियों के घरों में पौधे लगाने से शुरू हुआ यह सफर सामाजिक-धार्मिक रीति रिवाजों का हिस्सा बनकर पश्चिमी राजस्थान में हरित आन्दोलन का स्वरूप ले चुका है। यहीं वजह है कि बीकानेर संभाग में कई स्थानों पर लगने वाले मेलों में प्रसाद स्वरुप रूँख प्रसाद, पौधा भी वितरित होने शुरू हो गए। प्रोफेसर ज्याणी और उनके विद्यार्थी अब अपने रिश्तेदारों की शादियों में चौथा फेरा पौधे के साथ दिलवाकर आठवें वचन के रूप में हरित वचन दिलवाते हुए प्रतिवर्ष एक पौधा रोपने और एक अन्य दम्पती को इसके लिए प्रेरित करने का संकल्प दिलवा रहे हैं। ज्याणी का दावा है कि वह अब तक 4 हजार गांवों के 5 लाख परिवारों को पौधरोपण से जोड़ चुके हैं। साथ ही वे अब तक करीब 10 लाख पौधे रोपकर 4 लाख विद्यार्थियों को पारिवारिक वानिकी से जोड़ चुके हैं। पर्यावरण संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान के लिए राष्ट्रपति व मुख्यमंत्री भी उन्हें सम्मानित कर चुके हैं। इसके अलावा ज्याणी लिम्का बुक में भी 3 रेकार्ड दर्ज करा चुके हैं।

विकसित किए 150 फल वन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के 150 वें जन्मवर्ष पर प्रोफेसर ज्याणी ने गांधी जी की स्मृति में बीकानेर संभाग के 150 गांवों के सरकारी स्कूलों में गांधी संस्थागत वन विकसित करवाए। इन वनों की जियो टैगिंग भी कराई ताकि उनकी जानकारी मोबाइल ऐप पर मिलती रहे।

ज्याणी बताते हैं कि प्रदेश में रेगिस्तानी दशाओं के चलते बड़े जंगल विकसित करना लगभग नामुमकिन है, लेकिन स्कूलों व अन्य संस्थानों के एक हिस्से में संस्थागत वन विकसित किए जाएं तो प्रदेशभर में लाखों सूक्ष्म पारिस्थतिकीय तंत्र का जाल खड़ा हो सकता है।

एक दिन में रोपे एक लाख पौधे

गत वर्ष सरदारशहर में पंचायत समिति के संयोजन में प्रोफेसर ज्याणी के मार्गदर्शन में पारिवारिक वानिकी महोत्सव आयोजित किया गया। जिसमें 173 गांवों के 84 हजार परिवारों की भागीदारी से एक ही दिन में एक लाख पौधे रोपे गए। इसके अलावा ज्याणी के नेतृत्व में विभिन्न गांवों की सार्वजनिक भूमि पर भी पौधारोपण किया जाता रहा है।

एक लाख से ज्यादा पौधे नि:शुल्क बांटे

प्रोफेसर ज्याणी ने बीकानेर के डूंगर कॉलेज में 6 साल में 5 हैक्टेयर 20 बीघा भूमि पर वनक्षेत्र विकसित कर दिया। इसमें 90 किस्म के 2700 पेड़ हैं। इसकी देखरेख में प्रतिमाह खर्च होने वाले 15 हजार रुपए भी खुद ज्याणी वहन कर रहे हैं। इस वन में उन्होंने एक जनपौधशाला भी विकसित की है। जहां से अब तक एक लाख से ज्यादा पौधे नि:शुल्क बांटे जा चुके हैं।

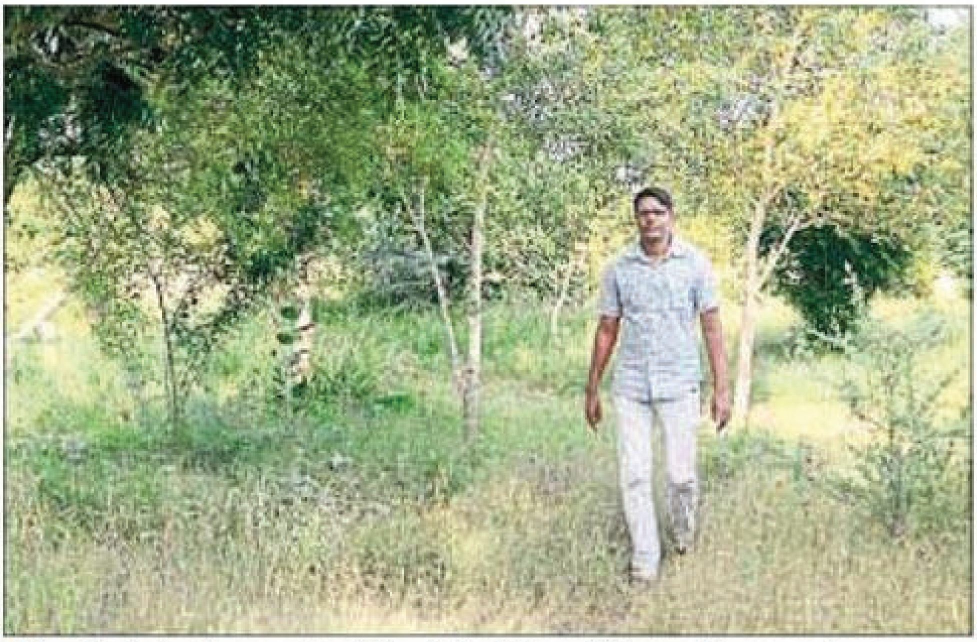

Shyam Sundar Jyani has campaigned in hundreds of villages of Bikaner and Ganganagar for over a decade which has resulted in the plantation of more than 6 lakh trees. HT PHOTO

A sociology professor on a green campaign

Salik Ahmad
salik.ahmad@hindustantimes.com

BIKANER: In some villages of Bikaner, the sarpanch does not distribute laddoos to people on Independence Day. Instead, he daughters, I spend the remainder for the cause," the 36-year-old professor who lives in a modestly furnished house, said.

The roots of the campaign goes back to when Jyani was a kid and used to water a love it the same way.

"The children in the family will have that affection for trees and we will have a generation that loves trees. Then it will be possible to develop community lands too," he explained.

हरि शंकर आचार्य
sachkahoon.com

" भारत-पाकिस्तान अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर बसे रामनगर गांव की परिस्थितियां निःसंदेह प्रतिकूल हैं। तेज गर्मी और पानी की कमी से जूझने वाले लोगों के लिए अधिक से अधिक पौधे लगाना तथा इसके लिए आमजन को प्रेरित करना आवश्यक है। ऐसे में ऐसे छोटे-छोटे प्रयास ही मील के पत्थर साबित हो सकते हैं।

पर्यावरण संरक्षण को परम्पराओं से जोड़ना है सार्थक पहल

बीकानेर की छतरगढ़ तहसील में जिला मुख्यालय से लगभग 125 किलोमीटर दूर स्थित रामनगर गांव में गत सप्ताह दो युगल दाम्पत्य सूत्र में बंधे। यह अवसर आम वैवाहिक समारोहों से अलग था। इस मौके, परम्पराओं को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ा गया। रातीजोगे में मंगल गीत गाने वाली महिलाओं को गुड़ के साथ अनार व नींबू के दो-दो पौधे बांटे गए। ननिहाल पक्ष की परम्परा का निर्वहन करते हुए दूल्हों के मामा ने 'भात' में नींबू के 300 पौधे दिए। वर पक्ष की पहल पर बारात में पटाखे नहीं फोड़े गए, बल्कि इसके स्थान पर प्रीतिभोज में आने वाले प्रत्येक अतिथि को जामुन के पौधे देकर विदाई दी गई।

वर पक्ष की ओर से वधू के सम्मान में उसके गांव के सरकारी स्कूल में 101 पौधे लगाए गए। फेरों में सात वचन के साथ आठवां 'हरित वचन' लिया गया। इसमें वर-वधू ने हर साल कम से कम एक पौधा लगाने और एक दम्पति को इसके लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया। वधू ने परम्परागत 'कांकड़ पूजा' के साथ मंदिर में रूद्राक्ष और बिल्वपत्र का पौधा लगाने के बाद गृह प्रवेश किया। कुल मिलाकर तीन दिवसीय समारोह में 21 सौ फलदार पौधे लगाए अथवा वितरित किए गए। विजयपाल और रोहिताश नाम के दो युवाओं के विवाह समारोह में इस पहल के सूत्रधार बने बीकानेर के राजकीय महाविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी।
जब दूल्हा विजयपाल, श्याम सुंदर ज्याणी को विवाह के लिए आमंत्रित करने गया तो ज्याणी ने युवाओं को

परिवर्तन का संवाहक बताते हुए विवाह समारोह में यह पहल करने की अपील की। दूल्हे ने दुल्हन को इससे अवगत करवाया और दोनों की रजामंदी के बाद इस नवाचार का खाका तैयार हो गया। बस फिर क्या था, हर एक परम्परा को पर्यावरण संरक्षण और पौधारोपण से जोड़ा गया। इसने निःसंदेह सैकड़ों लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक किया।

ज्याणी ने गत वर्ष भी नोहर के फेफाना में भी एक दम्पति को ऐसे प्रयासों के लिए प्रेरित किया था, लेकिन इस बार और भी कई नवाचार हुए। बारात में पटाखे जलाने के स्थान पर पौधे बांटना एक अभिनव पहल थी। पटाखों से पैसों की बर्बादी होती है, वहीं यह ध्वनि और वायु प्रदूषण के कारक बनते हैं।

बकौल ज्याणी निःसंदेह पटाखे तो कुछ मिनटों का शौक है, जबकि यह पौधे और इनसे उगने वाले बीज और बीजों से बनने वाले पौधे सैकड़ों वर्षों तक न सिर्फ पर्यावरण की सुरक्षा करेंगे बल्कि इस कड़ी को अनवरत जोड़े रखने से आय के साधन भी बढ़ सकेंगे। इस समारोह में एक और नवाचार हुआ 'हरित फेरा' और 'हरित महावचन'। ज्याणी चाहते हैं कि युवा इस पहल का नेतृत्व करें। वक्त की मांग के अनुरूप सदियों से चली आ रही परम्परा में सकारात्मक बदलाव करते हुए यदि देश की बहुसंख्यक आबादी के प्रतिनिधि युवा इस बदलाव का नेतृत्व करेंगे, तो बदलाव आना भी लाजमी है।

यहां ज्याणी तो बधाई के पात्र हैं कि लेकिन उनसे बड़ा साधुवाद विजयपाल और उसके परिजनों को दिया जाना चाहिए। एक ओर जहां विजयपाल ने अपने जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण संस्कार को हमेशा के लिए यादगार बना लिया, वहीं परम्पराओं में पॉजीटिव बदलाव की पहल करते हुए इनके परिजनों ने भी समाज को एक संदेश दिया और प्रकृति के संरक्षण में अपने प्रयास किए। इस पहल में वर-वधू, उनके माता-पिता, मामा और आने वाले अतिथियों की कड़ियां जुड़ती रहीं और एक सार्थक प्रयास हुआ। निःसंदेह यह प्रयास दूसरों को भी प्रेरित करेगा।

तो इस 'संडे' का 'फंडा' यह है कि पर्यावरण की सुरक्षा करने के लिए इसे परम्पराओं से जोड़ना एक सकारात्मक पहल है। समय-समय पर ऐसे प्रयास होना चाहिए, जो प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकें। इन प्रयासों की निरंतरता व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के लिए लाभदायक सिद्ध होती है, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है।

पत्रिका

पुलिस पब्लिक पंचायत में आइजी के समक्ष खुलकर बोले लोग

पारिवारिक वानिकी गतिविधियां पुलिस के लिए समाज से जुड़ने का उपयुक्त मंच: आइजी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायसिंहनगर. सीओ कार्यालय का निरीक्षण करते आइजी।

रायसिंहनगर. बीकानेर के पुलिस महानिरीक्षक ओमप्रकाश पासवान ने शुक्रवार को सीमावर्ती क्षेत्र के गांवों का दौरा कर पुलिस पब्लिक पंचायत का आयोजन कर आमजन से संवाद किया। चक 12 टी के में भगत सिंह पारिवारिक वानिकी संस्थागत वन के उद्घाटन अवसर पर पुलिस पब्लिक पंचायत व पारिवारिक वानिकी कार्यशाला हुई जिसमें जन पौधशाला से देसी पौधों के वितरण की शुरुआत व नशा मुक्ति पर संवाद किया गया। आईजी ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए कहा कि बढ़ती नशा प्रवृति व महिला अपराध पुलिस व समाज के लिए बड़ी चुनौती है जिससे निपटने के लिए पारिवारिक वानिकी की तरह ही जन आंदोलन की दरकार है । उन्होंने पारिवारिक वानिकी गतिविधियों को पुलिस के लिए समाज से जुड़ने का उपयुक्त मंच बताया। उपखंड अधिकारी सुभाष चौधरी ने पर्यावरण संरक्षण को आज की महती ज़रूरत बताया। चक 12 टी के में प्रोफ़ेसर श्यामसुंदर ज्याणी ने जन पौधशाला के सिलसिले को साझा करते हुए कहा कि रायसिंहनगर अनाज मंडी व चक 12 टी के में संचालित उनकी जन पौधशालाओं से राजस्थान, पंजाब व हरियाणा को हर वर्ष बड़ी संख्या में पौधे जाते हैं ।

नारेबाजी से नाराज हुए आइजी

पुलिस महानिरीक्षक ने थानों में नफरी बढाने व क्षेत्र में बढ रहे अपराधों की प्रवृति के मद्देनजर स्पेशल टीम का गठन करने का प्रस्ताव भिजवाने की बात भी कही। सीओ कार्यालय के निरीक्षण के दौरान बढती नशे की प्रवृति को रोकने की मांग को लेकर मिनी सचिवालय पहुंचे सर्वसमाज नशा मुक्ति टीम व पार्षद आइजी को ज्ञापन देने पहुंचे तो आइजी ने केवल निरीक्षण का कार्यक्रम होने का हवाला देकर ज्ञापन लेने से इनकार कर दिया बल्कि नाराजगी भी जाहिर की जिससे कार्यकर्ता व पार्षद निराश हो गए। थाना प्रभारी ईश्वर प्रसाद जांगिड़ ने उनको पुलिस उप अधीक्षक कार्यालय में बुलाकर ज्ञापन लिया। इसी दौरान विधायक सोहन नायक व प्रधान प्रतिनिधि विरेन्द्र गोदारा व ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष राकेश ठोलिया ने शहर में बढ रहे नशे के खिलाफ कार्रवाई की मांग रखी। वहीं 12 टीके में पुलिस पब्लिक संवाद में आइजी ने आमजन से अपराधों को लेकर सुझाव लिए। रात्रि विश्राम के दौरान कांग्रेस नेता संतलाल ने आइजी का स्वागत किया।

ये भी रहे मौजूद

कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक भंवरलाल, उपखण्ड अधिकारी सुभाषचन्द्र चौधरी, पारिवारिक वानिकी के संस्थापक प्रो श्यामसुन्दर ज्याणी, 41 आरबी हर प्रभ आसरा के संचालक बाबा हरीसिंह, थानाप्रभारी इश्वरप्रसाद जांगिड़, सेवानिवृत वन विभाग निरीक्षक केआर ज्याणी मौजूद रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ अध्यापक एवं पर्यावरण प्रेमी पन्नालाल, संतवीरसिंह, समाज सेवी नेमीचंद पूनिया, देवीलाल जाखड, रणवीर धूण, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक लोक अभियोजन इमीचंद बाना, पूर्व प्रधान गजेन्द्र, सिंह गिल, विश्नोई मंदिर बुडढाजोहड डाबला के प्रधान अरविन्द सियाग, डाबला सरपंच रजनीश ज्याणी सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर बीकानेर 09-03-2024

दैनिक भास्कर बीक

• पारिवारिक वानिकी राम रुख अभियान सन् 2030 तक लगातार चलाया जाएगा

बीकानेर रेंज के सभी थानों में पारिवारिक वानिकी अभियान के तहत महिला सरपंचों की अगुवाई में लगाए गए पौधे

भास्कर न्यूज़ | रिड़ी

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हजारों लोगों ने रिड़ी गांव में फलदार पौधों को हाथों में लेकर हरित राम दूत बनने की शपथ ली। साथ इन पौधों को हरित सदस्य के रूप में अपने-अपने घरों में रोपित किया। पर्यावरणविद् प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी की ओर से आहूत 'पारिवारिक वानिकी : राम रूंख अभियान' की अगुवाई महिलाओं ने की तो भागीदार पुरुषों ने सहयोगी की भूमिका निभाते हुए जल-जंगल-जमीन के संरक्षण की इस पहल को सतत जारी रखने का संकल्प लिया। श्रीडूंगरगढ़ तहसील के रिड़ी गांव में हजारों की संख्या में हरियाली का यह सामूहिक उत्सव मनाया गया जिसमें आईजी ओम प्रकाश मुख्यअतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर आईजी ने कहा कि पारिवारिक वानिकी हरित बदलाव का एक ऐसा सिलसिला है जो आम इंसान को सीधे पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनाता है। बीकानेर रेंज के सभी थानों ने आज पारिवारिक वानिकी के सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए महिला सरपंचों की अगुवाई में फलदार पौधों का रोपण करवाया है। जैन मुनि अरविंद ने भारतीय संस्कृति के पर्यावरणीय पक्ष की व्याख्या करते हुए बिल पत्र के पेड़ों के आध्यात्मिक पहलुओं को समझाया।

प्रो. ज्याणी ने बताया कि पर्यावरण का संरक्षण सांस्कृतिक चेतना के जरिए अधिक बेहतर ढंग से किया जा सकता है। पारिवारिक वानिकी इसी सांस्कृतिक चेतना को पर्यावरण संरक्षण से मजबूती के साथ जोड़ती है। राम रूंख अभियान के जरिए हम देश और दुनिया के अधिकाधिक परिवारों को फलदार पेड़ों से जोड़ेंगे। यह अभियान सन्-2030 तक लगातार चलाया जाएगा। क्योंकि 2021 से 2030 के दशक को संयुक्त राष्ट्र ने "पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली का दशक घोषित किया है। सुरेंद्र धारणिया, सीए श्रवण गोदारा ने भी विचार रखे। सरपंच गुड्डी देवी ने आभार व्यक्त किया। देव जसनाथ वन मंडल अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध, राम रूंख अभियान के जिला संयोजक हुक्माराम झोरड़, सह संयोजक बीरबल नाथ जाखड़, ब्लॉक संयोजक बजरंग भांभू, पुखराज ज्याणी, सरपंच प्रतिनिधि हेतराम जाखड़, बलराम जाखड़, उपअधीक्षक पुलिस गेनाराम, थाना प्रभारी डूंगरगढ़ इन्द्र कुमार, हेमनाथ जाखड़, सत्यनारायण तावणिया आदि ने भागीदारी निभाई।

पत्रिका

नागालैण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का दल पहुंचा

पारिवारिक वानिकी व संस्कृति जानने आए

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

patrika.com

लूणकरनसर के डाबला तालाब में पारिवारिक वानिकी जानने के लिए पहुंचे नागालैण्ड विश्वविद्यालय के विद्यार्थी।

लूणकरनसर. नागालैण्ड के लुमामी स्थित नागालैण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थी व प्रोफेसर का 52 सदस्यीय दल शनिवार को लूणकरनसर में पारिवारिक वानिकी तथा ग्रामीण संस्कृति व कला को जानने के लिए आए है। भूमि संरक्षण के प्रतिष्ठित लैण्ड फॉर लाइफ अवार्ड से सम्मानित प्रो. श्यामसुन्दर ज्याणी ने बताया कि बीकानेर के डूंगर महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा नागालैण्ड विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को आमन्त्रित किया है। नागालैण्ड विश्वविद्यालय के असिस्टेन्ट प्रोफेसर डॉ. सूरज बेरी के नेतृत्व में 52 सदस्यीय दल आया है। इनमें 49 विद्यार्थी है तथा म्होंयानी व केते दो शोधार्थी है। शनिवार को लूणकरनसर के उत्तमदेसर रोही स्थित देव जसनाथ की अवतार स्थल डाबला तालाब में पारिवारिक वानिकी के तहत पौधारोपण, देव जसनाथ के पर्यावरण संरक्षण के संदेश समेत ग्रामीण संस्कृति से रूबरू हुए। इस मौके पर देव जसनाथ के संस्थागत वनमण्डल के अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध, सिद्ध युवा महासभा के अध्यक्ष भगवाननाथ समेत ग्रामीणों ने विद्यार्थियों व शिक्षकों का अभिनंदन किया। नागालैण्ड विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों व शिक्षकों के दल ने लूणकरनसर के उरमूल सेतु संस्थान का भ्रमण कर ग्रामीण क्षेत्र में उद्यमिता से आय वृद्धि के मुद्दे पर जानकारी ली। इस मौके पर संस्थान के सचिव रामेश्वरलाल गोदारा ने संस्थान में चल रहे कपड़ा बुनाई, देशी ऊन उत्पादन, कपड़े पर कसीदाकारी, राठी नस्ल सम्वर्द्धन परियोजना, हैण्डलूम शोरूम समेत विभिन्न गतिविधियों से अवगत करवाया गया। इस दौरान पशुपालन व खेती से आजीविका चलाने पर व इलाके की भौगोलिक स्थिति पर ग्रामीण कला व संस्कृति पर विस्तार से जानकारी दी गई।

डॉक्युमेंट्री बनाने फ्रांस का दल पहुंचा

पारिवारिक वानिकी को लेकर अन्तरराष्ट्रीय डॉक्युमेंट्री बनाने के लिए फ्रांस से कनाल प्लस टीवी चैनल से एक दल आया है। इस चैनल से जुड़े फ्रांस के टॉम, लियो व उदरे ने ग्रामीणों व विद्यार्थियों से जानकारी ली।

THE ASIAN AGE

LONDON THURSDAY 3 OCTOBER 2019

CRICKET | 13
Rohit hits ton as India dominate rain-marred opening day

WORLD | Britain | 16
Meghan, Harry sue *Mail on Sunday* for 'breach of privacy'

BUSINESS | Black Money | 10
India seeks banking details of Lalit Modi, his wife Minal from Switzerland

www.asianage.com

Vol. 26 No. 228 | 16 PAGES | £1.50

SAPLINGS OF CHANGE

On Gandhiji's 150th birth anniversary, meet a man paying a unique green tribute to the Mahatma

IMANA BHATTACHARYA

What is the first thing that comes to your mind when you think of Mahatma Gandhi? India's freedom struggle? His path-breaking methods of non-violence? *Ahimsa*? Satyagraha? While these are the obvious answers, a professor from Rajasthan is on a mission to give unique green tribute to Gandhi and his principles.

Shyam Sunder Jyani, an associate professor and sociologist, has opted out of using run-of-the-mill ways to celebrate Gandhi Jayanti. Instead, he has initiated a massive plantation drive to follow the leader's peaceful tracks. His is a call for environmental peace in a time when climate change crisis is engulfing the planet.

To understand Gandhi properly, one has to walk on the paths he practised and preached. So, as the country celebrates the 150th birth anniversary of the Father of the Nation, Jyani is busy encouraging and leading teachers from more than 150 villages of Rajasthan to plant saplings. His is an act of selflessness — Shyam has purchased the entire flora himself and provided irrigation tankers on his own time and expense. Teachers of 150 rural state schools of Rajasthan's Bikaner division have become part of the unique initiative.

It is one thing to adopt a child, but to adopt a tree as a family is a concept that most have never heard of before. This concept was, however, the seed that led to the birth of familial forestry. The initiative directly connects families with plantation and, thereby, initiates eco-civilisation that allows for community-level engagement in forestry. "Trees have a central role in the environment and the domestication of trees makes families sensitive towards environmental conservation," says Jyani.

This quest for environmental peace began in 2003 when Jyani rescued some neem trees in his college campus. "In subsequent years, it became my passion, which in turn became my mission when I formulated the idea of something called Familial Forestry in 2006. Then, I led the plantation of over 9,00,000 saplings under my direct supervision in the north-western region of Rajasthan," shares Jyani.

I formulated the idea of something called Familial Forestry in 2006. Then, I led the plantation of over 9,00,000 saplings under my direct supervision in the north-western region of Rajasthan

— SHYAM SUNDER JYANI, ASSOCIATE PROFESSOR

The professor takes out time from his day job frequently to visit villages and interact with school students to ensure active engagement in familial forestry. The result? Lakhs of students and villagers have now acquired the skill of proper plantation and post-plantation care. But that's not all! A social scientist by profession, Shyam has also developed a unique technique of in-situ budding on *jujube, Prosopis cineraria and Cordia gharaf*, which are native species of desert land. This technique transforms these bushes and trees into high-yielding varieties. "I have developed a very diverse institutional forest of five hectares in my college campus by involving students," Jyani points out humbly.

However, his repertoire of achievements is a long one. The President of India has felicitated him with IG NSS National Award. The Limca Book of Records has acknowledged his work and the concept of familial forestry has been included in the PG syllabus of MGSU Bikaner (a state university).

According to Jyani, the arid desert conditions of Rajasthan make it is very expensive and challenging to develop large forests there. But, his walk on the path of Bapu continues as he plans to develop 150 Gandhi fruit gardens and has planted saplings of many plants like berries, lime, pomegranate, mulberry, drumstick, tamarind, and guava. He has also started organising 'Green Dialogues' in morning prayer sessions every Saturday in all schools with the prime objective of mobilising environmental socialisation of students.

After all, it was Gandhi *ji* who had cautionedthe world that the Earth has

दैनिक भास्कर — अनूपगढ़ भास्कर 22-08-2024

अनूठी पहल • रायसिंहनगर के 12 टीके की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान, भगतसिंह पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला के कुल खर्चे का चौथाई भाग वहन करते हैं प्रो. ज्याणी

एक छोटे से गांव की पौधशाला, जो तीन राज्यों को उपलब्ध करवाती है लाखों निशुल्क पौधे

भास्कर संवाददाता | रायसिंहनगर

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को लेकर पूरी दुनिया चिंतित है और सभी सरकारें इन प्रभावों को कम करने के लिए अपनी कोशिश कर रही हैं, लेकिन अनूपगढ़ जिले की रायसिंहनगर तहसील में एक गांव ऐसा भी है, जिसने जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से मुकाबले के लिए अपने स्तर पर अनूठी पहल की है। भारत- पाक सीमा से 20 किमी दूर बसा रायसिंहनगर तहसील का चक 12 टी.के.।

गांव की आबादी करीब 100 घरों की बसती है, मगर गांव की पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है। इस पहचान की वजह है पर्यावरण संरक्षण में इस गांव की अनूठी भूमिका। गांव के सभी घरों में पेड़ों को हरित सदस्य के रूप में परिवारों का हिस्सा बनाया हुआ है। वर्ष 2021 में जब गांव के बेटे व राजकीय डूंगर कॉलेज बीकानेर में समाजशास्त्र के प्रोफेसर श्यामसुन्दर ज्याणी को संयुक्त राष्ट्र की ओर से भूमि संरक्षण का सर्वोच्च वैश्विक सम्मान दिया गया। तब गांव ने उनके सामूहिक स्वागत का कार्यक्रम आयोजित किया। उस कार्यक्रम में ज्याणी ने गांव के सामने एक जन पौधशाला शुरू करने का प्रस्ताव रखा। ताकि आस- पास के गांवों को निःशुल्क स्थानीय किस्मों के अच्छे पौधे उपलब्ध करवाए जा सकें। अगले ही दिन पूरा गांव सरकारी स्कूल में खाली पड़ी भूमि पर जन पौधशाला स्थापित करने के लिए आ जुटा।

इस काम में ज्याणी के साथ कनाडा की सुनैना, अमेरिका की प्रागदा और इंग्लैंड की बिलियन ट्री संस्थाएं भी आ जुटी। इस जन पौधशाला में लगने वाले खर्चे का चौथाई हिस्सा खुद ज्याणी वहन करते हैं और बाकी तीन हिस्से ये तीनों संस्थाएं। बकौल ज्याणी हमने एक माली नियुक्त कर रखा है जो पौधशाला को संभालता है। जबकि गांव के युवा जरूरत के अनुसार समय-समय पर इस पौधशाला में मदद करते हैं।

ज्याणी ने इस जन पौधशाला को शहीदे आजम भगत सिंह को समर्पित करते हुए इसका नामकरण शहीद भगत सिंह पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला' रखा है। साथ ही भगत सिंह की स्मृति में एक छोटे वन खण्ड का भी विकास किया है। जिसमें 31 किस्मों के पेड़ लहलहा रहे हैं।

राज्य में यह प्रथम और एकमात्र पौधशाला, ऐसे पौधे किए जाते हैं तैयार जो निजी नर्सरियों में भी नहीं मिलते

प्रोफेसर ज्याणी के अनुसार हम अलग-अलग स्थानों पर जन पौधशालाएं संचालित करते हैं, जिनमें हर साल करीब दो लाख पौधे तैयार होते हैं और ये सभी पौधे पूरी तरह से निःशुल्क उपलब्ध हैं। गांव 12 टीके. की जन पौधशाला सबसे अनूठी पौधशाला है, क्योंकि पूरे प्रदेश में किसी गांव द्वारा संचालित यह प्रथम और एकमात्र पौधशाला है, जिसमें इतनी बड़ी संख्या में पौधे तैयार करके तीन राज्यों को निःशुल्क उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

यहां जाल, खेजड़ी, कुमट, छोटा लेसूआ, रोहिड़ा जैसे देशज पौधे तैयार किए जाते हैं, जो प्राइवेट नर्सरियों में तो मिलते ही नहीं है और सरकारी नर्सरियों में भी इनकी संख्या न के बराबर होती है। इसलिए हरियाणा और पंजाब से लेकर जैसलमेर, जोधपुर तक के लोग इस पौधशाला में पौधे लेने के लिए आते हैं। इस साल खेजड़ी, जाल, रोहिड़ा, कुमट, छोटा लेसूआ के 33 हजार पौधे हैं, जिनका वितरण 23 अगस्त से शुरू होगा।

12 टीके में कल होगा पौधों का निःशुल्क वितरण: भगत सिंह पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला चक 12 टीके में पौधों का निःशुल्क वितरण शुक्रवार को होगा। पारिवारिक वानिकी के जनक प्रो श्यामसुंदर ज्याणी ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ बीकानेर रेंज के आईजी ओमप्रकाश, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंध कमेटी (एसजीपीसी) के कार्यकारिणी सदस्य सुरजीत सिंह कंग, हरप्रभ आश्रम के संस्थापक बाबा हरि सिंह करेंगे। इस दौरान भगत सिंह पुस्तकालय श्री करणपुर की ओर से नशा मुक्ति से संबंधित नाटक का मंचन किया जाएगा। पारिवारिक वानिकी पर संवाद होगा और पुलिस पब्लिक पंचायत में समुदाय आधारित पुलिसिंग पर चर्चा होगी।

पंजाब व हरियाणा के पर्यावरण प्रेमी भी आते हैं पौधे लेने : पौधशाला संयोजक अजय ज्याणी ने बताया कि पिछले चार वर्षों में हम दो लाख के आस-पास पौधे इस जन पौधशाला से निःशुल्क वितरित कर चुके हैं। नजदीकी गांव ठाकरी में व्यवसाय के रूप में पदस्थापित सतबीर सिंह बराड़ भी इस जन पौधशाला में नियमित सेवाएं देते हैं।

उन्होंने बताया कि पंजाब व हरियाणा से लेकर जैसलमेर तक के पर्यावरण प्रेमी इस जन पौधशाला से पौधे लेने आते हैं। वर्ष 2021 में जब यहां खेजड़ी मेले का आयोजन किया गया, तब संयुक्त राष्ट्र संघ की डिप्टी सेक्रेटरी जनरल ने जर्मनी से ऑनलाइन जुड़ते हुए खेजड़ी मेले का उद्घाटन किया था।

दैनिक भास्कर — बीकानेर 23-07-2024

ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैंड द्वारा संचालित नेचर पॉजिटिव यूनिवर्सिटी की शाखा होगी यह पौधशाला

डूंगर कॉलेज की पौधशाला में लगाए 16 देशी प्रजातियों के 26 हजार पौधे

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

संयुक्त राष्ट्र के मरुस्थलीकरण रोधी अभिसमय की 30वीं वर्षगांठ के मौके पर सोमवार को डूंगर कॉलेज में देव जसनाथ पारिवारिक वानिकी जन पौधशाला शुरू हुई। जनपौधशाला के उद्घाटन मौके पर आयोजित कार्यक्रम कतरियासर महंत मोहननाथसिद्ध और लिखमादेसर महंत भंवरनाथ सिद्ध के सान्निध्य में हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत जसनाथजी के शब्द गायन के साथ हुई। मुख्य अतिथि बीकानेर रैंज के आईजी बीकानेर रैंज ओमप्रकाश थे। उन्होंने कहा कि पारिवारिक वानिकी का कारवां बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा है जो इस इलाके के पर्यावरण के लिए बहुत ही सुखद है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डूंगर कॉलेज के कार्यवाहक प्राचार्य प्रोफेसर नरेंद्र नाथ ने पारिवारिक वानिकी अवधारणा को जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने की एक अनूठी शैली की संज्ञा दी। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम एवं ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैंड द्वारा संचालित नेचर पॉजिटिव यूनिवर्सिटी नेटवर्क की स्टूडेंट एम्बेसडर अवनी ज्याणी ने बताया कि यह जन पौधशाला नेचर पॉजिटिव यूनिवर्सिटी नेटवर्क का हिस्सा है। विश्व के 500 विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थान इस नेटवर्क से जुड़े हुए हैं लेकिन पूरी दुनिया में एनपीयू नेटवर्क के तहत विकसित यह एकमात्र जन पौधशाला है जिसमें सभी पौधे निशुल्क रूप से उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। इस जन पौधशाला में 16 देसज प्रजातियों के 26,500 पौधे हैं।कार्यक्रम में एनसीसी के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल जॉनी थॉमस, राजकीय कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर राजेंद्र पुरोहित, जसनाथी समाज के गणमान्य व्यक्ति, जसनाथ वन मंडल उपाध्यक्ष बीरबलनाथ जाखड़, सिद्ध युवा महासभा अध्यक्ष भागानाथ कलवानिया, साहित्यकार राज बिजारनिया, पर्यावरण प्रकोष्ठ संयोजक खुमानाराम सारण, लिखमादेसर के राधेश्याम की भागीदारी रही। अतिथियों ने पौधों की गाड़ियों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

रणबांकुरा डिवीजन को दिए 10 हजार से ज्यादा पौधे

यूएनओ अवार्डी प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी ने बताया कि भारतीय सेना की रणबांकुरा डिवीजन को 10 हजार पौधे उपलब्ध करवाए जा रहे हैं। आर्मी की 10 यूनिट ने सोमवार को पौधे दिए गए। बाकी यूनिटों को अगले दिनों में पौधे दिए जाएंगे। सेना के अलावा महाविद्यालय परिसर, विद्यार्थियों, स्कूलों, सामाजिक संस्थाओं, ग्राम पंचायतों को भी पौधे उपलब्ध करवाए जाएंगे। सभी पौधे निशुल्क है। इस पौधशाला का मकसद जसनाथजी की पर्यावरणीय शिक्षाओं को घर-घर पहुंचाना है।

ASIA PACIFIC

Indian traditions entwine with trees in green drive to revive land

Women collect water from a well in Chhapya village in India's Rajasthan state on Tuesday. | AFP-JIJI

BY ANNIE BANERJI
THOMSON REUTERS FOUNDATION

SHARE Jun 3, 2022

BIKANER, INDIA – With saplings in hand and faces veiled by colorful sarees, Suman and Sarita Takariya's relatives sang traditional

NATURE AND ENVIRONMENT | INDIA

Caring for trees like they're family

09/25/2021

Trees are good for both biodiversity and people, helping to guard against drought. Which is why Shyam Sunder Jyani encourages communities in Rajasthan, India to nurture them like loved ones.

Shyam Sunder Jyani shares a rare moment with his own family between trips around Rajasthan to plant trees

Home » Environment » Climate Action » Familial Forestry teaches villagers in India that trees are a part of the family

Familial Forestry teaches villagers in India that trees are a part of the family

Climate Action | Education | Environment | Teaching & Learning

Shyam Sunder Jyani is a professor of sociology in **India**, but his passion project for the last 15 years has been tree planting. He was inspired by the sparse tree coverage at the campus he

बेटियों का सशक्तीकरण और पारिवारिक वानिकी के साथ पोषण एवं पर्यावरण संरक्षण की पहल

पुलिस पब्लिक पंचायत कार्यक्रम

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को पुलिस महानिरीक्षक कार्यालय, बीकानेर रेंज की ओर से सेंटर फॉर फैमिलियल फॉरेस्ट्री, सेंटर फॉर कम्युनिटी सोशियोलॉजी, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय डूंगर कॉलेज, बीकानेर एवं एनपीयू नेटवर्क के सहयोग से पुलिस पब्लिक पंचायत का आयोजन किया गया। बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ और अनूपगढ़ जिलों के 100 कन्या विद्यालयों से 15 हजार 550 बालिकाओं ने, कार्यक्रम में शिरकत की। भविष्य के लिए बेटियों का दृष्टिकोण के तहत आयोजित इस पंचायत का मुख्य उद्देश्य बेटियों को उनके अधिकार, शिक्षा, महिला सुरक्षा, और साइबर अपराधों से बचाव के बारे में जागरूक करना था। कार्यक्रम में लड़कियों को पारिवारिक वानिकी के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और पोषण के महत्व के बारे में भी जानकारी दी गई।

आईजी ओम प्रकाश ने कहा कि यह आयोजन बेटियों के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है, जहां वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकती हैं। सामुदायिक पुलिसिंग की दिशा में यह एक अनूठा प्रयास है। पर्यावरणविद् और यूएन अवार्डी प्रोफेसर श्यामसुंदर ज्याणी ने बताया कि 'पारिवारिक वानिकीः घर-घर सहजन अभियान' की शुरुआत की गई। इसके तहत 100,000 सहजन (मोरिंगा) के बीज व चुनिंदा स्कूलों में 2500 सहजन के पौधे बालिकाओं को वितरित किए गए। सहजन न केवल पोषण के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी सहायक है।

कार्यक्रम में "पुलिस पब्लिक पंचायत" मोबाइल ऐप की भी जानकारी दी गई। इस ऐप के माध्यम से बालिकाएं गुमनाम रूप से अपनी शिकायतें दर्ज कर सकती हैं, जिससे उनकी समस्याओं का समाधान बिना किसी डर या संकोच के हो सकेगा। विभिन्न विषय विशेषज्ञों ने बालिकाओं को उनके अधिकारों, शिक्षा, साइबर सुरक्षा, और सामाजिक नेतृत्व के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

पत्रिका

पर्यावरण संरक्षण और भूमि पुनर्स्थापन के क्षेत्र में दिया उल्लेखनीय योगदान

प्रोफेसर ज्याणी सऊदी अरब में होने वाली सम्मिट में होंगे विशेष अतिथि

डूंगर कॉलेज में सेवारत प्रो. श्याम सुंदर ज्याणी 12 टीके के निवासी हैं

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

रायसिंहनगर. चक 12 टीके निवासी व राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर में एसोसिएट प्रोफेसर श्याम सुंदर ज्याणी को संयुक्त राष्ट्र की ओर से सीओपी 16 (यूएन लैंड सम्मिट) में विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। यह विश्व सम्मेलन 2 से 13 दिसंबर, 2024 के बीच रियाद, सऊदी अरब में होगा। प्रोफेसर ज्याणी का यह आमंत्रण उनके पर्यावरण संरक्षण में योगदान और भूमि पुनर्स्थापन के क्षेत्र में उनकी अनूठी पहल का सम्मान है। उन्होंने पारिवारिक वानिकी के माध्यम से भूमि संरक्षण के क्षेत्र में एक नई मिसाल कायम की है।

20 लाख से अधिक परिवारों को पारिवारिक वानिकी से जोड़ा

प्रदेश भर के 18 हज़ार से अधिक गांवों के 20 लाख से ज़्यादा परिवारों को पारिवारिक वानिकी से जोड़ते हुए अब तक इनके मार्गदर्शन में 40 लाख से अधिक पौधरोपण किए जा चुके हैं और 200 से अधिक संस्थागत वन विकसित हो चुके हैं

। इन जन पौधशालाओं से प्रतिवर्ष 2 लाख से अधिक फलदार व स्थानीय क़िस्मों के पौधे निःशुल्क वितरित किए जाते हैं। विश्व के 670 विश्वविद्यालय इस नेटवर्क का हिस्सा हैं। हाल ही में ज्याणी को एनपीयू ने स्टाफ चैंपियन के दर्जे से सम्मानित किया है । इन के मार्गदर्शन में बीकानेर के लूनकरणसर स्थित देव जसनाथ अवतार भूमि डाबला तालाब सहित पश्चिमी राजस्थान में सैकड़ों हेक्टेयर बंजर भूमि के पुनर्निर्माण से विभिन्न प्रजातियों की वनस्पतियां और वन्य जीव अब फिर से फल-फूल रहे हैं।

इनका कहना है

प्रोफेसर ज्याणी को संयुक्त राष्ट्र की ओर से स्पेशल गेस्ट के रूप में सीओपी। 16 में भाग लेने के लिए आमंत्रित करना संस्थान के लिए गौरव का विषय है हम आशा करते हैं कि उनका अनुभव और ज्ञान वैश्विक मंच पर सकारात्मक प्रभाव डालेगा।

- **डॉ आर के पुरोहित**, प्राचार्य, डूंगर कॉलेज, बीकानेर।

Activist highlights benefits of 'familial forestry'

Neel.Kamal
@timesofindia.com

TOI

Prof Shyam Sunder Jyani speaks during the event on Thursday

Bathinda: Prof Shyam Sunder Jyani, UN's Land for Life Award Laureate, participating as a special guest at UNCCD 16th Conference of the Parties (COP16) at Riyadh in Saudi Arabia, on Thursday showcased the groundbreaking concept of 'Familial Forestry' at an event ti-

COP16 RIYADH

tled 'Youth-led Innovation for a Sustainable Future: Highlights from the Land for Life Programme.' As a keynote speaker, Prof Jyani emphasized the transformative power of cultural integration in land restoration initiatives. Referencing Jasnath Ji, a spiritual and environmental leader of the medieval era, he illustrated how culture nurtures mindfulness, fosters unity, and simplifies the complexities of land degradation and its far-reaching consequences, such as forced migration. Jyani asserted that cultural values inspire empathy and collective action, essential for tackling land degradation challenges. It was stated that Familial Forestry model serves as a beacon of hope, restoring degraded land while uniting communities around a shared environmental mission.

Highlighting the achievements of Familial Forestry, a pioneering approach that integrates families into restoration activities, Jyani stated that 4 million saplings have been planted across Rajasthan's arid landscapes. According to Jyani, the family, as the nucleus of social life, plays a pivotal role in restoration. Familial Forestry brings land restoration into the family domain, extending it to communities and creating a sustainable and scalable model.

During the event, Prof Jyani showcased the Dabla Talab Restoration Project, a community-led initiative that revitalized degraded land into a thriving ecosystem. He also introduced Ram Rinku Abhiyan, a recent addition to the Familial Forestry movement.

The event drew participation from delegates worldwide, including Chinese officials, members of the Indian delegation such as Tarun Kant, Director of AFRI Jodhpur, Global Land Heroes, and senior UNCCD staff, including Chief Communication Officer Xinya Scanlon.

पत्रिका

लूणकरनसर की नमक झील व हनुमानगढ़ के बड़ोपल को रामसर साइट घोषित करने पर सऊदी अरब में चर्चा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

लूणकरनसर. संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से सऊदी अरब की राजधानी रियाद में आयोजित यूएनसीसीडी कोप-16 में विशेष अतिथि के रूप में भाग ले रहे लैंड फॉर लाइफ अवार्ड विजेता प्रो. श्यामसुन्दर ज्याणी ने शनिवार को विश्व आर्द्रभूमि कन्वेंशन की महासचिव मुम्बा मुसोदम जोलिसवा से मुलाकात की। इस दौरान पारिवारिक वानिकी गतिविधियों, भूमि संरक्षण समेत विभिन्न मुद्दों के साथ पश्चिमी राजस्थान में वेटलैंड्स के संरक्षण को लेकर विशेष चर्चा हुई।

प्रो. ज्याणी ने बताया कि उन्होंने बीकानेर जिले की लूणकरनसर की नमक झील व हनुमानगढ़ जिले की बड़ोपल झील को रामसर साइट (आर्द्रभूमि) के रूप में घोषित करने का आग्रह किया। इस पर महासचिव जोलिसवा ने सकारात्मक चर्चा करते हुए पूरे सहयोग का भरोसा दिलाया तथा उच्चाधिकारियों को इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही करने के लिए निर्देश देने को कहा। प्रो. ज्याणी ने बताया कि इन झीलों पर हर साल लाखों प्रवासी पक्षी अपना ठिकाना बनाते है। ऐसी स्थिति में इन्हें रामसर साइट घोषित कर दिया जाता है, तो

सऊदी अरब में विश्व आर्द्रभूमि कन्वेंशन महासचिव मुम्बा मुसोंदम जोलिसवा से मुलाकात में प्रो. ज्याणी।

इनके संरक्षण में यह मील का पत्थर साबित होगा। इस इलाके में पर्यटन व शोध सम्बन्धी गतिविधियां भी बढ़ेगी और पर्यावरण व भूमि संरक्षण के प्रयासों को बल मिलेगा।

क्या है रामसर साइटें

उल्लेखनीय है कि रामसर साइटें उन आर्द्रभूमियों को कहा जाता है, जो अन्तरराष्ट्रीय महत्व की होती हैं। इनका चयन 1971 में ईरान के रामसर शहर में हुए सम्मेलन के तहत किया जाता है। यह सम्मेलन आर्द्रभूमियों के संरक्षण और उनके सतत उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए किया गया था। इसका मुख्यालय स्विट्जरलैंड में है। आर्द्रभूमि जैव विविधता का खजाना है। ये पक्षियों, मछलियों और अन्य वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण आवास प्रदान करती हैं। इसके अलावा ये पानी के भण्डारण, बाढ़ नियंत्रण और जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी मददगार होती हैं। भारत में कई रामसर साइट्स हैं। जैसे-चिल्का झील (ओडिशा), वुलर झील (जम्मू-कश्मीर) और केरल का अष्टमुदी। इन स्थलों की रक्षा के लिए समुदायों की भागीदारी, कानूनों का सख्त पालन और जागरूकता अभियान महत्वपूर्ण है।

आर्द्रभूमियों का संरक्षण न केवल पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखता है। बल्कि मानवता के लिए भी अनमोल संसाधन है। इस अवसर पर महासचिव ने पारिवारिक वानिकी गतिविधियों को सराहा और इन्हें आगे बढ़ाने में सहयोग का आश्वासन भी दिया।

राजस्थान आवासन मण्डल
क्रमांक :– 2031 दिनांक :– 06.12.2024
:: अधिसूचना ::
राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा सी-डैक (C-DAC) भर्ती एजेंसी के माध्यम से आयोजित सीधी भर्ती–2023 के अन्तर्गत दिनांक 13.08.2024 को जारी अस्थाई विचारण सूची में सम्मिलित अभ्यर्थियों के दस्तावेज सत्यापन उपरान्त सफल अभ्यर्थियों की अन्तिम वरीयता सूची / परिणाम जारी कर दी गई है। विस्तृत जानकारी वेबसाईट rhbexam.in पर उपलब्ध है।
राज.संवाद / सी / 24 / 8819 सचिव

कार्यालय पंचायत समिति श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)
क्रमांक :- पंसश्रीडूं/निविदा/2024-25/ दिनांक :- 07.12.2024
संशोधित ई-/निविदा सूचना संख्या 06 (वित्तीय वर्ष 2024-25)
इस कार्यालय द्वारा जारी ई-निविदा सूचना संख्या 06 दिनांक 27.11.2024 UBN-

IN THE HIGH COURT OF JUDICA
PRINCIPAL SEAT JODHPU
S.B/D.B Civil Misc. Caveat
In
S.B./D.B. Civil Writ Petition N
Anybody/Person/F
Vs
State of Rajast
Application under Rule 159 of Rajasthan
Caveat
MAY IT PLEASE YOUR LORDSHIPS:
Your Lordship's humble applicant want
159 of the Rajasthan High Court Rules
applicants are heard in the matter. T
which is likely to be filed are given below
The S.B./D.B. Civil Writ petition or Appe
1. Anybody/ Person/Firm/Company
The S.B./D.B. Civil Writ petition or Ap
against all or any of the following applic
1) Principal Secretary, Department of Mi

पत्रिका

कोप 16 में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए श्यामसुंदर ज्याणी

बीकानेर @ पत्रिका. सऊदी अरब में यूएनसीसीडी कोप 16 में संयुक्त राष्ट्र संघ के विशेष अतिथि के रूप में राजकीय डूंगर महाविद्यालय के प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी उपस्थित रहे। इस दौरान यूएनसीसीडी के सर्वोच्च भूमि संरक्षण सम्मान लैंड फॉर लाइफ से सम्मानित ज्याणी के अभिनव विचार पारिवारिक वानिकी को युवा-नेतृत्व नवाचार: एक सतत भविष्य के लिए लैंड फॉर लाइफ प्रोग्राम की झलक में मुख्य आकर्षण के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह विशेष आयोजन चीन पवेलियन में एलियन फाउंडेशन और कुबुची इंटरनेशनल डेजर्ट फोरम के सचिवालय की ओर से यूएनसीसीडी सचिवालय के सहयोग से आयोजित किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में प्रोफेसर ज्याणी ने भूमि पुनर्स्थापन पहलों में सांस्कृतिक एकीकरण की परिवर्तनकारी शक्ति पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि पारिवारिक वानिकी के जरिए पिछले दो दशक में राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्रों में 40 लाख से ज़्यादा पेड़ पनपाए जा चुके हैं। 18,000 से अधिक गांवों के परिवार पारिवारिक वानिकी से जुड़ चुके हैं। आयोजन के दौरान, प्रोफेसर ज्याणी ने डाबला तालाब भूमि पुनर्स्थापन प्रयासों को साझा करते हुए जसनाथी समुदाय की सक्रिय भागीदारी का उल्लेख किया।

ज्याणी ने यूएनसीसीडी के मुखिया इब्राहिम थियाव से विशेष मुलाकात की, जिसमें पारिवारिक वानिकी अवधारणा के वैश्विक प्रसार को लेकर चर्चा हुई। साथ ही भूमि संरक्षण के क्षेत्र में उपस्थित चुनौतियों के समाधान में समुदाय को कैसे जोड़ा जाए, इस पर विचार - विमर्श हुआ ।

बिल्व पत्र के 5100 पौधों के साथ शपथ लेकर ग्रामीण बने हरित राम दूत

राम रूंख अभियान के तहत भरपालसर में हुआ अनूठा आयोजन, घर-घर हरियाली का प्रण लिया

राजलदेसर | तहसील के गांव भरपालसर में माघ पूर्णिमा पर लक्ष्मीनारायण कथा के दौरान एक अनूठा हरित यज्ञ हुआ। इसके तहत 5100 ग्रामीणों ने बिल्व पत्र के 5100 पौधों संग हरित राम दूत बनने की शपथ लेते हुए घर-घर हरियाली का प्रण लिया। इस मुहिम के प्रणेता व संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा भूमि संरक्षण के सर्वोच्च सम्मान लैंड फॉर लाइफ अवॉर्ड से सम्मानित प्रो. श्यामसुंदर ज्याणी ने बताया कि जसनाथजी की पर्यावरणीय शिक्षाओं को आगे बढ़ाने के मकसद से इस वर्ष पारिवारिक वानिकी राम रूंख अभियान की शुरुआत की है। आमजन को हरित राम दूत के रूप में इस मुहिम से जोड़ा जा रहा है। हरित राम दूत हेतु पंजीकरण की शुरुआत जल्द होगी।

अभियान के संयोजक बीरबलनाथ, बजरंग भाम्भू, दुर्गाराम ज्याणी, श्याम साई, शिवनाथ, लालनाथ, नरेश दूधवाल ने बताया कि कई गांवों से पहुंचे हजारों श्रद्धालुओं ने 5100 यज्ञ वेदिकाओं को साक्षी मानकर हरित राम दूत शपथ ली। कथा वाचक हंसदेव शास्त्री ने राम रूंख अभियान को अनूठी मुहिम बताया। जसनाथ संस्थागत वन मंडल अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध ने बताया की बिल्व पत्र के फलदार पौधों का रूंख प्रसाद के रूप में वितरित किया गया।

पत्रिका

पारिवारिक वानिकी-राम रूंख अभियान : रीड़ी गांव में कार्यक्रम का आयोजन, फलदार पौधों का रोपण

हरित राम दूत बनने व पर्यावरण संरक्षण का लिया संकल्प

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

श्रीडूंगरगढ़. अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर शुक्रवार को क्षेत्र के रीड़ी गांव में लोगों ने पौधों को हाथों में लेकर हरित राम दूत बनने की शपथ के साथ इन पौधों को हरित सदस्य के रूप में अपने घरों में रोपित किया। लैंड फॉर लाइफ अवार्ड से सम्मानित पर्यावरणविद्ध प्रो.श्यामसुंदर ज्याणी की ओर से शुरू किए पारिवारिक वानिकी-राम रूंख अभियान की अगुवाई महिलाओं ने की और पुरुषों ने सहयोगी की भूमिका निभाते हुए जल, जंगल व ज़मीन के संरक्षण की इस पहल को निरन्तर जारी रखने का संकल्प लिया व अभियान का हिस्सा बनकर हरियाली का सामूहिक उत्सव मनाया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक ओमप्रकाश ने कहा कि पारिवारिक वानिकी हरित बदलाव का एक ऐसा सिलसिला है, जो आम इंसान को सीधे पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनाता है। उन्होंने कहा कि बीकानेर रेंज के सभी थानों ने महिला सरपंचों की अगुवाई में फलदार पौधों का रोपण करवाया है। जैन मुनि अरविंद ने भारतीय संस्कृति के पर्यावरणीय पक्ष की व्याख्या करते हुए बील पत्र के पेड़ों के आध्यात्मिक पहलुओं को समझाया। प्रो. ज्याणी ने बताया कि पर्यावरण का संरक्षण सांस्कृतिक चेतना के जरिए बेहतर ढंग से किया जा सकता है। पारिवारिक वानिकी इसी सांस्कृतिक चेतना को पर्यावरण संरक्षण से मज़बूती के साथ जोड़ती है। इस अभियान के ज़रिए देश और दुनिया के अधिकाधिक परिवारों को फलदार पेड़ों से जोड़ेंगे। यह अभियान वर्ष 2030 तक लगातार चलाया जाएगा। हेतराम जाखड़ ने क्षेत्र की कई मांग रखी। इस अवसर पर सुरेंद्र धारणिया, श्रवण गोदारा, कविता ज्याणी ने भी विचार रखे। रीड़ी सरपंच गुड्डी देवी ने आगंतुकों का आभार जताया। इस दौरान देव जसनाथ वन मंडल अध्यक्ष बहादुरमल सिद्ध, अभियान के ज़िला संयोजक हुक्माराम झोरड़, सह संयोजक बीरबलनाथ जाखड़, ब्लॉक संयोजक बजरंग भांभू, पुखराज ज्याणी, बलराम जाखड़, सीओ गोमाराम, थानाधिकारी इंद्रकुमार, हेमनाथ जाखड़, सत्यनारायण भारद्वाज, धनेरू सरपंच मोहनलाल स्वामी, ओमप्रकाश बाना, नरसाराम गोदारा, ज्ञानाराम ज्याणी, हेमाराम खिलेरी, रामनारायण गोदारा सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भागीदारी निभाई।

श्रीडूंगरगढ़. अभियान के तहत फलदार पौधों का रोपण करने जाते अतिथि।

छतरगढ़. थाना परिसर पर थानाधिकारी संदीप कुमार ने सखी सदस्यों साथ संगोष्ठी का आयोजन किया। इस दौरान हेड कांस्टेबल रामचरण मीना व हेड कांस्टेबल दयानंद ने महिलाओं को पौधे वितरित किए। थानाधिकारी ने कहा कि धरती को इंसान के रहने योग्य बनाने के लिए प्रकृति व पर्यावरण को सुरक्षित रखना चाहिए। इस अवसर पर समाजसेवी कृष्णा भाटिया, सरस्वती, रेवती, मंजू देवी, पूजा सहित महिलाएं उपस्थित रहीं।

जसरासर. जसरासर थाने की ओर से बिलनियासर में महिलाओ की भागीदारी से पौधरोपण व वितरण किया गया। इस दौरान महिलाओं को पौधों के देखभाल की जिम्मेदारी दी। थानाधिकारी संदीप बिश्नोई ने पारिवारिक वानिकी अभियान की जानकारी दी। अपने परिचितों को भी अभियान से जुड़ने की सलाह दी। इस दौरान सरपंच कानी देवी, किशोर कुमार सारण सहित लोग मौजूद रहे।

महाजन. जैतपुर में शुक्रवार को महिला दिवस पर पौधारोपण किया गया। सरपंच मीरा देवी शर्मा व पुलिस चौकी इंचार्ज अनोप सिंह ने पौधरोपण किया। पुलिस चौकी जैतपुर परिसर व रामदेव मंदिर में पौधे लगाए। इस दौरान महिलाओं ने संकल्प लिया कि हम इन पौधों की देखभाल करेंगे। इस दौरान पुलिस स्टाफ शीशपाल सिंह, विजय कुमार, राजेश कुमार, नेतराम, शंकरलाल शर्मा, वार्ड पंच असमान शाह, जगदीश, रूपाराम आदि मौजूद रहे।

बज्जू. बज्जू तेजपुरा में सीआई आनंद कुमार गिला ने हर घर व प्रत्येक व्यक्ति एक पौधा लगाकर उसके लालन पालन की बात कही। तेजपुरा सरपंच परमेश्वरी देवी व ग्राम विकास अधिकारी गंगाविशन कड़वासरा ने विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। इस दौरान पंचायत समिति सदस्य रामकुमार गोदारा, ठेकेदार बाबूलाल बेनीवाल, एएनएम गीता, वार्ड पंच राधा देवी, सामाजिक कार्यकर्ता गणपतराम भाम्भू, पोकर सियाग, गोपीकिशन गोदारा, हरि चावड़ा आदि मौजूद रहे।

Rajasthani wedding revives rural families' sweet ties with millets

TIMES NEWS NETWORK

Bathinda: A wedding ceremony was used to promote consumption of millets at Lunkaransar village near Bikaner in Rajasthan on Thursday. Instead of serving milk as a traditional offering during the bride's farewell, rabadi made from millets was served to the relatives of the bride and the groom. The initiative was part of 'Familial Forestry' – a movement about making trees a part of the family – led by environmentalist Prof Shyam Sunder Jyani.

Traditional dishes made from millet were also served at breakfast. The effort was made with a belief that a mass-level shift to sustainable food was needed to combat climate change, and associating millets with rituals was an inclusive way to engage the community in this direction.

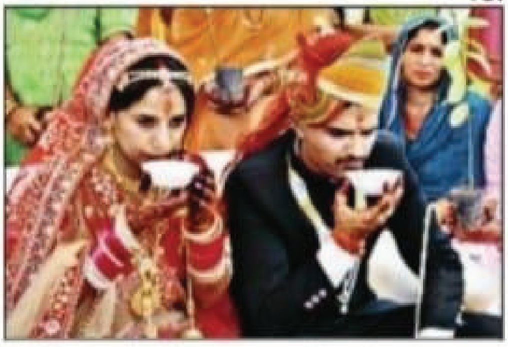

TOI

Millet rabri is now a ritual

Following the lunch, a plantation drive was organised, led by the bride and coordinated by the Familial Forestry activists. Familial Forestry means caring for the tree as a family member so that it becomes part of the family's consciousness.

Rabadi is traditionally prohibited during marriage rituals and it was for the first time when it was included in rituals to bid for a sustainable living and it gained attention in local community, said Jyani, associate professor of sociology at government college Bikaner and recipient of the UN's 'Land for Life' award.

He said it was also decided that Rabadi Day will be observed on May 23 to promote the consumption of millets and revive the ethnic cultural practices. "At our daughter Abhilasha's wedding, we adopted sustainable consumption practices with the intervention of Familial Forestry. We avoided using plastic or other disposable products, hoping to promote sustainable living," said bride's father Bhaira Ram Godara.

The UN has declared 2023 as the International Year of Millets, which were used as a staple food for centuries, but the consumption of which declined to less than 10% among rural and urban households.